15 चयनित कथा

(जगदीश प्रसाद मण्डल 15 गोट चयनित कथा)

15 चयनित कथा

जगदीश प्रसाद मण्डल

चयन एवम् सम्पादन

जनक लाल मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

15 CHAYANIT KATHA

Collection of 15 selected stories of Jagdish Prasad Mandal compiled by Janak Lal Mandal, Pallavi Publication, Nirmali, Supaul (2023)

ISBN: 978-93-93135-48-3
सत्त्वाधिकार: © प्रकाशक
पहिल संस्करण: 2023
दाम: 250/- (भा.रू.)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: +91 62006 35563; +91 99316 54742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार : 847452
आवरण चित्र: श्री जनक लाल मण्डल (कथा चयनकर्त्ता)
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। सत्त्वाधिकारी अथवा प्रकाशक केर लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

समर्पण

हे.! प्रेरणाक परम पुंज
आलोकित करू हमर मग-पथ
मानवताक अनन्य पुजारी
सामाजिकताक फूलवारी अहाँ
सर्वहारा होउक वा दलित कियो
हुनक हितकर अपने छी
मैथिलीसँ मिथिलाकेँ अपने
रंजन हदोकाल करैत छी
ढेर उपन्यास आ ढेरो कथा
रूचिसँ रचि-रचि सनाथ करैत रहल छी
हे.! महा पुंगव हम जन्मान्तर
अभिनव समर्पण करैत रहब नतमस्तक...

- जनकलाल

अनुक्रम

भूमिका	**iX-XX**
बोनिहारिन मरनी	01
केना जीब?	13
इमानदार घूसखोर	17
बगबाइर	25
अपन पुरखाक डीह	32
ओझरी	37
अधमरू साँपक फुफकार	45
डीहक बटबारा	53
संकल्प	70
के मानत?	76
परिपक्व निरलज	83
परिवारक विघटन	92
बिनु खुट्टाक गाए	100
गामसँ गाए उपैट गेल	109
बनरफाँस	118

भूमिका

मनुक्खक भाव आ सम्वेदना केर अभिव्यक्ति आ सम्प्रेषणक माध्यम भाषा थिक। भाषा बिना जीवनक अधिकांश भाग बेकार अछि। समस्त श्रृष्टिमे भाषा वा साहित्यक बीआ छीड़ियाएल आ स्फुटित होइ छइ। पोथी आ ज्ञानी प्रदत्त सीखसँ अधिक सम्यक आओर सच्चा ज्ञान दुनियाँक खुलल परिस्थिति अध्ययनसँ सम्भव अछि। श्री जगदीश प्रसाद मण्डल खुलल सामाजिक जगतसँ प्रेरित भS आत्म अध्ययनसँ भाषाकेँ परिनिष्ठित करिकS साहित्यक सृजनमे तल्लीन छैथ। ओ शतश: पोथी आ सहस्त्रश: कथाक रचना करि मैथिली साहित्यमे एक गोट कृर्तिमान स्थापित कयने छैथ। एहि लेल ओ दर्जनोसँ बेसी पुरस्कार-सम्मानसँ अलंकृत होइत रहला अछि। हिनक साहित्य संसारकेँ असानीसँ पार पएब सम्भव नहि।

हमरा खुशी भS रहल अछि जे एहेन मनस्वीक गुण सागरमे डुमकी लगा किछु मोती चुनि मालाक रूपमे ई पोथी अपने लोकनिक सोझमे प्रस्तुत कए रहल छी। ई हमर शौभाग्य छी। समुचित रूपसँ संकलन आ प्रकाशनक हमर ई पहिल प्रयास छी।

चयनित पनरहो कथा यद्यपि मिथिला क्षेत्रसँ मिथिलाक जीवनपर आधारित रहितो सार्वदैशिक अछि। चूकि साहित्य सत्यक व्यापक परख करि कS ओकरा प्रति झुकाउ आओर निष्ठावान बनबैत अछि। ताहिसँ मनुक्खक अंत्स मूल्य जीवन्त आ जीवन विस्तार बनबैत अछि। संगहि शाश्वत आ सनातन चिन्तनक अंग हमरा बनबैत अछि। इएह अवधारणापर प्रस्तुत पोथीक सभ कथा चयनित केलौं अछि।

'बोनिहारिन मरनी' कथामे सामाजिक आ राजनीतिक अव्यवस्थाक शिकार मरनीक ग्रामीण वातावरणक अभावग्रस्त जीवनमे रहितो संतोष, इमान आ

भातृत्वक भावसँ भरल अछि। मरनी खुद परिवार विच्छेद विपन्नावस्थामे मजदूरिन बनल स्वाभिमान, स्वतंत्र आ निर्भिक अछि। चाहे सुगिया सन बदमाश जनानीकेँ फटकारैक होइक वा होइक ठीकेदारक सिपाहीकेँ धौंस उखारैक।

जनजीवन मूल्यक अवमूल्यन, सोचमे गिरावट, शाश्वततामे टूट भेने मानव जीवन संकटमे पड़ैछ। तँ 'केना जीब' कथा शीर्षकमे दर्शाओल गेल अछि- लोक मानवतासँ समाजवाद, समाजवादसँ परिवारवाद आ पुनः परिवारवादसँ व्यक्तिवाद केर ओर केना बढ़ि रहल अछि। एहना स्थितिमे बाल आ वृद्ध जे दोसरपर आश्रित रहैछ, ओकर जीवन स्थिति विचारणीय भऽ रहल अछि। सर्वसम्पन्न प्रोफेसर शंकर आ सरस्वती केर सत्तैर बर्खक उमेरमे कियो देख-भाल केनिहार नइ अछि। जहन कि ओ निपुत्र-निःसन्तान नहि छैथ। बेटो छैन, पुतोहुओ छैन मुदा ओ सभ दोसरठाम ओही शहरमे रहि नोकरी करै छैन।

'इमानदार घुसखोर' कथा मध्य परिस्थिमूलक वर्णन भेल अछि। दुखक घड़ी विचलित भऽ कुचेष्टा करैछ जे अकल्याणकारी होइछ। इमानदार जज सुरेन्द्रबाबू अपन नअटा बाल-बच्चाक निमाह-पैतपाल केना करता, यैह परिस्थिति हुनका आगूमे छैन। अन्तमे केना ओ घूस लेबाक प्रयास करै छैथ आ घूस लेलाक बादो ओ केना अप्पन इमानदारी बँचौने रहै छैथ, जे एक गोट बेकतीगत तकनीकी छल। एहि सबहिक मार्मिक चित्रण कथामे भेल अछि।

'बगबाइर' कथामे हरानन्द आ फुलिया दम्पतिक सभ सम्पैत अन्धविश्वास आ बेटाक इलाजमे नष्ट भऽ जाइछ। एकलौता बेटा सेहो मरि गेल। कुलानन्दक हाथे बिकल आमक बागकेँ रखबाइरसँ किछु लाभ भऽ जाइक। मुदा मुखिया चुनावमे कुलानन्द हारि जाइछ। बगबाइर छिनलापर हरानन्दक कहब भेल जे नीक लोककेँ भोँट देबाक चाही। हमरा पुत्र आ सम्पैत नष्ट भऽ गेल से संतोख अछि आ अहाँ बगबाइर लऽ लेब तँ की हेतइ? माने भेल जे सामाजिक बुराइ, ईर्ष्या, अन्धविश्वास आदिसँ सतर्क रहला पछातिये सफल जीवन सम्भव अछि।

'अपन पुरुखाक डीह' कथामे विधवाक जीवन संघर्ष आ स्वाभिमानक चर्च भेल अछि। छीतन मजदूरक बिआहक तीनिये बर्खक पछाइत मृत्यु भऽ गेल। जगरनाथपुरवाली विधवाकेँ नवजात पुत्र, कमसीन वयस आ गरीबी जिनगी रहि गेल। ओ अपन भरण-पोषण हेतु इटाक भट्ठापर मजदूरी करैत अछि। एक दिन ओकरा कियो सलाह देलकै जे अप्पन दिन-रातिक खातिर दोसर बिआह कऽ लैह।

तहन विधवाक जवाब भेलै जे अपन पुरुखाक डीह छोड़ि हम आनठाम नइ जा सकै छी। अर्थात् जीवनमे वंश, परिवार आ डीहक मान-मर्यादा होइ छै, जेकर रक्षा दिलोजानसँ करी, ई हमर कर्तव्य छी।

'ओझरी' कथामे प्रशासकीय कुव्यवस्थापर कुठाराघात भेल अछि। सुकला काका अपन कथा वाचन हेतु रेडियो स्टेशन, दिल्ली जाइ छैथ। ढेर खर्चाक बाद बहुत दिनकपर मात्र 500 रूपैआक चेक भेटलैन जेकरा भजेबामे बहुतो रंग ओझरी लगैत गेलैन। अन्तोअन्त ओ चेक नहियेँ भजलैन। विभिन्न तरहक ओझरीक चर्चा करैत कथाकार उक्त कथामे नौकरशाही व्यवस्थाकेँ सेहो उजागर केलैन अछि।

अहिना सामंन्तशाहीसँ प्रभावित समाजक वर्णन 'अधमरु साँपक फुफकार' कथामे भेल अछि। सोमेश्वरकेँ जमीन्दारी आ नेबाबी घुसैर गेल अछि मुदा जरल रस्सी जकाँ ऐंठन अछिए। ओ साहित्यिक संगोष्ठीकेँ लपौड़बला काज बुझैत अछि। तहिना 'डीहक बटवारा' शीर्षक कथामे धनलोभी आ दुष्ट भैयारीक नीक चित्र देखौल गेल अछि। भैयारीमे डीहक बटवारा आ अनुचित हिस्सा लेल भरसक प्रयासकेँ ग्रामीण अमीन आ गुरु काका द्वारा असफल कएल जाइत अछि। 'संकल्प' कथामे नौकरीक लेल शिक्षित रोजगार युवक संकल्पित अछि। मुदा रामलाल ओकरा किसानी स्वतंत्र जीवनक पाठ पढ़ौलैन। सम्पतिक परिभाषामे राष्ट्रीयता आ राष्ट्रक प्रति विस्तार भावक अद्भुत दर्शन देलैन अछि। वैयक्तिक सम्पतिक परिगणनमे बेकतीगत, पारिवारिक, सामाजिक आ दुनियाँदारीक समस्त जवाबदेहीकेँ बुझेलैन अछि। ओ ईहो बुझेलैन अछि जे मानव सेवा देव-पूजासँ पैघ अछि। देवी-देवता भ्रम थिक। मनुक्ख साक्षात प्रकृतिक स्वरूप छैथ। एकर अतिरिक्त देशमे बेरोजगारी आ घूसखोरीक जे समस्या अछि तहूपर प्रकाश एहि कथामे देल गेल अछि।

लोकक मनोवृति प्रबल होइछ से 'के मानत' कथामे सिद्ध भेल अछि। एहिठामक ऊँचका सभ जमीनमे कलम-बाग लगैत अछि। मुदा नइ फड़ने समाजकेँ बहुत क्षति होइ छै। लेखक महोदयकेँ भारतक जनताक प्रति जागरूकता आ चिन्ता छैन। कथन अछि जे ऊँच सभ जमीनमे लागल बागकेँ नइ फड़ने अन्न आ जनआवादीक सन्तुलन बिगड़ए लगल अछि, जैपर सभ नागरिककेँ सचेत भऽ कऽ सोचक चाही।

'परिपक्व निरलज' कथा एक गोट बुड़िबक आदमी अछि जे अनेको ठोकर खेलाक बावजूद निरलज केर काज करैत जहल चलि जाइत अछि। कथाकारक कथन अछि जे एहेन आदमीकेँ जहलसँ एलापर जिलाशा नइ होबाक चाही। से नहि तँ एकर माने भेल जे गलत काजकेँ संपोषित करब। तँए लेखक स्वयं कहै छैथ- 'ऐमे हम की विचार देबह।'

'परिवारक विघटन' शीर्षक कथामे पारिवारिक प्रेम-भावक वर्णनक संग समाप्त होइत भैयारीक चर्च भेल अछि। यद्यपि पात्रक भैयारी वर्षो पूर्व पारिवारिक रूपसँ अलग अछि। हालमे मंगलदेवक माए केर मृत्यु भऽ जाइछ। यद्यपि पिताक मृत्यु वर्षो पूर्वहि भेल रहैन। तहन आब चारू भैयारी आ हुनक पत्नी सभकियो, माने आठो परानीमे जे प्रेम-भाव, दिलक सम्मान आ आपसी अपनत्व रहइ से आब हुनकालोकनिक बाल-बच्चाक बीच नहि रहत। तँए कहलैन अछि जे परिवारक विघटन भऽ गेल। ई मिथिलाक संस्कृतिक पराकाष्ठा केर उदाहरण थिक।

गाए केर महत्वपर प्रकाश दैत 'गामसँ गाए उपैट गेल' कथाकेँ कथाकार नीक जकाँ लिखलैन अछि। संदेश देलैन अछि जे अमृततुल्य दूधवाली गाए पोसक चाही। संगे बाढ़िसँ जन-जीवन आ खास कए किसानक जीवन बहुत प्रभावित होइत रहल अछि। तात्कालिक अन्नाभाव, कृषिक अव्यवस्था, सामाजिक समस्या आदिपर प्रकाश देल गेल अछि। जगदीशबाबूक कथन छैन जे बकरीकेँ पालक अछि तँए ई अखनो धरि बँचल अछि। मुदा गाएकेँ पालनिहार आब नौकरी, व्यापार वा अन्य धन्धामे लागि गेल तँए ओकर खुट्टाझार भऽ गेल। दोसर, बकरी नइ कियो खाएत तँ दुनियाँसँ बकरी समाप्त भऽ जाएत।

देशमे सही नेताक अभावकेँ कथाकार 'बिनु खुट्टाक गाए' कहलैन अछि। किएक तँ आजादीक बाद भारतीय राजनेतालोकनि देशहितक बात करै छला। चाहे पार्टी कोनो रहए, मुदा आजुक राजनीतिमे सस्ता नेतृत्व, महंगा चुनाव, झूठक वादा, धोखा-धरी आ छल-प्रपंचक खेल भऽ रहल अछि। जाति-पाति, धर्म, क्षेत्र आ भाषा आधारित राजनीति चलि रहल अछि। जन-बल नहि बाहुबलक प्रयोग भऽ रहल अछि। भ्रष्टाचार आ घोटाला केर दोकाने खुजि गेल अछि। किनको राष्ट्रक प्रति चिन्ता नहि छैन। कियो राष्ट्रक प्रति उत्तरदायी नहि छैथ। 'अनेर गाइक राम रखबार- सदृश परिस्थिति अछि। तँए कथाकार अनेर देशकेँ 'बिनु खुट्टाक गाए' कहलैन अछि। ओना, सिद्धान्त विहीन नेताक प्रति सेहो 'बिनु खुट्टाक गाए' कथामे

इशारा कएल गेल अछि।

अन्तिममे ‘बनरफाँस’ कथा अछि। एहि कथामे अव्यवहारिक शिक्षाकेँ दूर करि स्वावलम्बी आ रोजगारपरक शिक्षा-नीतिपर जोर देल गेल अछि। कथामे अछि जे काज सेहो छोट आ पैघ होइछ। लोककेँ मैंडसेट भऽ गेल अछि जे कम आमदनीबला लोक छोट आ बेसी आमदनीबला लोक पैघ होइत अछि। जे व्यक्ति हाट-बाजारमे तरकारी बेचैत अछि ओ छोट लोक भेल आ वएह व्यक्ति जँ मंडीमे तरकारी बेचत तखन ओ पैघ भेल। अही प्रकारक संकीर्णताकेँ रेखांकित करैत ‘बनरफाँस’केँ आगाँ देखौल गेल अछि। देशमे जे बेरोजगारी अछि ओकर मूल कारणकेँ सेहो चिह्नित करैत आम लोकमे विनम्रताक कमी अछि तेकरो नीक जकाँ देखार केलैन अछि।

जगदीश प्रसाद मण्डल: बहुमुखी प्रतिभाक धनी जगदीशबाबूक जन्म 5 जुलाई 1947 ई.मे बेरमा गाममे भेल। बेरमा एक गोट ग्राम पंचायत सेहो थिक जे झंझारपुर अनुमण्उलक लखनौर प्रखण्ड आ बिहार राज्यमे पड़ैत अछि। दरिभंगा-निर्मली रेलखण्डपर तमुरिया स्टेशनकसँ अढ़ाइ-तीन कि.मी. उत्तर-पच्छिममे बेरमा गाम अछि। आ बेरमासँ एन.एच.:57 (चनौरागंज) सेहो अढ़ाइ-तीन किलोमीटर अछि। अर्थात् एन.एच.:57 आ रेलबे लाइन (तमुरिया)क ठीक बीचमे बेरमा गाम पड़ैए। आ बेरमा गाममे सेहो ठीक बीचमे जगदीशबाबूक घर छैन। श्री मण्डलजीक माता+पिताक नाओं स्व. मकोवती देवी+स्व. दल्लू मण्डल छिऐन।

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक पिता 1950 ई.मे बिमार पड़ला। इलाजक समुचित बेवस्थाक अभावमे हुनक मृत्यु भऽ गेलैन। पिताक मृत्युक समय श्री मण्डलजी मात्र तीन बर्खक छला। आ हिनक जेठ भाय छह बर्खक रहथिन। ओइ समय हिनक पिसियौत दू भैयारी बेरमामे रहैत रहथिन। जे हरिनाही गामसँ आएल छला। कोसीक उपद्रवसँ ओ सभ समुच्चा परिवार बेरमामे आबि रहए लगला। जगदीशबाबू दुनू भाँइ वाल्यावस्थामे रहैथ तँ हुनके सभपर घरक गार्जनी रहैन। परिवारमे ओइ समय आठ बिघा जमीन, पोखैर-इनार, कलम-गाछी मिलाकऽ रहैन। अगुआएल सोचबला परिवार छल।

जगदीशबाबू 1956 इस्वीमे बेरमासँ प्राइमरी, 1957 इस्वीमे कछुबीसँ अपर प्राइमरी केलैन। पछाइत 1960 इस्वीमे झंझारपुर केजरीबाल तदुपरान्त 1965 इस्वीमे हायर सकेंडरी उत्तीर्ण भेला। जनता कॉलेज, झंझारपुर आओर

सी.एम.कॉलेज, दरिभंगासँ हिन्दी आ राजनीतिशास्त्र विषयमे एम.ए. केलैन। पढ़ौनीमे माए- स्व. मकोबती देवी'क गहना बीकि गेलैन।

बचपनहिसँ जगदीशबाबूमे आत्मनिर्भरताक संस्कार रहैन। हरिनाहीबला पिसियौत भाय सभ 1960 इस्वीमे बेरमासँ चलि गेला। एहना स्थितिमे श्री मण्डलजी सरकारी वा अन्य नौकरीसँ नीक अप्पन घरक काज माने कृषि कार्यकेँ बुझलैन। खासकऽ तीमन-तरकारीक खेती करए लगला जे अद्यावधि अनवरत करैत आबि रहला अछि। श्री मण्डलजीक व्यक्तित्वक आकलन अनेक बिन्दु यथा सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक, यात्रानुभव, प्रकृतिजन्य परिस्थितिक अनुभव इत्यादिसँ कएल जा सकैत अछि।

मण्डलजी अप्पन जीविकोपार्जन- खेती-बाड़ीक संग-संग समाज सेवामे सेहो हाथ बटौलैन। आजादीक बाद समाजक दुर्दशा, समस्या, ग्रामीण समाजक बीच उथल-पुथल आदिक प्रभाव हुनकोपर पड़लैन। विनोवा आन्दोलनक भूमि-दान यज्ञ, बटेदारी, कम्युनिष्ट विचारधारा तथा समाजवादी विचारधाराक बीच टकरावजन्य संघर्ष आदिक अनुभव सेहो हुनका नीक जकाँ होइत रहलैन। कमजोर वर्गक सेवार्थ तगतगर लोककेँ कोपभाजन बनए पड़लैन। केस-फौदारी, जेल-जुरिमाना आदि सभ सेहो भोगए पड़लैन। समाजमे अशिक्षा छुआछूत, नीच-ऊँच, हिन्दु-मुसलमान आ आपसी ईर्ष्या आदि समस्या रहइ। ताहिपर प्राकृतिक समस्या बाढ़ि, रौदी, भूकम्प आदि सेहो जन-जीवनकेँ हिलौरैत रहइ। महामारी, हैजा, चेचक, मलेरिया आदिक चपेटसँ लोक संत्रस्त छल। कोसी संगमे नाना प्रकारक विभिषिका ठाढ़ रहैए। हदोघड़ी पहरेदार जकाँ जगदीशजी सेवार्थी दिससँ सहोदर जकाँ छाती तानि ठाढ़ रहला।

जमीन्दारक खेतमे खेतिहर खेती करैक आ सभ अन्न हुनकहि बखाड़ीमे ओसाए-बेड़ाए कऽ ढारि दइ आ सूप-कराम लऽ कऽ छुच्छे हाथ डोलबैत घर आबि जाए। अप्पन खेत मालगुजारी (बँकियौता) कारणेँ निलाम भऽ गेल रहइ। रंग-बिरंगक फेरी जमीन्दारी शोषणक जालसँ त्रस्त जनता विद्रोहपर उतैर गेल। मण्डलजी खुद लिखलैन अछि-

"हल्ला सुनिते देरी जे जेतै रहए से तेतैसँ लाठी लऽ कऽ दौगल। ..जे असल बटेदार रहै ओ केस नै केलक आ जे बटेदार नै रहै ओ केस केलक।" तहिना भू-दान यज्ञमे भेल। दान हेतु जमीन्दारसँ मांगल जमीन गरीब-गुरबाक नाओंसँ नहि

बल्कि जमीनेबला सभक नाओंसँ पर्चा कटए लगल। दोसर दिस, बाबू लोग ऑफिसमे बैस घूस लऽ कऽ एक जमीनक कइएक गोरेक नाओंसँ पर्चा काटि दइक। एहि तरहेँ जमीनबला संगे जगह-जगह झंझट-फसाद होमए लागल। एहि प्रसंग मण्डलजी लिखलैन अछि-

"चुनावमे जिलाभरिमे बुथ बनल। केसो-मुकदमा खूब भेल। मतगणनामे हेरा-फेरी सेहो चलल। मंत्रीलोकनि घोटाला-पर-घोटाला शुरू केलक।"

2000 इस्वीक लगभगमे जगदीशबाबू साहित्य लेखन दिसि मुखर भेला। एहि लेल ढेर रास पोथी कीनि-कीनि पढ़ए लगला। समाज, समय आ परिस्थितिक अवलोकन करए लगला। यात्रादिसँ सेहो ज्ञान हाँसिल केलैन। प्रकृति आ स्वयं साधन द्वारा अनुभवसँ पैघ साहित्य सृजन सम्भव अछि।

कबीर दासजीक काया विचारमे समस्त श्रृष्टिकेँ समेट लेने रहैथ। जगदीश बाबू शुद्ध, प्रबुद्ध आ शिष्ट व्यक्ति छेलाहे। हुनक धर्म पत्नी श्रीमती रामसखी देवी मुहेँ- "ओ होशियार छथिन सभदिनसँ। हमरा सभकेँ हुनकापर पूरा भरोसा अछि जे ओ गियनगर आ ठेकनगर छैथ।" सचमुच ओ स्वाभिमानी, इमानदार, निर्लोभी इंसान छैथ। आलू, बैंगन, साग-सब्जी आदिसँ आमदनी करिकऽ संतुष्ट जीवन व्यतित करैत आबि रहला अछि। अहू उमेरमे जहिना हुनका हाथमे कलम छैन तहिना खुरपी सेहो छैन।

जगदीश बाबू राजनीतिशास्त्र आ हिन्दीक विद्वान रहितहु मैथिलीकेँ अपन रचनाक भाषा चुनला। ई हुनक अपन संस्कृति, क्षेत्र आ समाजक उपकार आ अपनापन थिक। एहि लेल समस्त समाज कृतज्ञ रहत। तेकर कारण ईहो सम्भव अछि जे अपन भाषामे पहिले अपन लोक आ तहन मानव लोक सेवाक उचित सोपान बुझने हेता। साहित्य समाजक वौस छी आ समाजक नित्य-नूतन घटित होइबला घटना साहित्यक वौस सेहो छी। तँए, सामाजिक घटनासँ साहित्यक रचना होइत अछि। चाही जे रचनाकार अपन कान, आँखि आदि ज्ञानेन्द्रीयकेँ समन्वय कऽ लेखनी चलाबी। से नजदीकी परिवेशक माध्यमसँ मानव संवेदना, भावना आदिक अभिव्यक्ति सटीक ढंगेँ करी। मैथिली, मिथिला आ मैथिल केर शास्वत विकास मैथिली सृजनमे निहित वा स्थापित अछि।

8 नवम्बर 2008 इस्वीमे मैथिलीक प्रसिद्ध कथा गोष्ठी 'सगर राति दीप

जरय'क आयोजन रहुआ संग्राममे भेल छल। ओही गोष्ठीमे जगदीश प्रसाद मण्डलजी अपन पहिल कथाक पाठ केने रहैथ। आ वएह मंच हुनक पहिल साहित्यिक मंचक रूपमे जानल जाइ छैन। ओइठाम 'भैंटक लाबा' नामक कथाक वाचन केलैन। डॉ. रामानन्द झा 'रमण' उक्त कथाकेँ 'घर बाहर' पत्रिकामे प्रकाशित करौलखिन। मण्डलजीक ई पहिल प्रकाशन रहैन। बादमे 'बिसाँढ़', 'चुनवाली' नामक कथा सेहो प्रकाशित भेलैन। तेकर बाद एकाएक हुनक 27 गोट पोथी, लगभग दू वर्षक अभियन्तरमे श्रुति प्रकाशन नई दिल्लीसँ प्रकाशित भेलैन।

श्री मण्डलजीक रचना संसार बेस व्यापक आ बहुमुखी छैन। द्रष्टव्य अछि हिनक रचना संसार: **पद्य (गीत एवम् काव्य) संग्रह:** 1. इन्द्रधनुषी अकास (2013), 2. राति-दिन (2013), 3. तीन जेठ एगारहम माघ (2013), 4. सरिता (2013), 5. गीतांजलि (2013), 6. सुखाएल पोखरिक जाइठ (2013), 7. सतबेध (2018), 8. चुनौती (2019), 9. रहसा चौरी (2019), 10. कामधेनु (2020), 11. मन मथन (2020), 12. अकास गंगा (2020)

नाटक/एकांकी: 13. मिथिलाक बेटी (2009), 14. कम्प्रोमाइज (2013), 15. झमेलिया बिआह (2013), 16. रत्नाकर डकैत (2013), 17. स्वयंवर (2013), 18. पंचवटी (2013), 19. कल्याणी (2015), 20. सतमाए (2015), 21. समझौता (2015), 22. तामक तमघैल (2015), 23. बीरांगना (2015)

उपन्यास: 24. मौलाइल गाछक फूल (2009), 25. उत्थान-पतन (2009), 26. जिनगीक जीत (2009), 27. जीवन-मरण (2010), 28. जीवन संघर्ष (2010), 29. नै धाड़ैए (2013), 30. बड़की बहिन (2013), 31. ठूठ गाछ (2015), 32. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं (2017), 33. लहसन (2018), 34. पंगु (2018), 35.आमक गाछी (2018), 36. सुचिता, (2020), 37. मोड़पर (2021), 38. संकल्प (2021), 39. अन्तिम क्षण (2021), 40. कुण्ठा (2021), 41. भादवक आठ अन्हार- (अपूर्ण), 42. सधवा-विधवा- (अपूर्ण), 43. सुनयना बेटी (2023)

प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना: 44. पयस्विनी (2021)

कथा संग्रह: 45. गामक जिनगी (2009), 46. तरेगन (2010), 47. बजन्ता-बुझन्ता (2013), 48. शंभुदास (2013), 49. उलबा चाउर (2013), 50.

अर्द्धांगिनी (2013), 51. सतभैंया पोखैर (2013), 52. भकमोड़ (2013), 53. लजबिजी (2014), 54. समरथाइक भूत (2014), 55. अप्पन-बीरान (2014), 56. बाल गोपाल (2014), 57. गामक शकल-सूरत (2014), 58. रटनी खढ़ (2014), 59. पतझाड़ (2014), 60. गढ़ैनगर हाथ (2014), 61. अपन मन अपन धन (2015), 62. उकड़ू समय (2015), 63. मधुमाछी (2015), 64. पसेनाक धरम (2015), 65. गुड़ा-खुद्दीक रोटी (2015), 66. फलहार (2015), 67. खसैत गाछ (2015), 68. एगच्छा आमक गाछ (2016), 69. शुभचिन्तक (2016), 70. गाछपर सँ खसला (2016), 71. डभियाएल गाम (2016), 72. गुलेती दास (2016), 73. मुड़ियाएल घर (2016), 74. बीरांगना (2017), 75. स्मृति शेष (2017), 76. बेटीक पैरुख (2017), 77. क्रान्तियोग (2017), 78. त्रिकालदर्शी (2017), 79. पैंतीस साल पछुआ गेलौं (2017), 80. दोहरी हाक (2018), 81. सुभिमानी जिनगी (2018), 82. देखल दिन (2018), 83. गपक पियाहुल लोक (2018), 84. दिवालीक दीप (2018), 85. अप्पन गाम (2018), 86. खिलतोड़ भूमि (2019), 87. चितवनक शिकार (2019), 88. चौरस खेतक चौरस उपज (2019), 89. समयसँ पहिने चेत किसान (2019), 90. भौक (2019), 91. गामक आशा टुटि गेल (2019), 92. पसेनाक मोल (2019), 93. कृषियोग (2020), 94. हारल चेहरा जीतल रूप (2020), 95. रहै जोकर परिवार (2020), 96. कर्ताक रंग कर्मक संग (2020), 97. गामक सूरत बदैल गेल (2020), 98. अन्तिम परीक्षा (2020), 99. घरक खर्च (2020), 100. नीक ठकान ठकेलौं (2021), 101. जीवनक कर्म जीवनक मर्म (2021), 102. संचरण (2022), 103. भरि मन काज (2022), 104. आएल आशा चलि गेल (2022), 105. जीवन दान (2022), 106. अप्पन साती (2022), 107. साहित्यकारक विवेक (2022), 108. नब बनक नब फल (2022), 109. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल (2023), 110. बासभूमि (2023), 111. टकुआटान (2023) तथा 112. एकलव्यपन (2023)

कहल जाइछ, जनिका रास्ताक बोध रहैछ हुनक चालिमे कोनो बाधा-रूकावट नहि होइछ, जँ हेबे करैत तँ ओ किछु नहि बिगाड़ि पबैत अछि। आदरणीय जगदीशबाबूक संग सएह भेल। जीवनमे जहिना ई अनवरत चलैत रहला तहिना साहित्य क्षेत्रमे सेहो हिनक चालि अनवरत देखल जाइछ। हिनका अनेको संस्था अपना मंचपर बजा समय-समयपर पुरस्कृत-सम्मानित करैत रहलैन अछि। जेना-

विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा 'गामक जिनगी' लघु कथा संग्रह लेल 'विदेह सम्मान- 2011', 'गामक जिनगी व समग्र योगदान हेतु साहित्य अकादेमी द्वारा- 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड- 2011', मिथिला मैथिलीक उन्नयन लेल साक्षर दरभंगा द्वारा- 'वैदेह सम्मान- 2012', विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा 'नै धारैए' उपन्यास लेल 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार- 2014', साहित्यमे समग्र योदान लेल एस.एन.एस. ग्लोबल सेमिनरी द्वारा 'कौशिकी साहित्य सम्मान- 2015', मिथिला-मैथिलीक विकास लेल सतत क्रियाशील रहबाक हेतु अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा- 'वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सम्मान- 2016', रचना धर्मिताक क्षेत्रमे अमूल्य योगदान हेतु ज्योत्स्ना-मण्डल द्वारा- 'कौमुदी सम्मान- 2017', मिथिला-मैथिलीक संग अन्य उत्कृष्ट सेवा लेल अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा 'स्व. बाबू साहेव चौधरी सम्मान- 2018', चेतना समिति, पटनाक प्रसिद्ध 'यात्री चेतना पुरस्कार- 2020', मैथिली साहित्यक अहर्निश सेवा आ सृजन हेतु मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी-असम द्वारा 'राजकमल चौधरी साहित्य सम्मान- 2020', भारत सरकार द्वारा 'साहित्य अकादेमी पुरस्कार- 2021', साहित्य ओ संस्कृतिमे महत्वपूर्ण अवदान लेल अमर शहीद रामफल मंडल विचार मंच द्वारा 'अमर शहीद रामफल मंडल राष्ट्रीय पुरस्कार- 2022', मिथिलांचल विकास परिषद्, लहेरियासराय, दरभंगा द्वारा 'यात्री सम्मान- 2022' तथा साहित्य, संस्कृति, सामाजिक आ मिथिलांचलक सर्वांगीण विकासक क्षेत्रमे उल्लेखनीय योगदान हेतु 'शिखर सम्मान- 2022' सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मैथिली साहित्यमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक योगदान अविस्मरणीय छैन। हिनक नाओं लोक श्रद्धाक संग लैत अछि। हिनक लेखनीक नियमितता केतोको प्रकारक मान्यताकेँ रद्द करैत अछि आ विशेष प्रकारक शोध हेतु प्रचलित अछि। खेती-बाड़ी, झंझट-फसाद, मर-मुकदमा, पाबैन-तिहार आदि जीवनक बहुअयामी ज्ञानक भण्डार छैथ मण्डलजी। वैद्यनाथ मिश्र यात्रीए जकाँ हिनका विदेशक यात्रा सम्भव नइ भेलैन मुदा देशमे हैदराबाद, त्रिपुरा, अगरतला, मिजो, राजस्थान आदि जगहक भ्रमण करि ओइठामक संस्कृति, जन-जीवनक करीबसँ देखने छैथ आ अनुभव सेहो केने छैथ।

1990 इस्वीक बादसँ मैथिली रचनाकारसँ सम्पर्क आ हुनकासँ रचनाक

लुइर सीखक बड़ सेहन्ता छल। संयोगसँ किछु दिन पहिने जगदीशजी, कुसमाहीसँ ज्ञात भेल जे डॉ. उमेश मण्डल मैथिली रचनाक सम्पादनक काज करै छैथ आ ओ निर्मलीएमे रहि रहला अछि। साहित्यकार श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक पुत्र छैथ। भेँटक जिज्ञासा भेल। उमेश मण्डलजीसँ भेँट कएल। ओ हमरा मैथिली रचना आ 'सगर राति दीप जरय' केर जानकारी दैत ऐगला आयोजनमे भाग लेबक आग्रह सेहो केलैन।

सर्वप्रथम रचनाक अध्ययनपर जोर देबाक सलाह देला। बादमे जगदीश बाबूसँ सेहो भेँटक अवसरि हुनके आवासपर हुनके सौजन्यसँ भेल। हुनका आग्रहपूर्वक अपना घरपर चलैले कहलयैन। एला। ओ हमरा मनमे रचनाक प्रति दृढ़ता आ आत्मबलकेँ बढ़ेबाक कोशिश बात-बातमे करए लगला। निपक्ष आ आदर्श रचनाक महत्वपर अनेको तरहक बात होइत रहल। अनवरत पढ़ब, अनवरत लिखब केर महत्व सेहो समझौलैन। सत्य साहित्य आ परिस्थितिमूलक रचनाक भेद आ माने-मतलब आदिक ज्ञान देलैन।

अप्पन पहिल कथा 'तीनि लहेरी तेरह हुक्का' केर वाचन 'सगर राति दीप जरय'क कथा गोष्ठी, नवटोली (अन्धराठाढ़ी)मे कएल। कथा वाचनक पछाइत जशो भेटल खट्ट-मीठ स्वादक अवलोकन सेहो भेबे कएल।

डॉ. उमेश मण्डलक सलाहपर जगदीश बाबूक रचित किछु खास कथाक संक्षिप्त विवेचन करैत संकलन करबाक उद्‌घत भेलौं। पोथी सद्यः हस्तगत अछि। संग्रहक सभ कथा तथ्यात्मक अछि। उक्त पनरहो कथामे, ओना तँ सभ कथाक अपन-अपन महत्व अछिए। मुदा अपना सभसँ नीक 'मरनी बोनिहारिन' लागल। आवरण चित्र ओही कथासँ प्रेरित अछि। हम अपन परिवारक सदस्यलोकनिक सहयोगसँ फिलमाकऽ फोटोग्राफी कएल। मरनीक भूमिकामे श्रीमती रामपरी देवी पति श्री धनिक लाल मण्डल छैथ। श्री सुरेन्द्र मण्डल ठीकेदारक भूमिकामे कुर्सीपर बैसल छैथ। संगमे अंग रक्षक रूपमे ललन कुमार सेहो ओइठाम ठाढ़ छैथ। श्रीमती लक्ष्मी देवी पति श्री जितेन्द्र मण्डल, सुगियाक भूमिकामे छैथ। आ नन्दन आ नन्दनी जे श्रीमती लक्ष्मी देवी आ श्री जितेन्द्र मण्डलक संतति छैथ, ई दुनू गोटा मरनीक पोता-पोतीक भूमिकामे छैथ। संगहि ग्रामीण दृश्यकेँ लक्षित करैत बकरी सेहो अछि।

शब्दक चयन, कथाक भाव, कथाकारक लेखन-शैली आदिपर बहुत बेसी

विचार नहि करैत हम यथाशीघ्र एहि कार्यकेँ सम्पन्न कएल। एहि क्रममे हमरा जे कियो उत्प्रेरित केलैन, संग देलैन हुनका सबहक प्रति हम आभार प्रकट कए रहल छी। खासकऽ आवरण चित्र प्रस्तुत करबामे जनिका सबहक सहयोग भेटल जेना श्रीमती रामपरी देवी, श्रीमती लक्ष्मी देवी, श्री सुरेन्द्र मण्डल आदि सभकेँ हमरा दिससँ आभार आ आशीष अछि..!

अन्तोगत्वा पाठकगणसँ हमर आग्रह जे ऐ पोथीकेँ कमो-बेस सफलता लेल महानिर्णयक आने सभ थिकहुँ। ई हमर प्रथम प्रयास छी। त्रुटि सम्भव अछिए। अपनेलोकनि प्रोत्साहित करब आ संगहि सुझाव सेहो देब।

- जनक लाल मण्डल

निर्मली (सुपौल)

10 अगस्त 2023

बोनिहारिन मरनी

छोट-छीन गाम छतौनी। तीनिए जातिक लोक गाममे। साइए घरक बस्तियो। छेहा बोनिहारक गाम। ओना, पास-पड़ोसक गामक लोक छतौनीकेँ प्रतिष्ठित गाम नइ बुझैत, किएक तँ ओइ गाम सबहक लोकक विचारे प्रतिष्ठित गाम ओ होइत जइमे छत्तीसो जातिक लोक बसैत। जइसँ समाजक सभ तरहक जरूरतक पूर्ति गामेमे होइत। मुदा से छतौनीमे नहि, तँए छतौनी राजस्व गाम भऽ सकैए, प्रतिष्ठित नहि। मुदा ऐ विचारकेँ छतौनीक लोक मानैले तैयारे नहि। छतौनीक लोकक कहब जे जहियासँ हमर गाम बनल तहियासँ ने कहियो अपनामे झगड़ा-झंझट भेल आ ने मारि-पीट। जइसँ ने कहियो कियो कोट-कचहरी देखलौं आ ने थाना-बहाना। तेतबे नहि, तीनिए जातिक लोक रहितो सभ मिलि-जुलि एकठाम बैस खेबो-पीबो करै छी आ तीनू जातिक तीनू देवस्थानमे पूजो-पाठ करै छी संगे परसादियो खाइ छी। तेतबे नहि, सभ जातिक लोक संगे-संग कमेबो करै छी आ एक-दोसराकेँ मौका-मोसीबत पड़लापर संगो पुरै छी। आन-आन गामबला हमरा गामकेँ ऐ दुआरे गाम नै मानैए जे ओ सभ बहरबैया छी आ हमरा सबहक पूर्वज अदौसँ रहल अछि।

छतौनीवासी सभ दिनसँ बोनिहारे नइ रहल अछि। पहिने एकरो सभकेँ अपन-अपन खेत-पथार छेलइ। खेत-पथार गेलै केना? ऐ सम्बन्धमे छतौनीक बुढ़-बुढ़ानुस लोकक कहब छैन, हमरा सबहक पूर्वज रौदीक चलैत खेतक बाँकी राज दरभंगाकेँ समैपर नइ दऽ सकलैन, तहीसँ ओ सभ जमीन निलाम कऽ अबधिया, छपरिया हाथे बेच लेलक। हमरा सबहक जमीनक मलिकाना हक खतम भऽ गेल। अबधियो आ छपरियो राजमे नोकरी करै छेलै जे ऐ इलाकामे आबि जमीनो हथिया लेलक आ मुखियो-सरपंच बनि मैनजनी करैए। मुदा एकटा चलाकी ओ सभ जरूर केलक जे जेना अंग्रेज आबि सत्ता हथियौलक तेना चलि नइ गेल बल्कि मुगल जकाँ बसि गेल।

जहियासँ देश आजाद भेल आ सत्ता-ले भोँट-भाँट शुरू भेल, तहियेसँ ने एक्कोटा कोनो पार्टीक नेता भोँट मंगैले छतौनी आएल आ ने एक्को बेर गौंआँ भोँट खसौलक। किएक तँ आइ धरि छतौनीमे भोँटक बूथ बनबे ने कएल। तँए नेतो किए औत। गाममे ने चरिपहिया गाड़ी चलैक रस्ता छै आ ने सार्वजनिक जगह स्कूल-अस्पताल, जैठाम भाषण-भुषण हएत। जइ गाममे छतौनीक बूथ बनैत ओइ गामक लोक सभ छतौनियोँक भोँट खसा लइत। छतौनीक लोकक जिनगियो छोट। ने पढ़ै-लिखैक झंझट, ने चोर-चहारक झंझट आ ने रोग-बियादिक झंझट। किएक तँ गामक सभ बुझैत जे जेकरा कपारमे विद्या लिखल रहत ओ डुमियोँ-मरि कऽ पढ़िए लेत। चोर-चहार एबे कथीले करत। रोग-बियाधि-ले पूजो-पाठ आ झाड़ो-फूक अछिए। तहूसँ पैघ बात जे, जे ऐ धरतीपर रहैले आएल अछि ओ जीबे करत। पानि, पाथर, ठनका ओकर कथी बिगाड़ि लेतइ। आ जे नै रहैबला अछि ओकरा फूलोक गाछपर साँप काटि लेतै, मरि जाएत...। तँए की, छतौनीबलाकेँ भगवानपर बिसवास नइ छइ? जरूर छइ। जँ से नै रहितै तँ देवस्थानमे सालमे एक बेर एते धुमधामसँ पूजा किए करैए? उपास किए करैए? दसनमो स्थान -देवस्थान- आ अपनो-अपनो घरमे गोसाउनिक पीड़ी किए बनौने अछि? तैसंग साले-साल कामौर लऽ कऽ बैजनाथ किए जाइए?

सभ अभाव रहितो छतौनीक लोक हँसी-खुशीसँ जीवन बितबैए। अगर जँ कियो गाममे मरैत वा साँप-ताँप कटैत आकि आगि-छाइ लगैत तँ सभ कियो दासो-दास भऽ लगि जाइत...।

पचास बर्खक मरनी सेहो तइमे सँ एक। जे अपना आँखिसँ अपन पति, बेटा आ पुतोहुकेँ गाछक तरमे खून बोकैर कऽ मरैत देखने। आइ वेचारी पाँच बर्खक पोता आ आठ बर्खक पोतीक बीच आशाक संग जीब रहल अछि। कारी झामर एक हट्ठा देह, ताड़-खजुरपर बनौल चिड़ैक खोंता जकाँ केश, आँगुर भरि-भरिक पीअर दाँत, फुटल घैलक कनखा जकाँ नाक, गाए-बरदक आँखि जकाँ बड़का-बड़का आँखि, साइयो चेफड़ी लगल साड़ी, दुरगमनियाँ आँगी फटला पछाइत कहियो देहमे आँगीक नसीब नइ भेल, बिनु साया-डेढ़ियाक साड़ी पहिरने। यएह छी मरनी।

चारि साल पहिने सुबध, मनोहर आ तौनकी धान रोपए बाध गेल। जाधैर

तौनकीकेँ दोसर सन्तान नइ भेल ताधैर मरनीए पति आ बेटाक संग, माने सुबध आ मनोहरक संग धनरोपनी, धनकटनी, कमठौन, रब्बी-राइ उखाड़ै-काटैले संगे जाइत आ तौनकी अँगनाक काज सम्हारैत। मुदा जहन दूटा पोता-पोती भेलै तहियासँ मरनी अँगनाक काज सम्हारए लगल। ओना, अँगनोमे कम काज नहि। भानस-भात करब, पोता-पोतीकेँ खेलाएब, खुट्टा परहक बाछीक सेवा करब इत्यादि। आने परिवार जकाँ मरनियोँक परिवार भरल-पूरल।

दस आँटीक जोड़ा। तीन-तीन जोड़ा बीआ उखाड़ि सुबध आ मनोहर पटैपर टँगलक आ राड़ीक जुन्ना बना तौनकी बीआक बोझ बान्हि माथपर लऽ कदबा खेत पहुँचल। कदबा एक दिन पहिनहि गिरहत करा देने छेलइ। तँए तीनू गोरेक मनमे खुशी होइत रहै जे सबेर-सकाल रोपि कऽ चलि जाएब। आन दिन कदबे दुआरे अबेर भऽ जाइ छेलए।

..मने-मन सुबध सोचैत, बेरू-पहर अपनो जे कट्ठा भरिक खेत अछि, ओहो सभ तूर मिलि कऽ हाथे-पाथे रोपि लेब।

कदबामे बीआ रखि सुबध आड़िपर बैस तमाकुल चुनबए लगल। मनोहर आ तौनकी खेतमे बीआ पसारए लगल। सौंसे खेत बीओ पसैर गेलै आ सुबधो तमाकुल खा लेलक। तीनू गोरे एक-एक आँटी खोलि खुज्जा पसाइर एक-एक खुज्जा रोपैले बामा हाथमे लेलक। आड़िक कात पच्छिमसँ तौनकी, बीचमे मनोहर आ पूबसँ सुबध पाहि धेलक।..एक पाँति रोपि दोसर धेलक आकि पूब दिस एक चिड़की मेघ उठैत देखलक। मुदा मेघक छोट टुकड़ी देखि केकरो मनमे बर्खाक शंका नै उठलै।

कनी-कनी सिहकी सेहो चलए लगलै। जहिना-जहिना हवा तेज होइत जाइत, तहिना-तहिना करिया मेघक टुकड़ी सेहो उधिया-उधिया ऊपर चढ़ए लगलै। ऊपर चढ़ि-चढ़ि ओ टुकड़ी एक-दोसरमे मिलए लगल, मुदा पच्छिम दिस रौद उगलै। कनीए कालक पछाइत सुरुज झँपा गेल। हवो तेज हुअ लगलै। बिजलोको चमकए लगलै। बुन्दा-बुन्दी पानि पड़ए लगलै। जेते मेघ सघन होइत जाइत तेते पानियोँक बून जोर पकड़ैत गेल। संगे बिजलोको बेसियाएल जाइत। थोड़बे कालक पछाइत घन-घनौआ बरखा हुअ लगल...।

पानिमे भीजै दुआरे तीनू गोरे दौग कऽ आमक गाछ लग पहुँचल। खेतसँ

बीघे भरि हटि कऽ आमक गाछ। खूब झमटगर। चारि हाथ ऊपरेमे दू फेंड़ भऽ गेल। सरही आम।

..गाछक पँजरेमे पच्छिमसँ तौनकी बैसल आ पूबसँ सुबध आ मनोहर। तौनकी साड़ी ओढ़ि दुनू हाथक मुट्ठी बान्हि काँखमे लऽ लेलक। मुदा सुबध आ मनोहर छुच्छे देहे। गमछाक मुरेठा बान्हि लेलक। मुदा तैयो जाड़े दुनू बापूत थरथर कँपैत। नमहर-नमहर बून कखनो काल देहपर खसइ। सौंसे देहक रोइयाँ भुलैक कऽ ठाढ़ भऽ गेलइ। मुदा की करैत, कोनो उपाय नहि। पच्छिमो मेघ पकैड़ बरिसए लगल। जइसँ दूर-दूर धरि बरखा हुअ लगलै। रहि-रहि कऽ मेघो गरजै आ बिजलोको चमकै। एक बेर खूब जोरसँ बिजलोका चमकलै। मुदा आन बेरक चमकसँ बिजलोकाक रंग बदलल। आन बेर पिरौंछ इजोत होइत जहन कि ऐ बेर लाल टुह-टुह।

दुरकाल समय देखि तौनकी मने-मन खौंझा कऽ भगवानकेँ कोसैत, कोनो काजक समय होइ छइ। अखन पानिक कोन काज छइ! जहिना तगतगर लोक हरिदम बलउमकी करैए तहिना ई टिकजरौना इन्द्रो भगवान करैए! अनेरे काजकेँ बरदा जाड़े कठुअबैए! लोक सभ कहै छै जे देवता-पितरकेँ बड़का-बड़का आँखि होइ छै जे एक्केठीम बैसल-बैसल सगरे दुनियाँ देखैए। से आँखि अखन केतए चलि गेलइ। देवियो-देवता गरीबे-गुरबाकेँ जान मारै पाछू लगल रहैए! जन-बोनिहारक काज करैक दू उखड़ाहा होइए। भिनसुरका आ दुपहरिया। भिनसुरका उखड़ाहामे जँ एगारहो बजे पानि भेल वा कोनो बाधा भेल तँ गिरहत थोड़े बोइन देत। अगर जँ जलखै भऽ गेल रहलै तँ बड़बढ़ियाँ नहि तँ जलखैयो पार। यएह तँ ऐठामक चलैन अछि। ई टिकजरूआ भगवान गिरहतेकेँ मदैत करै छइ।

जाड़सँ कँपैत सुबध मनोहरकेँ कहलक- “बौआ, सोचै छेलौं जे आन दिन रोपैन करैमे अबेर भऽ जाइ छेलए जइसँ अपन काज नै सम्हरै छल मुदा आइ सबेरे-सकाल रोपैन भऽ जाइत तँ अपनो बाड़ी रोपि लैतौं, से सभ भङैठ गेल। कखन पानि छुटत कखन नहि।”

दुनू बापूत गप-सप्प करिते छल कि तरतरा कऽ ठनका ओही गाछपर खसल। जैठमसँ दुनू डारि फुटल छेलै तहीठामसँ चिरैत माटिमे चलि गेल। चिरा

कऽ गाछ दुनू भाग खसल। एक फाँकक तरमे तौनकी आ दोसर फाँकक तरमे दुनू बापूत- सुबध-मनोहर- पड़ि गेल।

पानि छुटल। सौंसे गाममे हल्ला हुअ लगलै जे बाधमे जे आमक गाछ छेलै ओ खसि पड़लै। भरिसक ओहीपर ठनका खसलै।

..एक्के-दुइए लोक देखैले जाए लगल। कातेमे ठाढ़ भऽ भऽ लोक देखैत। गाछोपर आ गाछक निच्चाँ जमीनोपर तेते घोरन पसैर गेल जे लोक गाछक भीर जाइक हिम्मते ने करैत। मुदा जीबठ बान्हि करिया गाछक जड़ि देखैले बढ़ल। घोरन तँ खूब कटै मुदा तैयो हिम्मत करि करिया जड़ि लग पहुँचल। ठनकाबला आगिक चेन्ह ओहिना दुनू फाँकमे।

..जड़ि लग ठाढ़ भऽ करिया हिया-हिया देखए लगल। देखैत-देखैत मनोहरक टाँगपर नजैर पड़लै। टाँगपर नजैर पड़िते हल्ला करए लगल- “एक गोरे तरमे पिचाएल अछि! दौग कऽ अबै जाइ जा, एकरा बहार करह?”

करियाक बात सुनि चारू-भरसँ लोक बढ़ल। देखैत-देखैत तीनू गोरेपर नजैर पड़लै। हल्ला करैत करिया कुड़हैर आनए घर दिस दौगल। ..तीनू खून बोकैर-बोकैर मरल। मुदा तैयो सभ बँचा-बँचा कऽ डारि काटए लगल। डारि काटि शील उनटौलक तँ तीनूकेँ थकुचा-थकुचा भेल देखलक। पहिने तँ कियो नै चिन्ह सकलै, किएक तँ तीनू बेदरंग भऽ गेल। मुदा भाँज लगौलापर पता चललै जे दुनू बापूत सुबध काका छी आ पुतोहु छिऐ।

अखन धरि मरनी, अँगनेमे दुनू बच्चाकेँ खेलबैत रहए। गौरिया आबि कऽ कहलकै- “दादी, तोरे अँगनाक सभ गाछक तरमे दबि कऽ मरि गेलौ।”

गौरियाक बात सुनिते मरनी अचेत भऽ खसि पड़ल। दुनू बच्चो चिचियाए लगलै। मरनीकेँ अचेत देखि अलोधनी मुँहपर पानि छीटि बीऐन होंकए लगलै। कनीए कालक पछाइत होश भेलइ। होशमे अबिते मरनी फेर बपहारि काटए लगल।

बच्चाकेँ कोरामे लऽ अलोधनीक संग मरनी देखैले विदा भेल। गाछ लग पहुँचते तीनू गोरेकेँ मुइल देखि मरनी ओंघरनियाँ काटए लगल। ओंघरनियाँ कटैत देखि करिया पँजिया कऽ पकैड़ मरनीकेँ कात लऽ गेल। मरनीक दशा देखि सभ बोल-भरोस दिअ लगलै। मुदा मरनीक करेज थीरे ने होइ! विचित्र

स्थितिमे पड़ल। एक दिस परिवारकेँ नाश होइत देखए तँ दोसर दिस दुनू बच्चाक मुँह। बच्चाक मुँह देखि कनी-मनी आशा मनमे जगए लगलै।

चारि साल पहिलुका नहि, अखुनका बदलल मरनी, नव मरनी। जहिना आगिमे तपैसँ पहिने सोनाक जे रंग रहैत आ तपलापर जहिना चमैक उठैत तहिना। ओना, समाजोक बेवहार जे पहिलुका छेलै अहूमे बदलाउ एलइ। कियो खाइक बौस दऽ जाइत तँ कियो बच्चो आ मरनियोँ-ले नुआ-बस्तर। जहन केकरो भाँजमे कोनो काज अबै तँ ओ मरनियोकेँ संग कऽ लइत। जहिना परिवारमे बुढ़ आ बच्चाक प्रति जे सिनेह होइत, ओहने सिनेह मरनीक प्रति समाजोक बीच हुअ लगल।

अपनो जीबैक आशा आ बच्चोक, मरनीकेँ नव स्फूर्ति पैदा केलक। एते दिन मरनीक हाथमे पुरने खेतीक औजारटा रहै छल मुदा आब ओ बढ़ि कऽ दोबर भऽ गेल। हँसुआ, खुरपी, टेंगारी, कोदारिक संग-संग हथौरी, गैंचा सेहो आबि गेल।

समय आगू बढ़ल। देशक विकासक गति सेहो, बहुत तेज नहि मुदा किछु गति तँ जरूर पकड़लक। गाम-गाममे बान्ह-सड़क, पुल-पुलिया, स्कूल-अस्पताल सेहो बनए लगल। जइसँ खेतीहरो बोनिहारक काज बढ़ल। मरनियोँ छिट्टामे माटि उघब, पजेबा उघब, गिट्टी फोरब, सुरखी कुटब सीखि लेलक। जइसँ बेकारी मेटाए लगलै। रोज कमेनाइ रोज खेनाइ धरि गरीबो लोक आबि गेल। भलेँ जिनगीमे बहुत अधिक उन्नैत नइ एलै मुदा जीबैक आशा जरूर जगलै। ओना, सभ काज छतौनीमे नहि, पास-पड़ोसक आन-आन गाममे। जइमे छतौनियोँक बोनिहार सभ काज करए लगल।

छतौनियोँक दिन घुमलै। सात किलोमीटर पक्की सड़क जे एन.एच.सँ लऽ कऽ रेलबे स्टेशनकेँ जोड़ैत, छतौनीए होइत बनब शुरू भेल।

जहियेसँ 'प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना' छतौनी होइत बनैक चर्चा भेल तहिये-सँ छतौनीक लोकक मनमे खुशी आबए लगलै। गामक लोकक तँ ओहेन दशा नहि जे बस-ट्रक किनैक विचार करितए। मुदा तैयो एते जरूर भेलै जे बरसातमे जे घरसँ बहराएब कठिन छेलै ओ समस्या आब नइ रहतै। ओना, किछु गोरेक मनमे ई बात जरूर उठै जे एते दिन बिनु जूत्तो-चप्पलसँ काज चलै

छेलए, मुदा आब से नै चलत। आड़ि-धुर-माटिपर चललासँ, बेसीसँ बेसी काँट-कुश गड़ै छल मुदा पीच भेने शीशाक टुकड़ी, लोहाक टुकड़ी सेहो गड़त। जइसँ पैरक नोकसान बेसी हएत। मुदा फेर मनमे अबै, एते दिन कम आमदनी रहने जुत्ता-चप्पल नै कीनि पबै छेलौं से आब थोड़े हएत। नइ बेसी तँ एक्को जोड़ा जरूरे कीनि लेब। जइसँ पैरमे बेमाए-ओ ने फटत।

प्रधानमंत्री योजनाक सड़क बनए लगल। मुदा जेते आशा बोनिहारक मनमे छेलै तेते नइ भेलइ। किएक तँ माटिक काज शुरू होइते रंग-बिरंगक गाड़ी सभ पहुँचए लगलै। जे माटिक काज बोनिहार करैत ओ टेक्टर करए लगलै। ओना, काजक गति तेज रहै, मुदा बोनिहारक बेकारी बरकरारे रहलै। सड़कपर माटि पड़िते रोलर आबि सेरियाबए लगल। खेनाइ-पिनाइ छोड़ि धियो-पुतो आ जनिजातियो सभ भरि-भरि दिन देखिते रहैत। ओना, बुढ़ो-बुढ़ानुस देखैत मुदा घरक चिन्ता घिंच कऽ काज दिस लऽ जाइत। पनरहे दिनमे सातो किलोमीटर सड़कपर माटिक काज सम्पन्न भऽ गेल। एकदम चिक्कन, उज्जर धप-धप, घरसँ ऊँच सड़क बनि गेल।

माटिक सड़क बनिते बड़का-बड़का ट्रक चिमनीसँ ईटा खसबए लगल। एह, अजीब-अजीब ट्रको सभ। एते दिन छह-पहिए ट्रकटा गामक लोक देखने मुदा ई सड़क बनने दस पहियासँ लऽ कऽ अठारह-अठारह पहियाबला ट्रक सेहो लोक देखलक।

तीनिए दिनमे सातो किलोमीटरक ईंटा खसा देलक। मुदा ईंटा पसारैक काज तँ इंजन नै करत। ओ तँ लोके करत। मुदा ओइले तँ अनुभवी माने एक्सपर्ट लोकक जरूरत हएत। जे छतौनीमे नहि। तँए बाहरेसँ अनुभवी मिस्त्री औत। ओना, तेहेन बड़का ठीकेदार सड़क बनबैत जे अनेको सड़कक काज एक संग चलबैत। एक्के दिन तेते अनुभवी मिस्त्री ईंटा पसारैले आएल जे सभकेँ बुझि पड़लै जे दुइए दिनमे सातो किलोमीटर ईंटा पसाइर देत। मुदा ईंटा उघैले तँ मजदूर चाही। पहिल दिन छतौनी गामक बोनिहारकेँ काज भेटलै। ईंटा पसरए लगल। धुरझार काज चलए लगलै। छतौनीक सभ बोनिहार खुशीसँ काज करए लगल। तैबीच ईंटापर पसारैले फुटलाहा ईंटा सेहो ट्रकसँ आबए लगल। दोहरी काज देखि छतौनीक बोनिहारक मन खुशीसँ नाचए लगलै। किएक तँ गिट्टी फोड़ैले गामेक बोनिहारकेँ काज भेटतै किने। मुदा ठीकेदारक मुनसी, अपने

खाइ-पीबै दुआरे सस्ते दरसँ गिट्टी फोड़ैक रेट लगा देलक। एक टेक्टर पजेबा फोड़ैक दर साठिए रूपैआ दइले तैयार भेल। एक-दू दिन तँ बोनिहार सभ गिट्टी फोरब बन्न केलक मुदा पेटक आगि मजबुरन सभकेँ लऽ गेलइ। मरनी सेहो गिट्टी फोड़ए लगल। एक टेक्टर गिट्टी फोड़ैमे वेचारीकेँ चारि दिन लगैत, मुदा की करैत।

ऐ सड़कसँ पहिने जे सड़क बनै ओ रियाइत-खियाइत रहि जाइ। माटिक काज भेलापर साल-दू-साल ईंटा बैसैमे लगइ। जइसँ माटि ढहि-ढुहि कऽ उबड़-खाबड़ बनि जाइ। बड़का-बड़का खाधि सड़कपर बनि जाइ। तहूमे तीन नम्मर पजेबा फुटि-भाँगि कऽ गरदा बनि जाइत रहइ। गामक धियो-पुतो उठा-उठा खेत-पथारमे फेक दइत। तेतबे नहि, कोठीक गोड़ा बनबैले स्त्रीगण सभ निकहा ईंटा उठा-उठा लऽ जाइत। मुदा ऐ बेर से नै हएत। दुइए मासमे सड़क बनबैक शर्त ठीकेदारकेँ छइ। जाबे बरखा खसत-खसत ताबे सड़क बनि जाइक छइ।

पचास बर्खक मरनी जे देखैमे झुनकुट बुढ़ बुझि पड़ैत। सौंसे देहक हड्डी झक-झक करइ। खपटा जकाँ मुँह। खैनी खाइत-खाइत ऐगला चारू दाँत टुटल। गांगी-जमुनी केश हवामे फहराइत। तहूमे सड़कक गरदासँ सभ दिन नहाइत। मुदा तैयो मरनी अपन आँखि बँचौने रहैत। जखन पुर्बा हवा बहै तँ पच्छिम-मुहेँ घुमि कऽ गिट्टी फोड़ए लगैत आ जखन पछबा बहैत तँ पूब-मुहेँ घुमि जाइत। बीच-बीचमे सुसताइयो लैत आ खैनी सेहो खा लइत। मुदा तैयो मरनीक मुँह कखनो मलिन नै होइ। किएक तँ हृदयमे अदम्य साहस आ मनमे असीम बिसवास हरिदम बनल रहइ। तँए हरिदम हँसिते रहए।

भिनसुरके उखड़ाहा। करीब नअ बजैत। पूब-मुहेँ घुमि मरनी गिट्टी फोड़ैत रहए। तैबीच पच्चीस-तीस बर्खक सुगिया माथ उघारने, छपुआ बनारसी साड़ी आ ओही रंगक आँगी पहिरने, घुमौआ केश सीटि जुट्टी लटकौने, मोजा लगा कऽ एँड़ीदार चप्पल पहिरने, मुँहमे पान-साए नम्मर पत्ती देल पान खेने, प्लोथिनमे नूनक पौकेट, करूतेलक शीशी, मसल्लाक पुड़िया आ साबुन लेने हाथमे लटकौने आबि लगमे ठाढ़ भऽ मरनीक मेहनत आ बगए देखि दिल खोलि मने-मन हँसए लगल। ..मरनी गिट्टी फोड़ैमे मस्त, किएक किम्हरो ताकत।

..सुगियाक हृदयक खुशी मुहसँ हँसी होइत निकलए चाहैत, मुदा मुँहक

पानक पीत ठोरक फाटककेँ बन्न केने, तँए पानक पीत फेकब सुगियाकेँ जरूरी भेलइ। जइ पजेबाक ढेरीपर बैस मरनी गिट्टी बनबैत रहए ओही ढेरीपर सुगिया अपन भरल मुँहक पीत फेक देलक। पीतक दू-चारि बून मरनीक देहोपर पड़लै। देहपर पड़िते ओ उनैट कऽ तकलक। टटका पीत चक-चक करैत। कनडेरिये आँखिए मरनी सुगियाक मुँह दिस तकलक। सुगियाकेँ पान चिबबैत देखि मरनीक मनमे आगि पजैर गेलइ। पजेबाक ढेरीपर सेहो नजैर पड़लै, सौंसे थूक पड़ल देखलक। आब केना गिट्टी फोरब, ढेरियो आ देहो अँइठ कऽ देलक!

..आँखि गुड़ैर कऽ मरनी सुगियाकेँ कहलक- "गइ रनडिया, तोरा सुझलौ नै जे ढेरीपर थूक फेकलेँ?"

गरीब मरनीक कटाह बात सुनि सुगिया तमैक कऽ उत्तर देलक- "तोरे बान्ह छियौ जे हम थूक नै फेकब।"

सुगियाक बोलकेँ दबैत मरनी बाजल- "एतेटा बान्ह छै, तइमे तोरा केतौ थूक फेकैक जगह नइ भेटलौ जे ऐठाम फेकलेँ।"

सुगिया- "जदी एतै फेकलिऐ तँ तूँ हमर की करमेँ?"

मरनी- "की करबौ। आँइ गइ निरलज्जी, तोरा लाज होइ छौ जे सात पुरखाकेँ नाक-कान कटौलही। जेहने कुल-खनदान रहतौ तेहने ने चालि चलमेँ।"

सुगिया- "अपन देह-दशा नइ देखै छीही!"

मरनी- "की देखबै। ई देह बोनिहारनिक छिऐ। तोरा जकाँ की हम कहियो बमैबला छौड़ा सेने तँ कहियो डिल्लीबला छौड़ा सेने वौआइ छी। एक चुरूक पानिमे डुमि कऽ मरि जेमे से नइ, तीमन चिक्खी नहितन..! जहिना सात घरक तीमन चिक्खै छँए तहिना सातटा मुनसा देखै छँए। हमर परतर सातो जिनगीमे हेतौ? जेकरा संगे बाप हाथ पकड़ा देलक, सहि-मरि कऽ तइ घरमे छी। छुछुनैर कहीं-के! आगि लगा-ले ऐ फुललाहा देहमे..!"

मरनीक बातसँ सुगिया सहैम गेल। मनमे डर पैस गेलै जे हो-ने-हो कहीं मारबो ने करए। मुँह सकुचबैत मुड़ी गोंति विदा भेल।

..सुगियाकेँ जाइत देखि मरनी साड़ीक खूटसँ तमाकुल-चुन निकालि

चुनबए लगल। मुदा तैयो मन असथिर नइ भेलइ। मुड़ी उठा-उठा सुगियो दिस देखै आ मने-मन बजबो करए- “देह केहेन सीटने अछि, उढ़ड़ी। जेना रजा-महराजाक बौह हुअए! हाथ-पैरमे लुलही पकड़ने छैन जे कमा कऽ खेती। जेहने छुछुनैर छौड़ा सभ तेहने छौड़ी सभ।”

तमाकुल खा मरनी ईंटा फोड़ैले घुमल कि दादी-दादी करैत पोता दौगल आबि दुनू हाथे दुनू कान्ह पकैड़ पीट्ठीपर लटैक गेल। पाछूसँ पोतियो एलइ। पोताकेँ कोरामे उठा मुँहमे चुम्मा लऽ पोतीकेँ कहलक- “दाइ, बौआकेँ रोटी नै देलही। दुनू गोरे चलि जाउ, मोरामे रोटी रखने छी, लऽ कऽ दुनू गोरे खा लेब। हम अखन काज करै छी। कनी कालमे आबि कऽ भानस करब।”

पोता-पोती, आँगन दिस विदा भेल। पूब-मुहेँ घुमि कऽ मरनी गिट्टी फोड़ए लगल।

चारिटा बन्दूकधारी बड्डी-गार्डक संग सड़कक ठीकेदार उत्तरसँ दच्छिन-मुहेँ सड़क देखैत जाइ छला। आगू-आगू ठीकेदार पाछू-पाछू बन्दूकधारी। ठिकेदारक नजैर मरनीपर पड़लैन। मरनीपर नजैर पड़िते ठिकेदारक डेग छोट हुअ लगलैन। ठिकेदारक आँखि मरनीपर अँटैक गेलैन। डेग तँ आगू-मुहेँ बढ़बैत रहैथ मुदा आँखिक ज्योति हृदयमे ढुकि कऽ हड़बड़बए लगलैन। मनमे जेना अन्हड़-तूफान उठए लगलैन। जइसँ मने-मन विचारए लगल जे जेकरा कमाइपर हमरा चारिटा बड्डी गार्ड अछि, करोड़ो-अरबोक आमदनी अछि, तेकर ई दशा! ओ तँ हमर ओहेन समांग जे कमासुत अछि, ओहेन तँ नहि जे ऐश-मौजक जिनगी बना कमेलहे सम्पैतकेँ भोगैए। मुदा अँटकला नहि। आगू-मुहेँ बढ़िते रहला। किछु दूर आगू बढ़लापर जेना मरनीक आत्मा आगूसँ रोकि देलकैन तहिना बिच्चे सड़कपर ठीकेदार ठाढ़ भऽ गेला। ठाढ़ भऽ एकटा सिपाहीकेँ अढ़ेलखिन-

“ओइ गिट्टी फोड़निहारिकेँ कनी बजौने आउ?”

ठीकेदारक बात सुनि एकटा सिपाही मरनी दिस बढ़ल। मरनी लग जा कहलक- “मालिक बजबै छथुन, चलही?”

गिट्टी फोरब छोड़ि मरनी उनैट कऽ सिपाही दिस तकलक। सिपाहीकेँ देखि मने-मन सोचए लगल, ने हम कोनो ममिलामे फँसल छी आ ने कोनो

बैंकक करजा नेने छिऐ, तहन किए हमरा सिपाही बजबैए...।

मन सक्कत करि मरनी बाजल- "तूँ नै देखै छहक जे अखन हम काज करै छी। जेकर बोइन लेबै ओकर काज नै करबै। अखन जा। काजक बेर उनैह जेतै तब एबह।"

मरनीक बात सिपाहियो आ ठीकेदारो सुनलैन। एक-दोसरकेँ देखि आँखि निच्चाँ कऽ लेलैथ। ठीकेदारक मन पीपरक पात जकाँ डोलए लगलैन। कखनो मरनीक इमानदारीपर तँ कखनो ओकर अवस्थापर। जइ देशक श्रमिक श्रममे एते बिसवास करैए ओइ देशक विकास जँ बाधित अछि तँ जरूर केतौ-ने-केतौ संचालनकर्तामे बेइमानी छइ। ई बात मनमे अबिते ठीकेदार अपना दिस घुमि कऽ तकला तँ अपन दोख सामनेमे आबि ठाढ़ भऽ गेलैन।

सिपाही कड़ैक कऽ मरनीकेँ कहलक- "नै जेबही तँ पकैड़ कऽ लऽ जेबौ?"

सिपाहीक गर्म बोली सुनि मरनी बाजल- "तोहर हम कोनो करजा खेने छिअ जे पकैड़ कऽ लऽ जेबह। अपन सुखलो हड्डीकेँ धुनै छी, खाइ छी।"

मरनीक बात सुनि सिपाहियोक मन उनटए-पुनटए लगलै। एक दिस मालिकक आदेश दोसर दिस मरनीक विचार। आखिर, एहेन लोकक बीच एहेन सक्कत विचार अबैक कारण की अछि? अनका देखै छिऐ जे खाली सिपाहीक वर्दी देखि डेरा जाइए, भलेँ ओ सरकारक सिपाही नहियोँ रहए। मुदा हमरा तँ सभ किछु अछि तैयो ऐ बुढ़ियाकेँ डर नै होइ छइ।

..फेर मनमे एलै, हम किछु छी तँ नोकर छी मुदा ई किछु अछि तँ स्वतंत्र बोनिहारिन। स्वतंत्र देशक स्वतंत्र श्रमिक। जे देशक अधार छी। आखिर देश तँ एकरो सबहक छिऐ।

सिपाहीकेँ ठाढ़ देखि ठीकेदारे पाछू ससैर कऽ मरनी लग एला। मरनियोँ सभकेँ देखैत आ मरनियोकेँ सभ। ठीकेदार मरनीक आँखिपर अपन नजैर देलैन। नजैर पड़िते मरनीक आँखिमे सुरुजक रोशनी जकाँ प्रखर ज्योति देखलैन। ललाटसँ आत्म-बिसवास छिटकैत देलखैन।..मधुर स्वरमे ठीकेदार पुछलखिन- "चाची, अहाँक परिवारमे के सभ छैथ?"

ठिकेदारक प्रश्न सुनि मरनीक आँखिसँ नोर खसए लगल। मोन पड़ि गेलै

अपन पति, बेटा आ पुतोहुक मृत्यु। टघरैत नोरकेँ आँचरसँ पोछि बाजल- "बौआ, हमर घरबला, बेटा आ पुतोहु ठनकामे मरि गेल। अपने छी आ पिलुआ जकाँ दूटा पोता-पोती अछि।"

"बच्चा सभ स्कूलो जाइए?"

"नहि। एक तँ गाममे स्कूल नइ छइ। तहूमे पहिने गरीब लोकक धिया-पुताकेँ पेट भरतै तब ने जाएत। ने भरि पेट अन होइ छै आ ने भरि देह बस्तर, ने रहैक घर छै, तहन इसकूल केना जाएत।"

मरनीक बात सुनि ठीकेदार सहैम गेला। मने-मन सोचए लगला, जे आँखिक सोझमे देखै छिऐ ओ झूठ केना भऽ सकैए। एते भारी काज केनिहारक देहपर कारी खट-खट कपड़ा छै, तोहूमे सैयो चेफड़ी लागल, काज करै-जोकर उमेर नइ छै, तैपर एते भारी हथौरी पजेबापर पटकैए..!

ठिकेदारक मन दहैल गेलैन। जहिना अकास आ पृथ्वीक बीच क्षितिज अछि, जैठाम जा चिड़ै-चुनमुनी लसैक जाइए, तहिना ठीकेदारक मन सुख-दुखक बीच लसैक गेलैन। जेना सभ किछु मनक हेरा गेलैन तहिना सुन्न भऽ गेला। ने आगूक बाट सुझैत रहैन आ ने पाछूक। मरनीसँ आगू की पुछब से मनमे रहबे ने केलैन। साहस बटोरि पुछलखिन- "भरि दिनमे केते रूपैआ कमाइ छी?"

ठिकेदारक प्रश्न सुनि मरनीक मनमे झड़क उठलै। बाजल- "केते कमाएब! जेहने बैमान सरकार अछि तेहने ओकर मनसी छइ। चारि दिनमे एकटा पजेबा ढेरी फोड़ै छी तँ तीन-बीस रूपैआ दइए। तइसँ तीन तूरक पेट भरत? भरि दिन ईंटा फोड़ैत-फोड़ैत देह-हाथ दुखाइत रहैए मुदा एकटा गोटियो कीनब से पाइ नै बँचैए।"

ठिकेदारक आँखिमे नोर आबि गेल। मनुक्खता जागि गेल। मुदा ई मनुक्खता केते काल जिनगीमे अँटकत? जिनगी तँ उनटल अछि। ❑

केना जीब?

सेवा निवृत्तिक सातम सालक सातम मास, सातम मासक सातम दिन, सात बजे साँझमे दू-जनियाँ सोफापर दुनू परानी प्रोफेसर शंकर कुमार ओंघराएल छला। दुनू बेकतीक मन खटाएल रहैन। दस बजेक करीब दिनेमे सुनने छला जे संगीक संगिनी चूल्हिक गैसक रिसावसँ झड़ैक अस्पतालक सीटपर चिकैर-चिकैर कानि रहल छैथ। सत्तैर बर्खक अवस्थामे संगी अपने दौग-धूप कऽ रहल छैथ! मुदा अस्पतालक डॉक्टर, नर्स आ कम्पाउण्डरो जी-जानसँ रोगीकेँ बँचबै पाछू लगल छथिन! तेकर कारण अछि जे एक तँ पाइक कमी नहि, आ दोसर पहुँचो नीके छैन। संगिनीक घटनाकेँ सरस्वती लगसँ तँ नइ देखने छेली मुदा समाचारक रूपमे सुनने छेली। सुनिते करेज तेना दहैल गेलैन जे साँसक गतिसँ छातीक धुकधुकी बढ़लैन ओ असथिरे ने भऽ रहल छेलैन। जेना नस-नसमे भयक भूत समा गेलैन। अन्हारक वाण जकाँ चारूकातसँ मृत्युक तीर बेधए लगलैन। जहिना वैरागी रागसँ डरैत आ जोगी भोगसँ तहिना मृत्युक भयसँ सरस्वती डरए लगली।

पाँच साए एम.एल.बला ह्विस्कीक बोतल प्रोफेसर शंकर कुमारकेँ बेअसर बुझि पड़लैन। मनक चिन्ता रूपी तीर ह्विस्कीक असरकेँ रस्तेमे रोकने छल। लग अबै ने दैन। कछ-मछ करैत शंकर पत्नीकेँ कहलखिन-

“एकबेर चाह...।”

सरस्वतीक मन ‘चाह’ पीऐसँ सुरक्षित चूल्हि नै जराएब बुझैन। अपन आज्ञाक उल्लंघन होइत देखि शंकरक मन महुराए लगलैन। जहिना भोज्य-पदार्थक बरतनमे गिरगिट खसि महुरबैत तहिना। बेअसर सरस्वतीकेँ देखि डेग भरि पाछू घुसैक शंकर मुस्की दैत दोहरा कऽ बजला- “चलू, हमहीं चाह बनाएब। कीचेनक तँ सभ किछु देखल नै अछि, खाली अहाँ देखा-देखा देब।”

जिनगीक अन्तिम अवस्थामे पतिपर जीत देखि ढेंग सन देहकेँ उठा

सरस्वती कीचेन दिस बढ़ली।

चाह बना शंकर कीचेनेमे पीबए लगला। मुदा तैयो गप-सप्प करैक मन किनको ने होइन। मनक सोग नव विषयकेँ मनमे अबै ने दैन। जहिना घी नइ अरघनिहारकेँ थारीमे देखिते जीह ओकिऐ लगैत तहिना नव विचार अबिते जी-मन पचपचाए लगैन। चाह पीब दुनू गोरे कोठरीमे आबि फेर सोफेपर पड़ि रहला। गुम-सुम्म! जहिना साधक साधनामे लीन भऽ समाधिस्थ होइ छैथ तहिना दुनू गोरे अपन-अपन विचारक दुनियाँमे औनाए लगला।

सरस्वतीक नजैर पाँच बर्खक अवस्थापर पहुँचलैन। की छेलए माए-बापक राज..!

खेनाइ, खेलनाइ, पढ़नाइक संग पाबैनमे उपास केनाइ आ फूल तोड़ि पूजा केनाइ.., बस यएह छल जिनगी। मनमे सुख-दुखक जन्मो कहाँ भेल छल। सोहनगर वातावरणमे बिआह भेल। नैहरसँ सेवा करए नोकरनी आएल छल। सासुरो सम्पन्ने रहए। कथुक अभाव नहि। नोकरे पानियोँ भरै छल आ भानसो करै छल। अपनो प्रोफेसरे छला। पाइक संग प्रतिष्ठो बनौने छला। विद्यार्थीसँ शिक्षक धरिक बीच सम्मानित छला। अपनासँ बीसे बेटोक पढ़ैपर खर्च केलैन। आब जे महगाइ शिक्षामे आबि गेल अछि तइसँ इमानदार कर्मेनिहारक धिया-पुता-ले शिक्षा असंभव भऽ गेल अछि। दरमाहासँ तँ नहियेँ मुदा पिताक देल सम्पैतसँ एते जरूर केलैन। अमेरिकामे बेटाकेँ पढ़ा लिलसा मेटौलैन। मुदा अखन की देखै छी? ऐ अवस्थामे दिन-राति तीन मंजिलापर उतरब-चढ़ब पार लगत? ओहिना तँ हाथ-पएर बिनबिनाइत रहैए। देह भारी बुझि पड़ैए। तैपर परिवारक सभ काज! ऐ उमेरमे बुढ़-कनियाँ बनि जीब रहल छी। ..तरे-तर सरस्वतीक देहसँ पसेना चलए लगलैन। अनासुरती मुहसँ निकललैन- “ऐ जीवनसँ मरब नीक।”

पत्नीक बात सुनि शंकर कुमारक भक्क टुटलैन। अखन धरि चेतनाहीन भेल शंकरो अपन पैछला जिनगी देखै छला। गामक स्कूल...। केते सिनेहसँ पिताजी घरक देवताकेँ गोड़ लगा, कन्हापर चढ़ा ‘सरस्वती माताक जय’ कहि आँगनसँ निकैल सरस्वतीक मन्दिरमे लऽ गेल छला। की हम ओइसँ कम अपना बेटाकेँ केलौं? कथमपि नहि। डेरामे गाड़ल देवता तँ नइ अछि मुदा देवालमे

टाँगल फोटो आ अष्टद्रव्यक बनौल मुरती तँ अछिए। बाड़ीक वसन्ती गुलाब तँ नहि, मुदा मह-मह करैत भकराड़ रूपमे बनल प्लास्टिकक फूल तँ चढ़ौनहि छिऐन। धुमन-सररक धूपक बदला गुगुल आ अगरबत्ती तँ चढ़ैबते छिऐन। मोटर-साइकिलपर चढ़ा शहरक सभसँ नीक विद्यालयमे पढ़ेबे केलिऐन। पिताजी जेतेक हमरा पढ़ौलैन आ एक सीमा धरि पहुँचा देलैन, तहिना तँ हमहूँ केलिऐन। नोकरी भेलापर ताधैर पत्नी गाममे रहली जाधैर बाबू-माए जीबैत रहला। मरितोकाल धरि माए संगे खाइले कहैथ। संगे तँ नहि खाइ, मुदा एकठाम बैस कऽ जरूर खाइ। मुदा बेटाकेँ जहिये-सँ कनभेन्टमे नाओं लिखेलौं तहिये-सँ एके शहरमे रहनौं फुट-फुट रहए लगलौं! समैयक संग शिक्षो बदलल।

..एकाएक शंकरक नजैर आगू बढ़ि अपन जिनगीक अवस्थापर पड़लैन। चारिम अवस्था। जइ अवस्थामे सभ कथूसँ सम्पन्न भऽ अभावकेँ निर्मूल-नष्ट कऽ परिवारसँ ऊपर उठि समाजमे मिलि जाएब होइ छइ। हमर समाज केहेन? जइ समाजमे मनुक्खक संग-संग जीव-जन्तु, माटि-पानि, घर-दुआर धरि एक-दोसरकेँ नीक-अधला, सुख-दुखमे संग दैत अछि। जैठाम एकठाम बैस सभ भोज-काजमे खेबो करैए, दसगरदा उत्सवो हँसी-खुशीसँ मनबैए, ढोल-डम्फापर होरी गाबि-गाबि नचबो करैए, जुड़शीतलमे इनार-पोखैर उड़ाहबो करैए, शिव-पार्वती बना बजाक संग गामो घुमैए...। बेटाकेँ अमेरिकामे पढ़ेलौं। ओ ओइ समाज आ संस्कृतिमे तेना मिलि गेल जे अपन सभटा बिसैर गेल। आइ जँ हम अमेरिका जा रहए लागी तँ ओइठामक जिनगी दुनू बेकतीकेँ केतेक दिन जीबए देत? की दुनियाँमे मृत्यु छोड़ि हमरा सभ-ले किछु शेष नै बँचल अछि! ..प्रोफेसर शंकर कुमारक निराश मनमे एलैन 'करनी देखिहह मरनी बेर।' जिनगीमे केतए चूक भेल? जँ चूक नइ भेल तँ ऐ अवस्थामे पहुँच केना गेल छी?

पत्नीक बात 'ऐ जीवनसँ मरब नीक' सुनि धड़फड़ा कऽ उठि प्रोफेसर शंकर कुमार बजला- "अखन सुतैबेर अछि जे सुति रहलौं?"

"सुतल कहाँ छी। भानस करैसँ मन असकताइत अछि।"

"तँ की भुखले रहब?"

शंकर कुमार बाजि तँ गेला मुदा मन पाछू घुमि कऽ तकलकैन। एक तँ ओहिना मरैक बाट धेने छी, तहूमे जे दस-बीस बर्ख जीबो करितौं से तेहेन रोग भेल जाइ छैन जे भुखले मरब। जँ खाएब नहि, तँ रातिमे नीन केना हएत? जँ नीन नइ हएत तँ जीब केतेक दिन?

पत्नी- “केता-दिन कहलौं जे नोकर रखि लिअ?”

‘नोकर’ सुनि शंकर अमती काँटक ओझरीमे पड़ि गेला। देखैमे नान्हि-नान्हिटा मुदा छाँह जकाँ छोड़ैले तैयार नहि। मनमे जोर मारलकैन जे अपने जिनगी भरि नोकरी केलौं। बेटो-पुतोहु–दुनू इंजीनियर–अनके नोकरी करैए आ अपने नोकर रक्खू। जहन ड्यूटी करै छेलौं, बेसी तलब उठबै छेलौं तहन नोकरे ने रखलौं। कारणो छल जे पत्नी थेहगर छेली आ बेटो-पुतोहुक आशा छल। सरस्वती थोड़े बुझै छेली जे बुढ़ाड़ी एहेन हएत। आइ-काल्हि नोकर केते महग भऽ गेल अछि से थोड़े बुझै छैथ। तकलीफ हेतैन तँ बजबे करती। भलेँ हमरा बुते पुरौल हुअए वा नहि। पहिले जकाँ पाँच-रूपैआ-दस-रूपैआमे नोकर भेटत? तहूमे बाल-बोधकेँ थोड़े रखि सकै छी। अनेरे लेनी-के-देनी पड़त। घरक सुख जहलमे भेटत। जँ सियान राखब तँ तीन हजारसँ कम लेत? तहूमे कि कोनो स्कूल-कौलेज आकि मिल-फैक्टरीक नोकरी हेतइ। घरमे काज करत तँ खाइले नै देबै से हएत? तहूमे नीक-निकुत बेसी वएह खाएत। तेहेन समय आबि गेल जे कहीं सम्पैते ने दुनू बेकतीक जानो लऽ लिअए! ..जानपर नजैर पड़िते शंकरक आँखि ढबढबाए लगलैन। जाने नइ तँ जहान की? ..जहिना वीणाक तार टुटलापर आवाज खनखना कऽ निकलै छै तहिना टुटल जिनगीक स्वरमे शंकर कुमार सरस्वतीकेँ कहलखिन- “अहाँक मन असकताइत अछि तँ पड़ू। कहुना-कहुना कऽ क्षुधा तृप्त करै-जोकर अपनेसँ टभका लइ छी।”

मने-मन सरस्वती बजली- “केना जीब?” ❑

इमानदार घूसखोर

चुनमुन बाबूकेँ सभ जनैत–चाहे ओ आम आदमी होथि वा कचहरीक वकील, मुंशी, किरानी, चाहे इनटेलिजेन्स विभागक अफसर होथि वा प्रशासनिक पदाधिकारी–जे ओहन घूसखोर जिला भरिमे कियो नै छैथ मुदा ईहो सभ जनिते छैथ जे चुनमुन बाबू जिनगीमे कहियो अपन इमान नै डिगौलैन।

जिला सत्र न्यायालयक प्रथम श्रेणीक जज चुनमुन बाबू छैथ। ओना असल नाओं 'सुरेन्द्र प्रसाद' छिऐन मुदा दादीक पहिल पोता रहने उपहार देल नाओं 'चुनमुन' छिऐन जे पछाइत बाबू जोड़ा गेलैन। उर्फ कए कऽ अपनो चुनमुन बाबू लिखते छैथ जे नेमप्लेटमे सेहो छैन। ओना बहुतो लोक प्रेमचन्द आ दिनकरजी सन भेला जिनकर असली नाओंसँ बेसी लोक उपनामेकेँ जनै छैन।

बच्चेसँ चुनमुन बाबू इमानदारीक निर्वहन करैत आएल छैथ जेकर फलाफल सेहो जीवितेमे भेट रहल छैन। पढ़ै-लिखैमे एते इमानदार रहला जे कहियो मौलिक रचना छोड़ि नोट-फोंटक सहारा नइ लेलैन जइसँ सभ दिन नीक रिजल्ट होइत रहलैन। ओना सुभ्यस्त परिवार रहने कहियो अर्थक अभाव सेहो नहियेँ भेलैन। मुदा अपनो पढ़ैमे एते इमानदारी रखबे केलाह जे शिक्षकगणसँ परिवारजनक नजैरमे रहला। एम.ए; एल.एल.बी. कए प्रथम श्रेणीक जिला सत्र न्यायाधीश बनला।

चारि भाँइक बीच साए बीघासँ ऊपरे जमीन छैन जइमे तीन भाँइ नोकरी करै छैथ आ एक भाँइ देबेन्द्र प्रसाद गिरहस्ती करै छैथ। गिरहस्तीक अर्थ खाली खेतीए करब नहि, बल्कि परिवारकेँ संचालित करब सेहो होइत जे सुरेन्द्र प्रसादमे रहैन। नोकरिहरो भाँइ सभकेँ नै बुझि पड़ैन जे खनदानी परिवारमे कनियोँ केतौ घून-घान आकि दिवार-गराड़ लगल अछि। ओना, परिवारक एहेन बनाबटमे चुनमुने बाबूक विचार काज केलकैन। वएह कहलखिन जे जखन तीन भाँइ नोकरी करै छी तखन खेत आ परिवार देबेन्द्रेक भेलैन, जइ दिन हमसभ

रिटायर भेलापर गाम आएब तइ दिन ऐगला विचार करब। मनमे ईहो रहैन जे जखने हम सभ खेत बाँटि लेब तखने ढेर तरहक बिहंगरा परिवारमे उठत। एक तँ ओहिना जमीन जाल छी तैपर भैयारीक तँ आरो महाजाल। जे सम्पैत आइ धरि मान-प्रतिष्ठा बनल रहल अछि वएह गाड़ा-घेघ बनि सभटाकेँ धोइ-पोछि एकबट्ट कऽ देत। जखन जिनगीमे माने-प्रतिष्ठा नहि तखन जिनगियो तँ एक्सपाइर डेटक दबाइसँ बेसी किछु नहियेँ होइत।

एक तँ ओहुना समय निर्धारित अछि जे केते उमेरमे बेटाक बिआह आ केते उमेरमे बेटीक बिआह करक चाही, तहूमे देहक लक्षण आगूमे ढाढ़ भइये जाइत अछि। से सुरेन्द्रक पिता गौड़ीनाथ सेहो केलैन। जखन सुरेन्द्र प्रसाद बी.ए.मे पढ़ै छला तखने बिआह कऽ देलखिन। कहैले तँ ईहो अछि जे जखन पढ़ि-लिखि अपना पैरपर ठाढ़ भऽ जाइ तखन बिआह करक चाही, मुदा जैठाम पैरपर ठाढ़ होइक बेवस्थे नइ रहत तैठाम की सभ अविवाहित बनि बबाजीए भऽ जेता। कौलेजक अवस्थामे सुरेन्द्र प्रसाद रहैथ मुदा मिसियो भरि मनमे ई नहि उठलैन जे अखन बिआह अनुचित हएत। साहित्यसँ दिलचस्पी रहबे करैन तहूमे मध्ययुगीन साहित्यसँ बेसी, तँए मनमे चप-चपिये रहैन। पितोक मनमे कहियो दहेजक लोभ नइ उठलैन जे नीक शिक्षा पाबि नीक नोकरी भेटलापर नीक दहेजो भेटै छइ। समान्य गिरहस्त परिवार जकाँ गौड़ीनाथ अपन दायित्व बुझि समैपर काज समेट लेलैन। किएक मनमे उठितैन जे बेटाकेँ पढ़ैमे बाधा उपस्थित हएत, तँए मन खुशीसँ खुशियाइते रहलैन।

एम.ए.क पहिल सत्रमे जखन सुरेन्द्र पढ़ै छला तखन जौंआँ बेटी भेलैन। नैहरेमे पत्नी रहथिन। ओना साले भरिपर दुरागमन भऽ गेल रहैन। जौंआँ बेटी देखि माइक मनमे तँ कनी सोगो पैसलैन मुदा नानीक मनमे तेतेक खुशी रहैन जे सोल्होअना नातिने पाछू बेहाल रहए लगली। खुशीक कारण रहैन जे तेहेन जुग-जमाना भऽ गेल अछि जे अनेरे लोक बेटाक आशा करैए, तइसँ नीक बेटीए। जँ बेटीकेँ नाति नहियेँ देखत तैयो जँ दुनू बेटीक जिनगी-जान रहलै तँ कहियो माएकेँ थोड़े दवाइ-दारू आकि कपड़ा-लत्ताक दुख हुअ देत। अपनो पहिरन जँ दैत रहतै तैयो सभ दिन हराएले रहत। तहूमे तेहेन कपड़ा सभ बनि रहल अछि जे तीन साल तक नबे रहैए, आ चलत केते दिन तेकर कोनो ठीक छइ। सुइटर बीनैक लूरि सिखा देबै, भरि बाँहिसँ लऽ कऽ अदहा बाँहिंक तेते दैत रहतै जे

दस-दसटा साटि कऽ पहिरत। की करतै माघक जाड़।

ओना, सुरेन्द्रक माइक मनमे सेहो खुशीए रहैन जे भगवान अपना कोखिमे बेटी नै देलैन तँ की हेतै पोतीक कन्याँदानक बाट तँ खुजिए गेल। जे नारी एकोटा कन्याँदान नै केलक ओ चाहे जे हुअए मुदा माइक एक सूत्रमे कम जरूर रहत।

जिला सत्र न्यायालयक न्यायाधीश बनि ज्वाइन करए सुरेन्द्र प्रसाद आइ जेता। असीरवाद दैत माइयो आ पितो कहलखिन- "बौआ, नमहर काजक भार उठबए जा रहल छह, तँए नमहर बनि काज करिहह।"

माता पिताक असीरवाद सुनि सुरेन्द्र किछु नै बजला मुदा मनमे एकटा प्रश्न घुरियाए लगलैन, जे माए बुझि गेलखिन। तोसैत कहलखिन- "बौआ, सभ दिन एकार बनि पढ़लह-लिखलह मुदा अपन परिवार अपने आगू नीक होइ छै तँए पत्नियोँ आ चारू कनटिरबियोकेँ संगे नेने जाह।"

सोझहेमे पिता सेहो रहथिन तँए सुरेन्द्र किछु बाजए नै चाहैथ मुदा मन गुनगुनाइत रहैन जे माए बुझि गेलखिन। बजली- "बौआ, अपन बच्चाकेँ अपने देख-रेखमे पढ़ाएब बेसी नीक होइ छै, सेहो हेतह आ आइ-काल्हि देखै छिऐ दूधे लगसँ बच्चाकेँ अपन लगसँ माए-बाप हटा दइ छइ। दोसर हमरा सबहक आशा केते दिन करै छह, तँए जँ अपना सीखल नै रहतह तँ ऐगलाकेँ कथी सिखेबहक। मनमे होइत हेतह जे पिता की कहता मुदा नोकरीक अर्थ तँ ई नइ होइ छै जे गामे छोड़ि देब, परिवारे छोड़ि देब। मौका-मुनासिब अबैत-जाइत रहिहह। बेटा धन छह, तोरा माल-जाल जकाँ थोड़े डोरी बान्हि रखल जाएत। मनमे ई होइत हेतह जे परिवार टुटि जाएत मुदा से भ्रम हेतह।

भदवारि मासमे हिमालयक पानिक मिलान समुद्रसँ भऽ जाइत अछि जे अनदिना माने आन मौसममे कमजोर होइत-होइत सुखि कऽ छुटि जाइत अछि मुदा फेर भदवारिमे की देखै छहक। परिवार एक धार छी जेकर प्रवाह स्वच्छ पवित्र बनि अनवरत सामाजिक दिशामे बहैत रहए यएह ने भेल। छाती सक्कत कए कऽ घरसँ जाह।"

अखन धरि सुरेन्द्र प्रसाद 'छाती सक्कत' करबक अर्थ खाली कहाबते धरि बुझै छला मुदा माइक असीरवादक शब्द मनमे औंढ़ मारलकैन। औंढ़

मारिते मनमे उठलैन- छाती सक्कत करब बाता-बातीमे आकि काजमे? विचार सक्कत करब आकि पवित्र विचार सक्कत करब?

पवित्र विचारक संग पवित्र जिनगी सक्कत बना चलब आकि सक्कत मनुक्ख बनब?

समुद्रक पानि जकाँ सुरेन्द्र प्रसाद जेते डुबकुनियाँ मारैथ तेते अथाह दिस डुमल जाइथ। अनासुरती मनमे उठलैन- आएल शुभक लगनमा शुभे हे शुभे...।

माइक शुभ बात सुनि शुभेक्क्षु नजैरसँ दलदलाइत सुरेन्द्र बजला-

“माए, तोहर असीरवाद शिरोधार्य अछि मुदा समस्यो तँ जिनगीक बाधक बनि दानव जकाँ अबैत रहै छै किने।”

ओना सुरेन्द्र खुशीमे दहैल गेल छला जइसँ ऐ विचारपर नजैर गेबे ने केलैन जे जहिना बड़का जंगलक कातमे पहिने झाड़े-झूड़ रहै छै जइमे छोट-छोट जानवर बास करैए तहिना ने मनुक्खोक बोन छै जइमे पहिने छोटका जीव-जन्तु रहै छइ।

चुपचाप भेल पिताक मनमे नचैत रहैन जे जुड़शीतलक अछींजल जकाँ घरसँ निकैल दोसराक सेवामे सुरेन्द्र जा रहल अछि की ओकरा बसौत आकि उजाड़त। मुदा बिनु गहन लगने अनुमाने ने होएत।

जहिना कौलेजक पहिल दिन, सासुरक पहिल भेँट, दोस्तीक पहिल मिलन भेने स्वत: हृदय डगमगाए लगैत तहिना सुरेन्द्रो प्रसादकेँ कार्यालय पहुँचते डगमगाए लगलैन। तैबीच नव-नव संगी सभ भेँट करए आबए लगलैन। संगियो बेसी ओहन नहि जे समतूल हुअए। मुदा सुरेन्द्र अवाक। सोझहे नमस्कारक उत्तर नमस्कारमे दैत रहला। आइ मात्र हाजरी बनाएब छेलैन तँए काजक भारो बेसी नहियेँ रहैन। संगी सभ कमिते असकरे रहि गेला।

..मनमे परिवार आ दरमाहा, सोझहा-सोझही संगे उठलैन- दरमाहा तँ सीमित परिवारक स्तरक हिसाबसँ बनै छै, तहूमे जे देश जेहेन रहल ओकर ओइ तरहक बनै छइ। पाँच गोरेक परिवारमे छह गोरे अखने छी। तहूमे चारिटा बेटीए अछि। समाजो तेहेन अछि जे दहेजक सवारी कसबे करत। घरक भाड़ा, बिजली-पानि, इन्कम टेक्स इत्यादि कटिये जाएत तखन हाथमे केते औत? महगी अपना चालिये चलबे करत। तहूमे तेहेन लफड़ल डेग पकैड़ नेने अछि जे

मध्यवर्गीय जीवन धारक मोनि जकाँ चकभौंर लऽ रहल अछि..!

सुरेन्द्र प्रसादक मन विषसँ बिसाइन हुअ लगलैन। ओना, काज नै रहने कार्यालय समयसँ पहिने छोड़ब पहिल दिन उचित नै हएत। कुरसीक मुरेड़ापर मुड़ी अँटकौने अकास दिस देखैक कोशिश करैथ मुदा कार्यालयक छत बाधित करैत रहैन।

चारि बजिते कार्यालयसँ निकैल सुरेन्द्र प्रसाद सोझहे डेरा दिस विदा भेला। रंग-बिरंगक टीका-टिप्पणी रस्तामे होइत जे किछु नीको किछु अधलो छल। परदेशमे पति कमाए एला, से खुशी सुनयनाकेँ रहबे करैन। चारू बेटीक बीच सुनयना यक्षिणी जकाँ पतिक आगमनक प्रतिक्षा बेर-बेर नजैर उठा-उठा करैत रहैथ। ओसारपर पतिकेँ पहुँचते सुनयना मुस्की भरल नजैरक तीर छोड़ली।

वौड़ाएल मन सुरेन्द्र प्रसादक, जिनगीक समस्यासँ वौड़ाएल। ओना, कियो खुशियोसँ वौड़ाइत अछि तँ कियो दुखोसँ मुदा सुरेन्द्र वौड़ाएल छला- अपन आगूक जिनगीक समस्यासँ। अपनाकेँ संयमित करैत बेटीक हाथ पकड़ने कोठरी पहुँचला। पत्नी चाह अनलकैन। दुनू गोरे चाह पीबैत गप-सप्प शुरू केलैन। अपन आमदनी देखबैत सुरेन्द्र बजला- “अपन परिवार भेल, आमदनी सत्तैर हजार महिना भेल, तइमे घर भाड़ा आ इन्कम टैक्सक संग अनेको खर्चक सूत्र लगले अछि। घर केना चलत से तँ अपने दुनू गोरे ने विचारब?”

जहिना सुरेन्द्र प्रसाद अपन मोटा पत्नीपर पटकए चाहलैन तहिना पत्नी भोलीबौलक गेन जकाँ उनटबैत बजली- “देखू हमर कुल-खनदान एहेन नै रहल जे केकरो अधिकार छीनत। जे काज अहाँक छी ओ अहाँक भेल आ जे हमर छी ओ हमर भेल। छह मासक पछाइत पेटक बच्चाक दुख माइए बुझैत अछि, बाप थोड़े बुझत? आकि कहियो किछु कहबो केलौं?”

दू-हत्थी बौल फेकैत सुरेन्द्र प्रसाद बजला- “कहलौं तँ बेस बात मुदा पढ़लौं-लिखलौं दुनू गोरे फुट-फुट स्कूलमे, सभ दिन रहलौं फुट-फुट मुदा धिया-पुता तँ सझिया भेल किने, तखन देह छिपौने काज चलत?”

सुनयना अपनाकेँ कमजोर महसूस करैत बजली- “अहाँक जे विचार अछि से बाजू, जे अनुकूल हएत मानि लेब आ जे नै हएत ओकरा तत्काल रखि

लेब।”

गम्भीर चिन्तक जकाँ सुरेन्द्र बजला- “जेते हमरा दरमाहा भेटत ओ अहाँक हाथमे दऽ देब आ अहाँ अपना विचारे परिवार चलाएब।”

नोकरीकेँ जिनगीक धार आ परिवारकेँ सवारी बुझि सुरेन्द्र प्रसाद नावपर सवार होइत भविस दिस बढ़ला। मनमे उठलैन जे एकबेर पत्नीकेँ पुछि लिऐन जे केना घर चलाएब।

..मुदा एक मनकेँ दोसर मन रोकैत कहलकैन- जखन कुल-खनदानक रक्षक छैथ तखन किछु बाजब उचित नहि, तँए अपना-ले सोचब नीक हएत। चलैत धारमे नावकेँ हवा-बिहाड़ि, पानि-पाथरसँ सामना करैये पड़ै छइ। जखने वेतनक भीतर परिवार चलत तखने एक बान्हल परिवार जकाँ आगू बढ़ब। जखन समाजे अपन रोग अपने अराधि-अराधि कऽ रोगाएल अछि तखन अपन रोग के देखत? मुदा एहनो रोग तँ होइते अछि जेकरा जाधैर दोसर नै बुझैत ताधैर दोसरकेँ कहलो नहियेँ जाइत। कमा कऽ जे परिवारमे आनब ओ पत्नी देखबे करती, आमदपर आमद देखि चसकबे करती, जेते चसकती तेते लोको देखबे करत। देखबो किए ने करत कोनो कि केकरो आँखि सीयल छै जे नै देखत। मुदा बेटा-बेटीक बिआह-दान–माने पढ़ा-लिखा सक्षम बना जिनगीमे उतरैक अवस्था धरिक काज–जँ नै कऽ लेब तँ कोन मुहेँ समाजमे जीब? नीक हएत जे जहिना होशियार रोगी दबाइए दोकानपर दबाइ खा लइए आ घरपर अनबे ने करैए, तेहने जँ उपाय होइ तँ नीक हएत...।

सुरेन्द्र प्रसादक नजैर काज दिस बढ़लैन। कोन एहेन कोर्ट अछि–माने न्यायालय–जइमे काजक बोझ नै पड़ल अछि? से तँ बोझक-बोझ काज अछिए। आ आनसँ भिन्न अपन पहचानो बनबैक अछिए...।

जेना किछु भेँट गेने उत्साह जगैत तहिना सुरेन्द्र प्रसादक मनक उत्साह जगलैन। कार्यालयक संग डेरोमे काज करब। काज बढ़ौने जँ किछु हथियाइयो लेब तँ ओते अनुचित नहियेँ हएत। जँ से नहि करब तँ परिवार साधारण नहि असाधारण रूपमे ठाढ़ अछि। खेनाइ-पीनाइसँ लऽ कऽ पढ़ौनाइ-लिखौनाइ धरि तँ बेटे जकाँ बेटियोक हएत मुदा पढ़ाइ समाप्त होइते वा होइपर रहिते बिआहक भूत कपारपर चढ़ि जाएत। तँए जाधैर प्रतिकूलकेँ अनुकूल बना नै चलल जाएत

ताधैर सड़क परहक गाड़ी जकाँ दुर्घटनाकेँ के रोकत। जहिना ओकाइतसँ भारी ढेंगकेँ बाँसक जोगार लगा उनटा-पुनटा घुसकौल जाइत अछि तहिना उनटबै-पुनटबैक जोगार करैये पड़त, मुदा अनुचित रूपमे कदापि नहि..! हँ, तखन एकटा उपाय अछि जे अपन काज तँ यएह ने जे लोकक झगड़ाकेँ–माने मुकदमाकेँ–निर्णय करब। जेकर नोकरी करै छिऐ ओकर काज अनकासँ बेसी करबै। यएह जिनगीक पहचानो हएत। अनेरे किए एते मुकदमा कोर्टमे पड़ल अछि। महिनामे बीसटा मुकदमाक फैसला करब। जहिना सभकेँ सभ ओझरबै पाछू लगल रहैत अछि तहिना ने कोटो-कचहरी भऽ गेल अछि। ओना काज करैक दिशा सबहक निर्धारित अछि तखन किए ने अपनो अपन बाट पकैड़ तेज गतिये चलब..?

संकल्पित होइत सुरेन्द्र प्रसादक मन ठमकलैन। केकर फैसला करैक अछि, ओकरे ने जे अपन बात अपने नइ बुझि अनेरे ओझराइत आबि गेल अछि आ एकक ओझरीसँ दोसर ओझराएल अछि? जहिना रग्गड़ करैत आबि गेल अछि तहिना हमहूँ दू-चारि रन्दा चला आरो चिक्कन कऽ देबइ! बीसटा केसक फैसला मासक काजक संग डेढ़ लाखक ऊपरी आमदनी सेहो करब अछि। दुनू पार्टीसँ पाइ लेब आ जेकरा पक्षमे फैसला हेतै ओ अपन हएत आ जेकरा विपक्षमे हेतै ओकर पाइ घुमा देबइ। केकरो संग अनुचित नै करब। मुदा लोको तँ शेतानक चरखीए अछि, जे विचारलौं से चलए देत? किए ने चलए देत? चरखीकेँ चरखा बना घुमाएब तखन अनेरे ने सभ सुधैर जाएत। मुदा चरखी चरखा बनत केना?

सुरेन्द्र प्रसादक मन फेर ठमैक गेलैन। थोड़ेकालक पछाइत फुरलैन- जखने काजमे तेजी आनब तखने ने काज मुहथैर लग पहुँचत। मास-दू-मास फोंक जाएत मुदा तेसर मास अबैत-अबैत तँ गर पकैड़िये लेत। जखने केसक बहस हएत आ फैसला करैक स्थितिमे औत, तखने ने ससारैक गर भेटत। तीन-तीन दिनपर तारीख देबै, अनेरे ने मासे दिनमे ठहिया कऽ लिखाइ-फीस जमा करत।

चुनमुन बाबूक दस बर्ख नोकरी पूरि गेलैन। अनढड़न फुलवारीक फूल जकाँ चारू बेटी खिलए लगलैन। तैपर अनढड़न भगवान तीनटा बेटी आ दूटा

बेटा आरो देलकैन। मुदा पति-पत्नीक बीच सिनेहमे कमीक पेंपी पोनगए लगलैन।

सुनयनाक मन कनैत रहैन जे भगवान तेते धिया-पुता दऽ देलैन जे के केतए वौआएत तेकर ठीक नहि। तेहेन जुग-जमाना भऽ गेल जे निहत्था बाप-माए बेटीक पार-घाट केना लगौत। अपने कहियो एक पाइ अनुचित नै कमाइ छैथ, की समाज हमरा छोड़ि देत? बिनु दहेजक बिआह बेटी सबहक हएत? केतए-सँ औत?

ओना पत्नीक मलिन चेहरा देखि चुनमुन बाबू परखैक परियास करै छला मुदा लाख समस्याक बीच सुनयना पति लग पत्नीए जकाँ रहै छेली। काजक भार पतिपर छेलैन्हे। बेसी समैयो ने भेटै छेलैन जे बेसी बातो करितैथ।

दोसर साँझ, चाह नेने सुनयना पतिक हाथमे दैत आगूमे ठाढ़ भऽ गेली। जहिना देवालयमे भक्त किछु याचना करए ठाढ़ होइत तहिना। मुदा सुरेन्द्रक मनमे मिसियो भरि प्रतिकुलता नहि एलैन। एक घोंट चाह पीब सुरेन्द्र बजला-

“मन मन्हुआएल देखै छी?”

ढलान पाबि जहिना पानि ढलैक जाइत तहिना ढलकैत सुनयना बजली-

“एक तँ भगवान बेइमान भेला जे केकरो रोटियोपर ने नून आ केकरो बोरे-बोरे नून दऽ दइ छथिन। नअ-नअ टा बाल-बच्चाक परिमार्जन करब नान्हिटा खेल छी।”

सुनयनाक विचार मुहसँ निकलबो नै कएल छेलैन तइ बिच्चेमे सुरेन्द्र बजला- “खेल-खेल खेलौं।”

‘खेल-खेल खेलौं।’ कहि सुरेन्द्र प्रसाद चुप भऽ अपन आँखि पत्नीक आँखिपर अँटकबए चाहै छला मुदा रोगाएल-सोगाएल-पीड़ाएल सुनयनाक आँखिमे सुखाइत जिनगीक बालुक टीला छोड़ि किछु नहि देखि पड़लैन। ❑

बगबाइर

अदरा अपन चौदहम दिन बिता काल्हि चलि जाएत। बहुत दिनक पछाइत अदराकेँ एहेन जश भेल। जशो केना ने होइत, पहिल दिन अबिते बरिस गेल जइसँ धू-धू जरैत धरतीकेँ असमानी पानि भेटते एक दिस मन तिरपित भेलै तँ दोसर दिस पैछला सात सालक पछाइत एहेन आम-कटहरसँ भेँट भेलइ। तहूमे पैछला सालक छगाएल मन–आमक अभावमे–रहने आरो बेसी सिनेहासिक्त भऽ गेल।

दोसर साँझ। जारैन-काठी चुल्हि लग ओरिया कऽ रखि फुलिया पतिकेँ अदरा नक्षत्रक अन्तिम दिन मोन पाड़ैत कहलखिन- "काल्हिए भरि अदरा अछि, तँए..?"

पत्नीक बात सुनि हरानन्द ओहिना मनमे औंटए-पौड़ए लगला जेना नेबोक रस, चीनी आ पानिकेँ औंट-आँटि शरबत बनौल जाइए। बातकेँ औंटैत-पौरैत हरानन्द बजला- "काल्हि जाए कि परसू जाए आकि नहियेँ अबितए-जइतए तइसँ अपना की। ने आम-कटहर अछि आ ने खुट्टापर लगहैर गाए-महींस। तखन अदराकेँ एने की आ गेने की!"

पतिक बात फुलियाकेँ आन घरक जनिजाति जकाँ छुलकैन नहि, बल्कि विचारकेँ गौर करए लगली। कहै तँ ठीके छैथ मुदा साल भरिक पाबैन छी, बाल-बच्चाक घरमे छोड़ियो केना देब। एकबेर छुटने तँ जिनगीए भरि छुटि जेतइ। बजली- "नइ पान तँ पानक डंटियोसँ पाबैन नै करब से केहेन हएत?"

फुलियाक आग्रह सुनि हरानन्द सामंजस करैत बजला- "घरमे रहने सभ दिन पाबैने-पाबैन होइ छै आ नै रहने पाबैनो फोंक भऽ ओहिना चलि जाइ छै जहिना आन दिन चलि जाइए।"

फुलिया मुड़ी डोलबैत बजली- "हँ, से तँ चलिये जाइ छै मुदा पाबैनक

अपन 'रूपं मधुरम् तिलकं' मधुरम होइ छइ किने।"

फुलियाक बातपर मुस्की दैत हरानन्द बजला- "हँ, से तँ होइ छइ। मुदा एहनो तँ होइते छै जे सालक सत्ताइस नक्षत्रमे अदरो एकटा छी, जे पनरहो दिन अरबा चाउर, दूध, चीनी, आम आ कटहरसँ पूजल जाइए आ एहनो नक्षत्र तँ होइते अछि जेकरा एको दिन पूजन-पाबैन नै होइ छइ। तँए कि ओ सालक नक्षत्र नै भेल?"

"भेल किए ने, मुदा सभकेँ लौल रहै छै किने जे आगत-भागत हुअए।"

फुलियाक बात ओराएलो ने छेलैन कि बिच्चेमे हरानन्द टपकला-

"लौलो-लौलमे भेद होइ छै किने। कियो अपन सेवा कएल छागर बलि चढ़बैए आ कियो नगद नारायणसँ कीनि चढ़बैए, चढ़बैत तँ दुनू अछि। मुदा अहीं कहू जे दुनू एक्के मने चढ़बैए?"

"जखन घरमे अरबा चाउर नै अछि, दूधक जोगार नै अछि, ओहो जे बगबारिमे आम-कटहर होइ छेलए सेहो छिनाइए गेल, तखन तँ ठीके...। छुछ मुहेँ शंख बाजत?"

"हँ से तँ नै बाजत। मुदा..?"

साठि बर्खक हरानन्द अपन अन्तिम हार पैछला साल तखन मानि गेला जखन अपन लगौल-सजौल गाछी-कलमक टुकलोसँ वंचित भेला।

पिताकेँ परोछ भेला पछाइत हरानन्द पाँच बीघा चास, तीन कट्ठा बास आ आठ कट्ठा गाछी-कलमक रक्षक छला। ओना चास-बास अरजैमे हरानन्दक कोनो योगदान नहि छेलैन मुदा आठ कट्ठा गाछी-कलम लगबैमे तँ छेलैन्हे।

दस-बारह बर्खक जखन हरानन्द रहए तखने रूपलाल अपन पुरना गाछी उपटबैक विचार केलैन। उपटबैक कारण रहैन जे एक तँ आम सभ नीक नै छेलै दोसर जेहो छेलै से पुरान भेने या तँ फड़बे नै करइ या फड़ला पछाइत रोगाइये जाइ छेलइ। रूपलालक मनमे उठलैन जे गाछी-कलम कि लोक अपना नापसँ लगबैए जे हम तीस बर्ख जीब तँए आमो गाछ तीसे बर्ख रहत। तीन-तीन-चरि-चरि पुश्तक गाछी-कलम, पोथी-कलम सभसँ परिवार सुख करैए। से नहि तँ दस बारहे बर्खक हरानन्द अछि तइसँ कि मुदा अपना संगे ओकरो किछु भार

देबइ। दुनू बापूतक सीमानपर एकटा गाछियो रहत।

पुरना गाछीक गाछ हटा रूपलाल पाँच बर्ख जोत-कोर केलैन, अन्न उपजौलैन। पछाइत गाछी लगबैसँ पहिने हरानन्दकेँ कहलखिन जे बौआ नीकहा आमक आँठि बीछि एकठाम रोपिहह आ कलम लगबैले सहरगंजा एकठाम हाथ-हाथ भरिपर रोपि दिहक जे उखाड़ैमे असान हएत। अपन लगौल गाछी-कलम अधिक बिसवासू होइ छइ। समय तेहेन भऽ गेल अछि जे बिसवास अपन चेहरे बदैल लेलक अछि। जे नर्सरी गाछी-कलम, बाड़ी-फुलवारीक बीआ बेचैए ओहो ओहन भऽ गेल अछि जे कहत सागवानक गाछ छी आ भऽ जाइए बौनैया काँट! खाएर जे हौउ, अपन गाछी अपने लगाएब।

साल भरिक पछाइत आँठीसँ डेढ़-डेढ़, दू-दू हाथक गाछ भऽ गेल। सरहीकेँ मुसरा काटि, बरद जकाँ सुरेब बनैले थल्ला उखाड़ए हरानन्दकेँ कहि रूपलाल आगूमे आबि ऐ ताकमे बैसला जे देखिऐ केना उन्टा-सुन्टा खुरपी चलबैए। आठे कट्ठा कलम-गाछी लागत तइमे गाछे केते रोपल जाएत। तहूमे नवका वौना किस्म नहि, बड़का किस्म छेलइ। मेल-पाँच कऽ सरही एक भाग आ कलमी एक भाग लगाएब नीक बुझि हरानन्द सएह केलैन। अपन खेती-पथारीक जिनगी हरानन्दक तँए झूठ-फूससँ कम भेँट।

एक्कैस बर्खक अवस्थामे हरानन्दकेँ बेटा भेलैन। तीन मासक पछाइत बच्चाक माथ नमहर हुअ लगलै। साल भरि जाइत-जाइत असर्द्ध देखैमे लागए लगलै। दुनू परानी हरानन्द विचारलैन- कोखिक पहिल सन्तान छी। केना छोड़ि देब। जमीन-जत्था लोक किए रखैए। से नहि तँ जाबे तक जीबैक आशा रहतै ताबे तक तकतियान करबै। तइले जे हौउ। खेत-पथार रहौ आकि चलि जाउ। जँ मनुक्ख बँचत तँ ओहूसँ बेसी अरैज लेत आ जँ मनुखे ने रहत तँ खेते-पथार कोन काजक। गणेशजीक माथ सन ओइ बच्चाक माथ भऽ गेलइ। एनमेन हाथीक माथ सदृश...।

समाजक चलैनानुसार हरानन्द दुनू दिस बढ़ल। एक दिस गामक डॉक्टरी-इलाज तँ दोसर दिस झाड़-फूक, टोना-टापर। बिमारीक चक्रमे पड़ने दुनू बेकतीक जीवनचक्रे बदैल गेलइ। जहिना हरानन्द भरि-भरि दिन झाड़-फूक केनिहारक भाँजमे वौआइत तहिना फुलिया पथ्य-पानिक संग घरेक आइ-पाइमे

समय गमबए लगली। एक दिस सौनक बून जकाँ खर्च बरसए लगलैन तँ दोसर दिस खेती-पथारीसँ बिमुख भेने आमदनी हराए लगलैन। छह मास बीतैत-बीतैत तीन बीघा जमीन हरानन्दक बिका गेलैन। मुदा अखनो दुनू परानीक आशा ओहने बनल छैन जहिना छह मास पहिने छेलैन। डॉक्टरसँ लऽ कऽ झाड़-फूक केनिहार धरि जे कियो देखैत तँ ई कियो ने कहैत जे ई रोग छुटैबला नइ अछि बल्कि एते बोल-भरोष दैत जे रोग निसचित भगबे करत। जइ खेतक अन्नसँ हरानन्दक परिवार चलै छेलैन वएह खेत बेचि-बेचि बेटाक इलाजो करबैथ आ अपनो खाए लगला। ठाकुरक बरियाती जकाँ सभ ठाकुरे-ठाकुर। उचित-अभ्यागतक भाँजमे अपनो दुनू परानी हरानन्द सएह बनैत चलि गेला। खेत बीक रहल अछि आ रोगो बढ़िये रहल अछि। समुद्रमे भँसैत नाव जकाँ केतए जाएत कोनो ठीक नहि।

दस मास पुरैत-पुरैत बच्चा मरि गेलइ। बच्चा तँ मरिये गेलै मुदा परिवारोक कोनो तनभगन नै रहए देलकै। खेतक लूट भऽ गेलइ। कियो उचित मूल्य दऽ लेलैन, तँ कियो हथपेंच एकक तीन लेलैन। घराड़ी छोड़ि हरानन्दकेँ किछु ने बँचलैन। खाली एतबे जे चास बटाइ करता आ गाछी-कलम ओगरवाहि।

मृत्युओ तँ सबहक एक्के रंग नै होइत। कियो जनमिते मरि जाइए तँ कियो रोग-वियाधिसँ चटपटा मरैए। मुदा तैसंग ईहो ने होइ छै जे कियो जनमरोगी बनि जीबैए तँ कियो रोगाएले जिनगीक आनन्द लुटैत जीबैए। जहियासँ हरानन्द बेटाक बिमारीक इलाजक पाछू बढ़ला तहियेसँ दुनू बेकतीक मन-मोटाव सेहो बढ़ए लगलैन। मन-मोटावक कारण रहैन दुनूक दू धारणाक धारा। हरानन्दक मनकेँ पकड़ने रहैन जे डॉक्टरी इलाजसँ रोग भागत आ फुलियाक मन झाड़-फूकमे पकड़ाएल। जेकर फलाफल डॉक्टर आ झाड़-फूक केनिहारकेँ एलापर स्पष्ट देखि पड़ैत। जैठाम हरानन्द डॉक्टरक आइ-पाइ नीक जकाँ करै छला तैठाम फुलिया झड़निहार-फुकनिहारक आगत-भागत करै छेली। काजक दौड़मे परिवारोक बीच अहिना होइ छइ। कियो काजकेँ काज बुझि करैए आ कियो काजकेँ काज बुझैए। भलेँ कियो काजक आ कियो अकाजक किए ने बनि जाए। बिलाइक झगड़ामे बानर पंच। जखन मंतरिया

अबैत तँ घन्टो बैस डॉक्टरी इलाजकेँ अदखोइ-बदखोइ करैत। दुनूक बीचक लट-पट-सट-पट दुनू बेकती हरानन्दक विचारपर सेहो पड़िते छेलैन। रोगकेँ कमैत नै देखि दोसर-तेसर साँझमे सभ दिन दुनू परानीक बीच एक आखर भइये जाइ छल। एक दिस खेत बोहाइत देखि हरानन्द झाड़-फूककेँ अनुचित खर्च बुझि पत्नीकेँ झपटैथ तँ दोसर दिस फुलिया डॉक्टरी इलाजकेँ अनुचित बुझि पतिकेँ झपटैत रहै छेली। पंच कियो ने। दुनू पार्टी लड़िये कऽ फरियेता, जे दसम मासमे निर्मूल भेल।

हरानन्द बोनिहार-बटेदार नहि किसान-बटेदार बनि नव जीवन धारण केलैन। जिनगी बदलने बहुत किछु बदलैयो पड़ै छै आ बहुत किछु अपनो बदैल जाइ छइ। हरानन्दक अपन खरिहाँन उसैर गेलैन। खेतक उपजा अदहा-अदही, सेहो ने अपना मने ने लगा सकै छी आ ने काटि सकै छी। तेतबे नहि, आब आमक बगबारि करए पड़तैन जइमे कलमी चारिमे एक आ सरही तीनमे एक भेटतैन। भलेँ कलमीसँ सरहीए किए ने नम्हरो आ गुदगरो होइत।

वसन्त पंचमीक दिन। सरस्वती पूजाक संग किसान हरो ठाढ़ करता। जोड़ा बरदक बटेदार किसान रहितो हरानन्द हर केतए ठाढ़ करता। किसान तँ अपन ओजार–हर-कोदारि-खुरपी-हँसुआ–बड़ही ऐठामसँ सान करा अपना घरमे पूजा करत आकि अपन हाथ आ हाथक ओजार अनका घर? हर ठाढ़ केतए करब ई हरानन्दक मनकेँ हौंर देलकैन। सतंजा अन्न सतंजा तीमन-तरकारी जकाँ हरानन्द बेरा नै पाबि रहल छला जे की कथी छी। अपन रंगे बदैल नेने अछि। खेतमे मेहनत ओतबे करब मुदा उपजा अधिया हएत। जइ साल रौदी-दाही हएत तइ साल बटेदारक खर्च जाएत आकि खेतबलाक खेत? मुदा उपाइयो तँ दोसर नहियेँ अछि। हरानन्दक मन घुमलैन- किछु खेती जोति-कोरि होइ छै आ किछु ओहुना–माने छिटुआ–सेहो होइ छै, तइमे की नीक? आगू सीमा घेरल अछि। अधिया। जखन अदहे हएत तखन किए ने लागतमे कटौती कएल जाए। ओते तँ बँचत हेबे करत किने। मुदा जँ बीए खा जाएब तखन खेती कथीक करब..? श्रमक ह्रास मंथर गतिए नै दुरूत गतिए हुअ लगल। जहिना सौनक झटकीमे पानिक नमहर-नमहर बूनक संगबे हवा भेने आरो दगनियाँ रूप पकैड़ बरसैए तहिना श्रमक ह्रास भेने रंग-बिरंगक रोग श्रम-शक्तिकेँ धेलक।

फलाफल केतौ श्रमक चोरि तँ केतौ श्रमक बेइमानी, केतौ अनदेखी तँ केतौं बलजोर हुअ लगल!

तेसर सालक पंचायत चुनाव हरानन्दकेँ आरो धकिया देलकैन। जिनगीमे दुनू परानी हरानन्दकेँ छल-प्रपंच, गरीब भेनौं नै छुबि सकलैन। भगवानक लीला बुझि सभ दुख-सुखकेँ दुनू परानी घोंटि गेला। मनो मानि लेलकैन जे जहिना बेटा आएल तहिना गेल। दुनियाँ थोड़े दोखी बनाएत जे बेटाक तकतियान नै केलिऐ। धर्म-कर्म धने ने सुधन कहबैए। की ई हमर सफलता ई नहि जे बेटा-ले अपन सर्वस्व गमा लेलौं। मुदा दोखोक तँ एक नै अनेक कारणो होइते छइ। जेकर फलो सोझहेमे अछि।

हरानन्द जिनका हाथे अपन गाछी-कलम बेचने छला, अखन हुनके बगवार बनि गाछीक ओगरवाहि करैत रहथिन। तीन गोरे पंचायतक मुखिया-ले उम्मीदवार रहैथ। तीनूमे के नीक ओ विचारि दुनू परानी हरानन्द भोँट देलखिन। कुलानन्द अपन बगवार बुझि हरानन्दकेँ अपन भोँटर बुझैत रहथिन। कुलानन्दक हारि हरानन्दक कपारपर हड़हड़ा कऽ खसलैन।

अँगनाक ओसारपर दुनू परानी हरानन्द अपन दिन-दुनियाँक गप-सप्प करैत रहैथ। साठि बर्खसँ ऊपरेक दुनू बेकती। जिनगीक संगी खाली लभे-मैरेजक नहि, चलैत-फिड़ैत समाजोक बन्धन तँ छिऐ। एहेन स्थितिमे दू-दिलक दिलराजक बास केतए हएत? ओहुना लोक बुझैए जे ओल्ड बेटल, ओल्ड वाइन आ ओल्ड वाइफ बेसी चसगर होइ छइ। ओना, दुनू परानी फुलियाक अवस्था दुनूक चेहराक रूपे-रंगकेँ बिगाड़ि देने अछि। फुलियाक मुँहमे तीनटा चौह बँचल आ हरानन्दकेँ सेहो नहि। बिनु दाँतक मुहसँ अदन्त बच्चा जकाँ गुलावी हँसी हँसैत हरानन्द फुलियाकेँ कहलखिन-

“आब ऐ दुनियाँमे रहैक मन नै होइए। होइए जे जल्दी मरि जैतौं जे अपनो भार हटितए आ दुनियोँक भार घटितै।”

जिनगीक तीत-मीठ जे फुलिया आ हरानन्दकेँ पति-पत्नीक रूप बिगाड़ि देने छल ओ ठमैक पुन: जिनगीक धार लग पहुँच गेल। एक तँ उमेरक उपजा, दोसर संगी बनि संग-संग चलैक। फुलिया बजली- “कहलौं तँ बैस बात मुदा एते दिन जे केलौं से केलौं, जहिना अहाँ केलौं तहिना हमहूँ केलौं मुदा आबो जे

ओहिना पहिलुके जकाँ करब से थोड़े मानि लेब।”

फुलियाक बात सुनि हरानन्द ठमकला। ठमकैक कारण भेलैन पैछले जकाँ आब नै जीबए चाहै छैथ। वैचारिक मेल-मिलानक मन बना जीबए चाहै छैथ। पुछलखिन- “एना किए करुआएल बात बजलौं?”

पतिक शान्त भाव देखिते फुलियाकेँ सह भेटलैन। भरियबैत बजली-

“जखन दुनू बेकती संगीए नहि, अर्द्धांगिनियोँ छी तखन एहेन बात बिना विचारने किए बजलौं जे मरि जाएब? अहाँकेँ जीबैक मन नै अछि? अकैछ गेलौं तँ मरि जाउ। मुदा हमरा जे मारब से दोखी के हएत?”

विधवो नारी तँ अधमौगैते जिनगी जीबै छैथ। तहूमे फुलिया आ हरानन्दक बीच उमेरक दूरी मात्र साले भरिक। तहूमे साल भरि फुलिया आरो निच्चेँ। गुम्म भऽ हरानन्द विचारिते रहैथ कि तखने कुलानन्द बेधड़क आँगन पहुँच हरानन्दकेँ दबारैत कहलकैन- “हमरा गाछीक भीर काल्हिसँ कियो नै जैहह। देखि लेलिय जे केहेन हितैषी बगवार छह।”

जहिना ध्वनि साधनाक समय बमक आवाज साधनाकेँ भंग करैत तहिना पत्नीक बात बिसैर हरानन्द कुलानन्दकेँ उत्तर देलखिन- “बेटा चलि गेल से तँ छाती लगा मारलौं आ बगबाइरक जे आमे चलि जाएत तेकर सोच अछि। जे मन फुरए से करब।”

हारैत-हारैत हरानन्द जिनगी हारि चुकल छला। मिसियो भरि कलेज निरोग कहाँ रहि गेल छेलैन जइसँ हूबा कऽ बजितैथ जे अही हाथक लगौल गाछी-कलम छी, हिस्सेदारी टुटि गेल मुदा अखनो ओहिना मोन अछि जे लोटे-लोटा जड़िमे पानि देने छी। ❑

अपन पुरखाक डीह

गरमी मास तँए बाजारक काज भिनसुरके उखड़ाहामे करब नीक बुझि– माने परिवारक काज छी, कोनो कि एकेटा दोकानक काज रहैए, रंग-बिरंगक काज, रंग-बिरंगक दोकान गेले पछाइत ने हएत। तँए बेसी समय लगिये जाइए। भिनसुरका उखड़ाहामे जँ कनी-मनी अबेरो भेल तँ नहाएब पछुआएल रहैए। जिनगीक गति-विधिमे नहेबो सृजन संस्कार छीहे। मुदा बेरुका उखड़ाहामे जखन घरसँ निकलैक समय होइए तखन जँ निकलब तँ घुमती बेर अन्हारमे पड़िये जाएब, यएह सोचि जलखै कऽ साइकिल पकैड़ झंझारपुर बाजार विदा भेलौं।

गामक आखिरी टोल टपि जगरनाथपुर वाली रमकल, पच्छिम-मुहेँ माने झंझारपुरे दिस बढ़ल जाइ छेली। नवके सेनरेले साइकिल, हल्लुक चाइल, ई सोचि रेसमे जाइत रही जे कोनो काज करैमे शुरूसँ तेजी नइ राखब तँ पछाइत काजक मुहेँ टेँढ़ भऽ जाएत नइ तँ नाङैरे छपटा जाएत, तँए रेस रही। एक लग्गा आगू जखन जगरनाथपुर वाली आएल तखन चाकर-चौड़गर, देह आ दुलकी चाइल देखि मन सिहैर गेल।

तीन साल पहिने जगरनाथपुर वाली पुतोहुक रूपमे लालपुर एली। जेहेन चाकर-चौरगर, हड़गर-कटगर देह जगरनाथपुर वालीक तइसँ बीसे छीतन भाइक सेहो रहैन। ओना चाकर-चौड़गर भुटाँरि सेहो होइए मुदा से नइ, छीतन भाय जेहने चाकर-चौरस तेहने नमगर-छीपगर सेहो रहैथ तँए भीहगर पुरुख जकाँ रहैथ। मुदा तइ आगू तँ जगरनाथपुर वाली भौजी छोट-खुट्टीक बुझिये पड़ै छेली मुदा तइसँ की हुअए, पुरुखक नाप पुरुखक जड़ी-कड़ीसँ होइए, महिलाक नाप महिलाक जड़ी-कड़ीसँ होइए, तइ मानेमे जेहने भीहगर पुरुख छीतन भाय तेहने भीहगैर महिला जगरनाथपुर वाली। मोटा-मोटी यएह बुझू जे दुनूक जोड़ी अधो-छिधो भुटाँरिक श्रेणीमे नइ अछि।

खएर जे छेलैन, सुखल डेढ़ कट्ठा आ सहगर दू कट्ठा आ मटि-पनियाँ तीन कट्ठा खेत एक दिनमे छीतन भाय कोदारिसँ उनटा दइ छेलखिन। जे गामक सभ जनैए, कमासुत देखि छीतन भायकेँ अनका जकाँ बिआहमे दलालकेँ नै भीड़बए पड़लैन, कन्यागते अपन बेटीक चेहरा-मोहरा भजारि पसिन कऽ लेलकैन। सोझ-मतिया छीतन भाय, माए-बाप मरि गेल रहैन, दान-दहेजकेँ हाथक मैल बुझि फेक देने रहथिन।

तीन साल तीन मास छीतन भाइक बिआहक भेल छेलैन, जइमे तीन मास मुइनो भऽ गेलैन। मृत्युओ कि कोनो कि ओछाइनपर पड़ल-पड़ल भेलैन। से नइ, पुरखाह मृत्यु भेल छेलैन। दुपहरका समय रहै, नहाइ बेर रहै, पोखरिक घाटक बगलेमे एकटा ढेंग रहै, ओकरे उठा पोखरिक किनछेरमे घाट बनबै काल छातीक हड्डीए सरैक गेलैन। हड्डी सरैकते ढेंग नेनहि खसि पड़ला, खसबक संग ऊपरसँ ढेंगक चोट सेहो नीक जकाँ लगलैन। ओत्तै घाटेपर छीतन भाइक प्राण निकैल गेलैन।

समैयक संजोग कहियो आकि दुनूक संजोग सवा दू बर्खक एकटा बेटा छैन। समैयक संजोग ई भेल जे तीस बर्खक बरकेँ बारह-बर्खक कन्याक संग बिआह भेने, चाहे सन्ताने बिलमसँ होइ आकि जनमैसँ पहिनहि कोंकिरिया जाइ। साल भरिक पछाइत छीतन भायकेँ बेटा भेलैन। जाबे छीतन भाय जीबैत रहला ताबे जगरनाथपुर वाली अँगना-घरक काज सम्हारैत बेटाक सेवा करै दुआरे घरसँ बाहर कमाइले नइ गेली। ओना शुरूक साल नवकनियेँमे गेलैन, पछाइत बच्चाक बोझ पड़ि गेलैन। ओना जगरनाथपुर वाली ऊहिगर जनाना छैथे। घर-अँगनासँ लऽ कऽ खेत-पथार धरि काजक बेसी लूरि। सभ लूरि ऐ दुआरे नइ जे असंख्यो लूरिमे किछुए लूरिक खगता लोककेँ जिनगीमे होइ छइ।

जगरनाथपुर वालीक दुलकी डेग देखि मनमे भेल जे पुछिऐन जे 'केतए जाइ छी?'

ओना अखन साइकिल सवारी पुरुख-औरत सभ मिलियो कऽ करै छैथ आ फुटो-फुट। मुदा से नइ ओइ जगहक बात छी जैठाम पुरुख-औरतक बीच संग मिलि साइकिल सवारी बरजित अछि। तँए संगे चलैक कोनो गर ने बुझि पड़ल। फेर भेल जे जँ साइकिलसँ उतैर दुनू गोरे गप-सप्प करैत रस्ता काटब

ओ बेसी नीक हएत। फेर शंको हुअए जे आगू नमहर पाँतर अछि, रस्ते-रस्ते केते लोक चलत, सभकेँ अपन-अपन मन छै जँ कियो किछु उट-पटाँग बात बाजि दिअए, तखन तँ लेनी-देनी भऽ जाएत।

फेर भेल जे जहिना ओ उट-पटाँग बाजत तहिना हमहूँ उट-पटाँगे सुनि कऽ बुझि लेब। तँए लोक केकरोसँ गप-सप्प नइ करए, रस्ते-रस्ते चलए नइ, सेहो केहेन हएत। मने-मन गुनधुन करिते रही कि साइकिलक पैडिल ढील भऽ गेल, गति टुटए लगल। मुदा ताबे जगरनाथपुर वालीक बगलमे पहुँच गेल रही।

ओना, साइकिल चलिते रहए, मुदा ब्रेक दाबि ठाढ़ केलौं। बगलमे साइकिल रोकैत बजलौं– "केतए जाइ छिऐ?"

एक तँ ओहुना दिअरक सामाजिक सम्बन्ध, तैपर पति जीवित रहने महिलाकेँ अधिकारो क्षेत्र घटैए, जे पुरुखक सीमामे आबि जाइए, मुदा पति-विहीन भेला पछाइत परिवारक जवाबदेहीक भार पड़ने सामाजिक बन्धनक बढ़ोत्तरी सृजित भइये जाइए। जे जगरनाथपुर वाली भौजीकेँ सेहो भेटिये गेल छैन। ठाढ़ भेल साइकिलपर अपने ठाढ़ से उतरैक विचार करैत रही कि जगरनाथपुर वाली सोझा-सोझी लग भेली। चाइनपर छोट-छोट पसेनाक बुन टपकैत रहैन।

ओना मनमे प्रश्न घुरियाइते रहैन जे जखन पुछलैन, तखन उत्तर नइ देबैन सेहो केहेन हएत। एक तँ दीअर दोसर समाजक भाए-बोन, जँ कहीं कोनो जीवैक दोसर उपाइ करैथ वा कहैथ तँ आन गामक खटनीकेँ अपना गाम समेट आनब। जाबे गामक लोक अपन खटनीकेँ अपन गाममे पलित नइ करत ताबे कोनो गामक फलित बनब भारी तँ अछिए...।

भौजाइक रूप बनबैत जगरनाथपुर वाली बजली- "बौआ, की कहब! सबा-दू बर्खक बेटा अछि जे ने अखैन देह छोड़ि खेलाइबला अछि, आ जँ धिया-पुता संग खेलबो करत, सेहो बिना सोझमे रहने केना हएत।"

कहिते जेना जगरनाथपुर वालीकेँ अपने मन अपनाकेँ तौहीन कहए लगलैन तहिना चुप भऽ विचारए लगली। मुदा हमहूँ तँ ई बुझिये गेलौं जे जखन मनमे आगि पजैर जाइ छै तखन निच्चाँक मुहसँ खाली खोंरनीए चलबैक जरूरत होइ छइ। सएह करैत बजलौं– "एना किए, की-कहाँ कहि देलौं। नइ बुझलौं

अहाँक बात।”

हमर बात जगरनाथपुर वाली भौजीकेँ नीक लगलैन। अपन मनक धैल-घड़हरक जेते घराउ विचार रहैन से एकेबेर उझलए चाहैथ, मुदा सातटा अन्न जे एके खेतमे उपजत तखन ओकरा बेराएबो कठिन अछिए। मुदा पहिलुका बातक नाङैरकेँ नेङरबैत मुँह पकैड़ बजली- “बौआ, दू सालक बच्चाकेँ जेहन रक्षक माइक जरूरत होइ छै से..?”

पुछलिऐ- “की रक्छक?”

‘की रक्छक’ सुनि जगरनाथपुर वाली आँखि उनटबैत बजली-

“बौआ, ओहन जिनगीक फाँसमे फँसि गेल छी जे किछ करैत किछ ने बनैए।”

भौजीक बातक कोनो भाँजे ने लगल। की बाजि रहली अछि...।

ताबे बलियारिक पाँतरक एकगच्छा लग पहुँच गेल रही। पएरे-पएरे दुनू गोरे गप-सप्प करैत जिनगीक पारिवारिक रस्ता कटैत रही...।

कहलयैन- “देखू, आब रस्ता लगिचा गेल। तँए कनी-कनी सभ गप कऽ लिअ। केतए जाइ छिऐ?”

बेवसीक स्वरमे जगरनाथपुर वाली बजली- “बौआ, जहिया अहाँक भाय साहैब संग छोड़लैन तहियासँ ते अपने ऊपर ने अपन परिवारक भार पड़ि गेल।”

हूँहकारी भरैत कहलयैन- “एकरा के काटत?”

सह पेब जगरनाथपुर वाली बजली- “चिमनी भट्ठामे दुनू उखड़ाहा ईटा उघै छी।”

दू कोस पएरे चलि, आठ बजेसँ साढ़े दस बजे तक काज करैत जगरनाथपुर वाली डेढ़ घण्टा रस्ता प्रति खेप सेहो गमबै छैथ, जे चारि खेप भेल। सदिकाल मन बेटापर गड़ले रहै छैन जे देह छोड़ि एक उखड़ाहा छोड़ैबला बच्चा कहाँ अछि, खाइले बाटीमे दऽ आएल, गिलासमे पानि रखि देलक मुदा बच्चा-बच्चेक बीच ने रहत। जँ कोनो बच्चा मारबे करै आकि ठेलिये कऽ खसा दइ तँ ओइ बच्चाक कानबकेँ चुप केनिहार के हएत?

रामपुर चौकपर पहुँच गेलौं। आब दुनू गोरे दुनू दिस हएब, कहलयैन- "भौजी, एकटा बात तँ छुटिये गेल।"

पाशा बदैल गेल, एते काल हम सुननिहार छेलौं, आब ओ भेली। बजली- "की ई.. ई.?"

कहलयैन- "जखन अपना सभमे दोसर-तेसर बिआह करै-के चलैन अछि, तखन एतेटा जिनगी असगरे काटब से नीक हएत?"

हमर बात भौजीकेँ नीक नइ लगलैन। मन बिदैक गेलैन, मुँह बिहैक गेलैन आ बोली चिहैक गेलैन– "अपन पुरुखाक डीह केना उसरन कऽ देब। जाबे अपन सख-मनोरथ-तियागब नहि, ताबे बाप-पुरखाक पगड़ी केना बँचत।"

भौजीक बात सुनि अनेको जिज्ञासा मनमे जगल मुदा ओहू वेचारीकेँ अबेर होइतै आ अपनो होइत, तँए संग छोड़ैत कहलयैन- "जखन एते दूर काज करए अबै छी आ सरकार साइकिल बाँटिते अछि, अहूँ एकटा मांगि लिअ।"

हँसैत भौजी बजली- "अपन चरणबाबूक टैक्सी सदिकाल रिजरबे रहैए।" ❑

ओझरी

कान्हपर डेढ़हत्थी ठेंगामे कुशक चारिटा आँठी गौंछ कऽ टँगने सुकला काका दू बाँस फरिक्के रहैथ कि नजैर पड़ल। ओना पाँच बजे भोरेसँ जेरक-जेर लोक खुरपी-ठेंगा नेने कुश उखारए जाइतो छला आ उखाड़ि-उखाड़ि घुमितो छला। तैबीच सुकला काका सेहो रस्ते–रस्ते दच्छिनसँ उत्तर-मुहेँ बाधसँ घर दिस अबै छला। कनी फरिक्के देखि नजैर तँ हुनकेपर छल मुदा किछु बजलौं नहि।

ताबे सहैट कऽ एक बाँस आगू ओहो बढ़ला। कान्हपर कुशक भार रहैन मुदा मन तीन मासक ओझराएल काजपर छेलैन तँए मनो खुशी छलैन आ मुस्की सेहो ठोरपर छेलैन। खनहन मन खरहर डेगक संग हरियर मुँह देखि भेल जे भरिसक सिरगर कुश असानीसँ उखड़लैन तँए मन हरियाएल छैन। फेर भेल जे भरिसक धड़गर खुरपी हेतैन तँए असानीसँ कुश उखड़ल हेतैन, तेकर खुशी हेतैन। ..गुन-धुन मन करिते छल ताबे एक लग्गी लग चलि एला। ओना कुश तँ कुशे छी कियो जड़ि भिरा सिर-तिर नेने उखाड़ै छैथ तँ कियो ऊपरेसँ काटि चटाइ बनबै छैथ, उस्सरक उपजा तँ छीहे। जइ जमीनमे आन किछु ने उमझैए, ओइमे कुशे उमझैए। लग अबिते पुछलयैन- “काका, मन बड़ हरियर देखै छी केतो किछु पेलौं हेन?”

कक्काक कान्हपर कुशक भार मुदा अपन तीन मासक ओझराएल काजकेँ आरो ओझराएबपर छेलैन। ‘पबै’क नाओं सुनि जेना ठोरेपर रहैन तहिना बजला- “पएब की, ने पेलौं आ ने पाबए देलिऐ!”

काका गपक कोनो अर्थे ने लगल, किछु बुझलो रहैत तखन ने। मनमे भेल जे रस्ते-रस्ते अखन लोक चलैक ढबाहि लगल अछि, नीक हएत जे दरबज्जेपर बैस नीक जकाँ पुछि लिऐन। कहलयैन- “काका, अहाँ तँ टहलबो-बुलब छोड़ि देलिऐ। दरबज्जेपर चलू, चाहो पीब लेब आ गाम-घरक किछु गप्पो कऽ लेब।”

चाहक नाओं सुनि कक्काक मन चपचपेलैन। किएक तँ डेढ़-दू घन्टा बिलम भऽ गेल छेलैन। बजला- “चाहे नहि, पानियोँ पीबह।”

जहिना आग्रह केलिऐन तहिना एक चेकी चढ़ा ऊहो मानि गेला मुदा बीचमे एकटा उकडू काज तँ आबिए गेल। ओ ई जे पानि पीबैक की माने। खेनाइसँ लऽ कऽ छुच्छे पानि धरिक नमगर प्रश्न आबि गेल।

ततमत करिते रही कि धाँइ-दे सुकला काका बजला- “आँगनमे चाह बनबए कहि दहुन आ कलपर सँ एक लोटा पानि नेने आबह।”

सुनि मन हल्लुक भेल। अपने आँगन दिस बढ़लौं आ काका दरबज्जा परहक ओसारपर कुशक भारो आ खुरपियो रखि चौकीपर बैसला।

कलपर सँ लोटा नेने आबि आगूमे देलिऐन।

देखिते बजला- “आब की पानि पीबैक लोटो रहल, पहिने जे धिया-पुताक लोटकी छल से भऽ गेल आब लोटा!”

कहि उठा कऽ एक्के छाँकमे गट-दे पीब गेला। भेल जे भरिसक छाँक नइ पुरलैन। पुछलयैन- “एक लोटा आरो आनि दी?”

मनाही करैत बजला- “आब किए अनबह। जेतबे अनलह ओतबे पियासो छेलए। बैसह। की पुछए लगल छेलह?”

कक्काक हल्लुक मन देखि भेल जे गप करैक मूडमे आबि गेला, जँ पहिने चाहो पीआ देबैन तँ बिना कौमे-फुल स्टौपक व्याख्यान दऽ देता। कहलयैन- “पहिने चाह पीब लिअ। गप-सप्प केतौ पड़ाएल जाइ छइ।”

तैबीच आँगनसँ चाह आएल। गिलास पकड़ैत काका बजला- “आइ कुशी अमावस्या छी, अदहा भादो बीत गेल।”

कनी गुम होइत फेर बजला- “केतेक धुअल-पखाड़ल पहिलुका लोक सभ छला जे एक दिन माघ बितने नाचि कऽ बजैथ जे ‘गेल माघ उनतीस दिन बाँकी।’ कहू जे ई कोन हिसाब भेल? तीनियोँ-चौथाइसँ कम भेल। मुदा से नहि, केते हुनका सभमे अडिग बिसवास छेलैन जे जखन एक दिन माघ सन जाड़ काटि सकै छी तखन उनतीस दिन किए ने कटत!”

कक्काक बात सुनि भेल जे चाहेक ताउमे काका बहैक गेला। मनमे

कोनो प्रश्न अछि आ ओ केम्हरो बहैक गेला! मुदा बीचमे टोकबो नीक नहि। जखने रूकता तखने पुछबैन। गर अँटिते पुछलयैन- "काका, ओ जे कहलिऐ?"

जेना कक्काक नजैरसँ उतैर गेल छेलैन। बजला- "की?"

"ने अपने पेलौं आ ने पाबए देलिऐ?"

सुनिते जेना धक-दे मोन पड़लैन। बजला- "तीन मासक काज तेना ओझरा गेल जे ने अपने किछु पेलौं आ ने आने कियो पौलक।"

"से की?"

'से की' सुनिते जेना सुकला काका पसीज गेला। जहिना कोनो बच्चा वा सियानकेँ बेथित मनक बेथा कियो सुनए चाहलापर पसीज जाइत तहिना कको पसीज गेला। बजला- "तीन मासक जे ओझराएल काज छल ओकरा छोड़ि देलिऐ। जइसँ मनो हल्लूक भऽ गेल।"

कक्काक झँपाएल-तोपाएल बातक किछु अरथे ने लगल। मुदा जखन सोझहामे बैसले छैथ तखन पुछैयोक तँ अधिकार अछिए। ई नहि ने जे जे बजलौं से सुनि लिअ। दोहरा कऽ किछु ने बाजब। जँ कोनो प्रश्न उठत आ ओकर खण्डन-मण्डन नै होएत तँ ओकर रस केना निकलत। आ जाबे रस नइ निकलत ताबे कथी पीब रसिया बनि रसाएब..? पुछलयैन-

"काका, कनी फरिछा कऽ कहियौ। नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं?"

नमहर साँस छोड़ैत काका बाजए लगला-

"तीन मास पहिने रेडियो स्टेशनक एकटा अपेछित फोन केलैन जे काल्हि कथा पाठक समय भेटल से जरूर अबिऐ। अखन औगताएल छी। काल्हि बारह बजे जखन पहुँचब तखन आरो गप हेतइ।"

कहि फोन काटि देलैन। कथा लिखिते छी, बचिते छी, ओतौ जा कऽ बाचि देबइ..। मनमे कोनो बेसी लहैर नै उठल। घरमे केतेको कथा ऐछे, अपना दहीकेँ के खट्टा कहलक जे कहबै। जे मन फुरत से कथा लऽ लेब जा कऽ पढ़ि देबइ..!

रेडियो स्टेशनक नाओं सुनि काकाकेँ पुछलयैन- "पहिनो कहियो कथा-पाठ केने छेलिऐ आकि पहिल बेर छल?"

प्रश्न सुनि काका ठमैक गेला। जेना किछु पेटक बात मने ने पड़ैन तहिना किछु समय घुरियाइत बजला- “पहिल बेर छल। ओहो तँ भऽ गेल। नइ तँ देखै नै छहक जे युनिवर्सिटी होइ आकि कौलेज, सरकारी ऑफिस होइ आकि कोनो संस्था, किछु गोरेक हाथक खेलौना बनि गेल अछि। जहिना सराधक भोज बुझै छै तहिना मुड़न, उपनैन बिआहक भोज बुझै छइ।”

काकाकेँ बहकैत देखि छोर तानि पुछलयैन- “काका, रेडियो स्टेशन गेलिऐ?”

जेना एकाएक काकाक नजैर अपनापर पड़लैन। बजला- “किए ने जइतौं। जुआ पाशापर जाइकाल जहिना युधिष्ठिर कहने छला जे बजौलापर बीखो पीआ देत सेहो स्वीकार अछि। दोसर दिन सबेरे दस बजे खा-पी कऽ विदा भेलौं। दस-पनरह मिनट बारह बजेमे बाँकीए रहए, तखने पहुँच गेलौं। चिन्हा-परिचयक अपेछित छोड़ि दोसर नहि। मुदा ओहो बाटे तकैत रहैथ। पहुँचते अपना ऑफिसमे लऽ गेला। कुशल-समाचारक पछाइत कहलैन जे कथा देखए दिअ।

..नमहर कथा दसे मिनटमे केना पढ़ल जाएत। कम-सँ-कम अदहा घन्टा समय चाही। गुन-धुन करैत कहलैन जे किछु पाँतिकेँ निकालि दियौ। कथा नमहर अछि आ समय कम। ..मनमे भेल जे पुछिऐन, एकटा कथा लिखैमे जेते समय लगै छै तेतबो दिन पहिने ने जानकारी हेबाक चाही, हड़बड़ी बिआहमे तँ कनपटी सिनूर होइते छइ। मुदा मनमे तेते खुशी रहए जे सभ बात तर पड़ि गेल। कथामे सँ टोबि-टोबि किछु पाँति निकाललौं। निकालि पुन: अपेछितकेँ देलिऐन। मुदा नमहर देखि ओ अपनो निकाललैन। ताधैर कथाक रूप कुरतासँ अधकुरता आ साँचीसँ फाँड़ धरि पहुँच गेल!”

पुछलयैन- “तेकर पछाइत की भेल?”

बजला- “समय भेटल। कम्प्यूटरक आगूमे बैसलौं।”

“असगरे आकि आरो कियो?”

“एक्के घरमे दू हन्ना अछि। बीचमे शीशाक देबाल लगल छइ। देखि तँ सभ सकै छी मुदा आवाज रूकि जाइ छइ। जखन बैसलौं तखन दोसर हन्नामे

जे बैसल रहैथ ओ हाथक इशारासँ कहबोले करैथ आ चुपो होइले कहैथ। होइत-होइत बीस मिनटमे कथा बिसरजन भेल। फेर कम्प्यूटरमे काट-छाँट भेल। बीस मिनट उतैर कऽ तेरह मिनटपर अँटकल। ताधैर कथाक रूपेँ बदैल गेल! जहिना सजल-धजल देह अन्डर बीअरमे बदललासँ होइत तहिना भऽ गेल! खाएर जे भेल, नइ मामासँ कनहो मामा तँ भेल।"

पुछलयैन- "पाइयो देलक?"

जेना केते भारी अधिकार भेट गेल होनि तहिना गुम्हरैत काका बजला- "पाइ किए ने देत। मुदा तइमे की भेल से सुनह। जहिना सभ दूटा तीनटा, चारिटा अपन नाओं रखैए तहिना दूटा नाओं अपनो अछि। दूटा कागतपर दू बेर हस्ताक्षर करौलक दुनूपर दुनू नाओं लिखि देलिऐ। दू घन्टाक पछाइत जखन विदा होइपर भेलौं आकि चेक बनौनिहार कहलैन- 'अहाँक दुनू हस्ताक्षर नै मिलैए, तँए चेक नै बनल।' कहि दोसर कागत फेर देलैन। हस्ताक्षर कऽ देलिऐ। चारि बजि गेल। समय ओठर भऽ गेल। कहलैन- 'आइ चेक नहि बनि सकल। अहाँ जाउ, पठा देब!' कहलयैन- 'बड़बढ़ियाँ।' विदा भेलौं। विदा भऽ गेलौं, मुदा ओझरीकेँ जनमौने एलौं।"

एक ओझरी मेटाइत दोसर ओझरीक जनमैत सुनि जिज्ञासा भेल पुछलयैन- "से की?"

मुदा कक्को सतर्क छला। बजला- "पहिने जे कहै छिअ से सुनि लएह, नइ तँ फेर वौआ जाएब। जखने कथ्थकर वौआइत तखने सुनक्कर वा पढ़क्कर तँ वौएबे करत किने?"

कहलयैन- "हँ से तँ वौएबे करत!"

बजला- "मन तेते तमैक गेल जे हुअए अखन जँ राजा रहितौं तँ राज-पाट लूटा दैतिऐ। मुदा गाड़ी दुआरे, पाँचे साए टाका छल। किए तँ दिल्लीमे बीसे रूपैआक जरूरत होइ छै, अपना ऐठाम तँ से नहि, पान साए तकक कारोबार अछि। मुदा सेहो बिसैर गेलौं। चारि साए टका भरि दिनमे गमा देलिऐ।"

"तँ चेक पठौलैन की नहि?"

“आखिर किछु छिऐ तँ सार्वजनिक संस्था ने छिऐ। पोस्ट ऑफिसक माध्यमसँ बीस दिनक पछाइत पठौलैन। संस्थो तँ सार्वजनिके छी किने, सभकेँ अपन-अपन दायरा छइ, अधिकार छइ। बीस दिनक पछाइत एकठामसँ चेक चलल दोसर ठाम बीस दिन फेर अँटैक, बेरहटिया करए लगल। खाएर जे हौउ, मुदा हाथमे तँ एबे कएल।”

बिच्चेमे काकाकेँ पुछलयैन- “काका, तब तँ जीतलयैन?”

‘जीतब’ सुनि काकाकेँ मीरा-राधा मोन पड़लैन, एक जीतबे ने कएल दोसर हारबे ने कएल..!

मुस्की दैत बजला- “कागतेक रूपैआ बनै छै आ रूपैयो कागत बनि जाइ छइ।”

उड़नखटोला-गप सुनि चकविदोर जकाँ हुअ लगल मुदा जखन सोझहेमे छैथ तखन पुछिऐ लेब नीक हएत। पुछलयैन- “एना केना भेल?”

मचकीक आस मारि काका बजला- “चेक जखन हाथ आएल तखन भेल जे रूपैए आबि गेल। जँ दसटकही नोट दइत तँ एकथाक होइतए तइसँ नीक जे बक्सामे जगहो ने छेकत। कोनो किताबमे घोंसिया देबइ।”

कक्काक बात सुनि कहलयैन- “बैंकमे नै जमा केलिऐ?”

जेना केतौ काका हारि चुकल छला, तहिना बजला- “बौआ, की कहबह? भेल जे पराते भने जँ बैंकमे जाएब तँ सभ कहत जे देखियौ खापैड़ केते तबधल छै! तँए सात दिनक पछाइत बैंक गेलौं।”

बजलौं- “खाएर, बैंक तँ पहुँचलौं ने।”

पहुँचब सुनि बजला- “की पहुँचब दैवक कपार! भाँज लगेलौं तँ पता लगल जे पहिल पालीमे लेन-देन चलै छै, दोसरमे आन काज। एक बजे बड़का रौदामे फेर गेलौं। आठ-दस गोरेक बीच मैनेजर साहैब बैसल रहैथ। भीड़ देखि मनमे भेल जे पहिने जे एला हुनकर काज ने पहिने हेतैन। ब्रेंचपर चारि-पाँच गोरेक बीच बैसलौं। बैसल-बैसल समय ओठर भऽ गेल, उनैह गेल मुदा दरबारक भीड़ नै कमल। भीतरमे ठहाकापर ठाहाका चलैत रहइ। साढ़े चारि बजे जा कऽ मैनेजर साहैबक आगूमे चेक देलिऐन। चेक देखिते बजला, ‘बैंकमे

देखिते छिऐ जे सभ गाड़ी पकड़ए चलि गेला। असगरे छी, हमहूँ चलैए-पर छी, कहि उठि गेला।”

पुछलयैन- “तब तँ काज नै भेल हएत?”

बजला- “काज केना होइत। समैये उनैह गेलइ!”

“बैसले-बैसल उनैह गेल?”

“कहलियह से नइ बुझलहक। दरबारे ने टुटल, मुँह तकिते रहि गेलौं। दोसर दिन फेर गेलौं। समैपर चेक देलिऐन। रजिष्टर उनटा मिलौलैन तँ कहला चेके गलती भऽ गेल। खातामे किछु नाओं अछि आ चेक किछु नाओंसँ अछि। कहि चेक घुमा देलैन।”

“एना किए भेल?”

“ओहुना देखिते छहक जे दूटा-तीनटा चारिटा नाओं लोक रखिते अछि, कियो अधकट्टी तँ कियो गोल गोला, मुदा हमरा से नै भेल। गमैया नामक अधारपर भोँटर लिस्ट बनल, भोँटर लिस्टक अधारपर परिचय पत्र आ राशनकार्ड बनल। ओही अधारपर बैंकमे खाता खुजल। मुदा स्कूलक नाओं कागजे-कागजे वौआइत रहल। ओही अधारपर चेक बनल। मैनेजर साहैबसँ पुछलयैन तँ कहलैन जे एफिडेफीट लगा कऽ नाओं चढ़ि जाएत। संतोष भेल। चलि एलौं। दोसर दिन बैंकक काज छोड़ि कऽ कोर्टक काज दिस बढ़लौं। रबि रहने एक दिन ओहिना चलि गेल। दोसर दिन एफिडेफिट बनेलौं। तेसर दिन बैंकपर गेलौं तँ पता लागल जे मैनेजर साहैब सस्पेंड भऽ गेला। साते दिन नोकरी शेष छेलैन तही बीच सस्पेंड भऽ गेला। आश्चर्य भेल जे सेवा निवृत्ति होइसँ एक पनरहिया अपने कागत-पत्तर सरियबैमे लगि जाइ छइ। तखन घरमुहाँसँ बहरमुहाँ केना भऽ गेला। कैसियरसँ पुछलापर पता लगल जे इन्दिरा आवासक कमीशनमे गोल-माल भेल तँए सस्पेंड भेला। ऐगला सप्ताह धरि दोसर आबि जेता। ओ तँ पुन: घुमि कऽ नहियेँ औता किएक तँ केतबो जल्दी फरिछाएत तँ निच्चाँ-ऊपर करैत सप्ताह बीतिए जेतैन। सुनि चलि एलौं।”

पुछलयैन- “फेर की केलिऐ?”

‘फेर की केलिऐ’ सुनि काका बजला- “दोसर सप्ताह गेलौं, ता नवका

मैनेजर आबि गेल रहैथ। असगरे बैसल रहैथ, जा कऽ सभ बात कहि कागत देलिऐन। कागत देखि रखि लेलैन। परिचए-पातक गप-सप्प उठल। नीक संस्कारी परिवारक छैथ। कहलैन, ई तँ मैनेजरक अधिकारक काज छी जे उर्फ करि कऽ नाओं चढ़ा लैतैथ। अनेरे एते करैक कोन काज छेलइ! चेक देखि कहलैन जे एकर समैये समाप्त भऽ गेल।

..सुनि चोटे घुमि कऽ आबि कागतक बीच रखि देलिऐ।"

पुछलयैन- "दोहरा कऽ किए ने फेर बनबा लेलौं?"

बजला- "सौंसे रामायण पढ़ि गेलौं, सीताक पते नहि! जेते आमद हएत तइसँ केते बेसी खर्चे भऽ गेल तखन अनेरे कोन ओझरीमे फेर पड़ितौं। छोड़ि देलिऐ।" ❑

अधमरू साँपक फुफकार

दरबज्जापर सँ विदा भऽ सुमंगल सड़कपर चढ़िते छल कि दच्छिन दिशासँ अबैत सोमेश्वर पुछलक- “कतक चढ़ाइ छह सुमंगल?”

ओना, सुमंगलकेँ ई माइख नहि भेल जे यात्रापहर कियो किए टोकलक। नीक काजक फलो नीक होइते छै, तँए जँ नीक काज करए विदा भेल छी तँ नीक फल भेटबे करत, तइमे यात्रापहर टोकबाक वा नहि टोकबाक महत्ते की छइ। बिना किछु बढ़ौने-छिपौने सुमंगल बाजल- “साहित्यिक कार्यक्रम मधुबनीमे छी, ओत्तै जाइ छी।”

‘साहित्यिक कार्यक्रम’ सुनि सोमेश्वरकेँ मनमे की भेल से तँ ओ जानए मुदा गम्भीर होइत बाजल- “ऐ सभ लपौड़ीमे की पड़ै छह!”

नीक काजकेँ लपौड़ी सुनि सुमंगलक मनमे अनेको प्रश्न सुतपुतिया झिंगुनीक घोदा जे एक संग अनेको फड़ बनि उठैए तहिना उठल। मुदा समैयक सार्थकताकेँ देखैत आगू किछु ने बाजि सोझे चौकपर विदा भेल।

गामक पाँचो साहित्यप्रेमी एकठाम भऽ चौकपर सँ टेम्पू पकैड़ मधुबनीक कार्यक्रममे भाग लेबए विदा हेता जे काल्हिये विचारि नेने छला। सुमंगलक घरसँ चौकक दूरी करीब दू फर्लांग अछि। ‘अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ’ लिखल झोरा कन्हामे लटकौने, जइमे कागजो-पत्तर आ कपड़ो-लत्ता छल, सुमंगल जखन चौकमुहाँ भेल कि मनमे अनेको प्रश्न उठए लगलै। सोमेश्वर किए एहेन बात बजला जे ऐ सभ लपौड़ीमे किए पड़ै छह? जँ साहित्यिक कार्यक्रम लपौड़ी छी तँ सफलभूत काज की छी? की सोमेश्वर साहित्यकेँ नइ बुझै छैथ तँए बजला आकि बुझैत बजला? एहनो तँ होइते अछि जे जइ काजक वास्तविक रूप-गुण-फल नइ बुझैए ओइ काजकेँ ओते महत् नहि दैत ओकरा ‘लपौड़ी’ बुझैए। मुदा ऐठाम तँ से नहि अछि, संगे-संग दुनू गोरे बी.ए. पास केने छी। तखन हुनका नइ बुझैबला मानब आकि बुझनिहार मानब?

सुमंगलक ठमकैत मनमे दोसर प्रश्न उठल जे सोमेश्वर जखन गौंए छिया ते बादेमे पुछि लेबैन जे जँ साहित्यिक सेवा 'लपौड़ी' छी तँ धरम सेवा की छी..?

मुदा लगले सुमंगलक मनो आ डेगो आगू बढ़ल कि दोसर संगी– रतीशकेँ दोसर रस्ते चौकपर अबैत देखलक। अपन उपयोगी समय देखि सुमंगलक मनमे खुशी उपकल। खुशी उपकैक कारण भेलै जे पैघ (नीक) काज करैक रस्तामे जँ छोट-छीन काज–ओहन काज जे समैयक हिसाबसँ न्यून परिणाम दइए– बाधक बनि आबए तँ ओकरा नजरअन्दाज करैत टारैत-बहटारैत चली। रतीशकेँ देखिते सुमंगल बाजल- "रतीश भाय, हमरा ते होइ छल जे संगी सबहक बीच हम पछुआ गेलौं।"

घड़ी देखैत रतीश बाजल- "पछुआएब किए, समयसँ तीन मिनट अगुआएले छी। चारि बजे टेम्पू पकड़ैक विचार तय भेल अछि, अखन तीन मिनट बाँकीए अछि। भेल तँ एक मिनटक रस्ता शेष अछि तैयो दू मिनट पहिनहि टेम्पू लग पहुँचबे करब।"

ओना, सुमंगल रतीशसँ गप-सप्प करैमे अपनाकेँ बहलबए चाहै छल मुदा सौनक मेघ जकाँ करियाएल-करियाएल वादल आबि मनकेँ घेर लइ छेलइ। वादलसँ घेराइते सुमंगलक मनमे उठए लगै छेलै जे जे काजकेँ हम कल्याणकारी बुझै छी तेकरा सोमेश्वर किए लपौड़ी कहि अकल्याणकारी काज कहि सोझा-सोझी तँ नहि मुदा परोक्ष रूपेँ तँ मनाही कइये रहला अछि। ओना, सुमंगलकेँ रतीशसँ भेँट भेने, टेम्पू पकड़ैक हलतलबी आ मधुबनीक कार्यक्रम मनक वादलकेँ उड़िया-उड़िया कात करिते छेलै मुदा उमड़ैत-घुमड़ैत सोमेश्वरक विचारक करियाएल वादल सेहो बीच-बीचमे सुमंगलक मनकेँ घेर लइ छेलइ। जहिना एकदिस तीख रौद रहैए आ दोसर दिस बरखो एक्के संगे होइए, तेकरे ने लोक बानर-बनरनीक बिआहक शुभ मुहूर्त्त बुझैए, तहिना सुमंगल मनक दुनियाँमे विचार उठल जे कोनो मनुखकेँ जहिना जीवनक पैघ घटना वा मनक विचारक दुनियाँमे पैघ वैचारिक बाधा आगूमे उपस्थित होइ छै तखने ने ओ जीवन-मरणकेँ एक पाशापर रखि सोचि-विचारि बढ़ैए। मुदा चौक लग अबिते रतीश बाजल- "सुमंगल, अपने सभ अगुताएल छी, किए तँ ने सतीशे भाय आ

ने सिंहेसरे भाय आ ने सोहने भाय केतौ नजैरपर चढ़ि रहल छैथ।”

ओना, सुमंगलक मनकेँ सोमेश्वरक विचार डगमगा रहल छेलै मुदा रतीश लग ओइ विचारकेँ बाजए नहि चाहै छल। नइ बजैक कारण मनमे उठै छेलै जे अपन देही जे समस्या (जिनगीक बाधा) अछि से जेतेक बेसी अपने लुरिये-बुधिये सम्हारि सकी ओ ओतेक नीक भेल। किए केकरोसँ रीन लऽ अपन जिनगी सम्हारब। ओना, रीन लेब आ रीन देब दुनू दू विचार छी, मुदा रीनदाता तँ तखने ने उठि कऽ ठाढ़ होइए जखन रीनखाता भेटै छइ। खाएर जे छै ओ रीनदाता-रीनखाता जानए, सुमंगलकेँ ओइसँ कोन मतलब छइ। सुमंगल बाजल-

“रतीश भाय, भोजक आगू आ रणक पाछू रहब काबील लोकक काज होइए, अपना सभ ते सहजे बुड़िबक छीहे, तखन चिन्ते कथीक।”

सुमंगलक विचार रतीश सुनिते बाजल- “अपना सभ कि बुड़िबक आइसँ छी, तहियेसँ छी जहियाकेँ नइ बुझै छी।”

रतीशक बात सुमंगल नीक जकाँ नहि बुझि पेलक। बुझबो केना करैत, सोमेश्वरक विचार आबि-आबि मनकेँ घेर लइ जइसँ बुधि विचलित भऽ जाइ। बाजल-

“रतीश भाय, मन दोसर दिस चलि गेल छल तँए नीक जकाँ नइ बुझलौं।”

रतीश बाजल- “सुमंगल, अखन अपनो मन तिखाएले अछि। तँए पहिने चाहक दोकानपर चलह। चाहो पीब आ गपो-सप्प करब।”

सुमंगल- “रतीश भाय, हम तँ बेरुका चाह पीब नेने छी तँए अखन चाह पीबैक मन नइ अछि। अहाँ पीने आउ, हम एतै बैसै छी। जँ कियो एबो करता तँ कहबैन रतीश भाय, चाहक दोकानमे छैथ।”

‘बेरुका चाह’ सुनिते रतीश खौंतियाइत बाजल- “सुमंगल, की कहबह मौगी सबहक हाल, पुरुखक एकसाए गपकेँ ओ एकटा गनैए। दुइये बजेसँ घरवालीकेँ कहैत एलिऐन जे मधुबनी जाएब अछि। चारि बजेसँ पहिने चौकपर पहुँचब अछि, तँए समयपर चाह पियाएब।”

सुमंगल बाजल- “तैबीच मे की भेल?”

रतीश बाजल- “भेल की! जे हेबाक छल से भेल। अनहोनीकेँ कियो रोकि सकैए।”

सुमंगल- “भाय, मधुबनी जखन पहुँचब तखन अलंकार झाड़ब, अखन गमैया गप कहू ने।”

रतीश- “मुँह बीजका-बीजका पत्नी टोकारा दइ छेली जे जखन रणभूमिमे जा रहल छी तखन जँ हम सिंगार-पेटार कऽके नहि अरियाति विदा करब से अहीं कहू जे उचित हएत?”

रतीशक संग सुमंगल ऐ दुआरे बेसी गपकेँ नहि नमराबए चाहै छल जे तरेतर सोमेश्वरक बदरियाएल विचारक वादल उमैड़-उमैड़ मनकेँ घेरए लगै छेलै। जइसँ एकान्त चाहै छल।

संजोग बनल, समैयक खियाल करैत रतीश असगरे चाह पीबए चाहक दोकानपर गेल। एकान्त होइते सुमंगलक मन महान दार्शनिक सिसरो लग पहुँच गेल। हमरे सन परिवारमे ने हुनको जन्म भेल छेलैन..!

सुमंगल आगू दिस अखियास कइये रहल छल कि कन्हामे झोरा लटकौने सतीश सुमंगलकेँ पाछुएसँ दुनू कन्हापर अनचोकेमे हाथ देलक। कन्हापर हाथ पड़िते सुमंगल चौंक उठल। पाछू उनैट तकलक तँ सतीशकेँ देखि मुस्की मारि बाजल- “आब अपना सभ तीन गोरे भेलौं।”

रतीशकेँ सतीश नहि देखने छल, बाजल- “सुमंगल, दू-सँ-तीन तँ होइए मुदा तीनसँ दू केना हएत?”

एक तँ सुमंगलक मन अपने सोमेश्वरक विचारक बोनमे औना रहल छेलै तैपर सँ सतीश सेहो दोसर बोन आगूमे रोपि देलकै। दोसर बोनक माने भेल दू-सँ-तीन हएब आ तीनसँ दू हएब। एक-दूक पछाइत तीन होइए मुदा तीनमे जखन किछु ने घटाएले गेल तखन दू केना भेल?

एक तँ ओहुना मनमे बाढ़ि एने धारेक पानि जकाँ मनो उधिया लगैए तखुनका बात-विचार आ जखन धारक मरनासन रूपमे पानि पताल धेने रहैए तखुनका बात-विचारमे विपरीत अन्तर आबिये जाइए। तहिना सतीशक बात

सुनि सुमंगलकेँ भेल मुदा गाड़ीक इमरजेंसी ब्रेक जकाँ अपना मनमे लगबैत सुमंगल बाजल- "रतीश भाय, चाह पीबै गेल छैथ?"

चाहक नाओं सुनि सतीश बाजल- "तखन हमहूँ चाह पीने अबै छी?"

"किए, घरपर सँ चाह पीब नइ आएल छी?"

सुमंगलक प्रश्न सुनि सतीशक मन धारक उधियाएल पानि जकाँ उधैक उठल। बाजल- "अधजीबू चाह कहियौ कि अधमरू चाह पत्नी पीऔने छेली। तँए मन नइ भरल अछि।"

'अधजीबू-अधमरू चाह' सुनि सुमंगलक मनमे पहाड़ जकाँ फेर नव प्रश्न आगूमे ठाढ़ भऽ गेल। की भेल अधजीबू चाह आ की भेल अधमरू चाह..?

मुदा रच्छ रहल जे सतीश बजैत-बजैत चाहक दोकान दिस बढ़ि गेल। तँए सुमंगलकेँ सतीशक बातकेँ औंटै-पौड़ैक खगते खतम भेल। सतीशकेँ लगसँ हटने सुमंगलक मन थीर तँ भेल मुदा जेहेन बोनमे विचार फँसि गेल छेलै जे अनभुआर जकाँ ने किछु देखि पबै छल आ आ ने चीन्हे पबै छल। जइसँ मन चारूकात औना अबै मुदा ने किछु देखैमे अबै आ ने चीन्हैमे, संजोग बनल जे चाह पीब रतीशो आ सतीशो पहुँच गेल। दुनूक मन फुलाएल रहबे करइ। अबिते सतीश बाजल- "घरवालीक जोड़ा भगवान केकरो लगौलैन, जँ इमनदारीसँ लगौलैन तँ नीक लगौलैन आ जँ बेइमानीसँ लगौलैन तँ अधला लगौलैन, मुदा हमरा की लगौलैन से दसम बरीस बीत रहल अछि बिआहक मुदा अखन तक गरथाहेमे छी।"

अपन मनक विकार (माने सोमेश्वरक विचार) सुमंगलकेँ दबि चुकल छल, मुदा बीच-बीचमे जे कनी-मनी हरियरीक टुस्सी अबै छेलै ओही टुसियाएल हरियरी पेब सुमंगल बाजल- "सतीश भाय, रूपैआकेँ लोक उनटा-पुनटा कऽ देखि परखैए मुदा लोककेँ लोक जेतए एक्के नजैरमे परेख जाइए तेतए अहाँ दसो बरिसमे नइ परेख पेलौं?"

सतीशक मनमे जेना प्रश्नक उत्तर पहिनहिसँ तैयार रहल होइ तहिना बाजल- "सुमंगल, उनटा-पुनटा कऽ जे लोक रूपैआकेँ देखैए ओ रूपैआक चालि-ढालि परेख लइए जे चलैबला अछि आकि जलिया अछि। मुदा लोककेँ परखब ओत्ते असान अछि जे एक्के नजैरमे परेख लेत।"

जिज्ञासासँ सुमंगल बाजल- "से की भाय?"

जेना अपन मनक भरास निकालैक अवसर सतीशकेँ भेट गेल होइ तेहने मन बनि गेल छेलइ। बाजल- "सुमंगल, रूपैआकेँ आड़ि-धुर अछि तँए सुचलिया-कुचलिया दुनू रूपैआकेँ परखब असान अछि, मुदा लोक तँ लोक छी, ने सींग छै आ ने नाँगैर। झड़ाह लोक अछि की फड़ाह अछि से परिखब ओते असान अछि जे एक्के नजैरमे परेख लेब।"

सतीशक बात सुनि सुमंगल मने-मन विचारलक जे अखन सतीशक विचार चढ़ाउ अछि आ अपन विचारक मन उतराउ अछि तँए विचार समतल नइ भऽ सकैए। अनेरे किए बातकेँ बतंगर बनाएब। सोझे मुहेँ किए ने बाजब। मनकेँ थीर करैत सुमंगल बाजल- "भाय, अखन धरि नहि बुझि पेलौं जे अधजीबू चाह की कहलिऐ आ अधमरू चाह की कहलिऐ?"

सतीशकेँ उत्तर दइसँ पहिने रतीश घड़ी देखि नेने छल। चारि बाजि दू मिनट भऽ गेल छेलै, बिच्चेमे बाजल- "सतीश भाय, चारिसँ ऊपर समय चढ़ि रहल अछि मुदा अखन तक ने सिंहेश्वरे भाय आ ने सोहने भाय पहुँचला अछि।"

समय अगुऐने मोबाइलिक सुविधा भइये गेल अछि। सतीश सोहनसँ सम्पर्क करैत बाजल- "भाय, केतए छी?"

ओना, सोहन समय बनबैकाल अपनो छेला मुदा कोनो समय, समय देखि सेहो बनौल जाइए आ काजक क्रमक अनुसार सेहो बनौले जाइए। सोहन अपन पूर्व निर्धारित काज–बैंकक काज–केलाक पछातिक नम्बर मधुबनी जेबाक काजक क्रम बनौने छला। तँए पछुआएल छला। जीरो बैलेंसमे खाता खुजैक धुमसाही रहने सोहनकेँ बैंकमे देरी भऽ गेलैन। संजोग एहेन जे नहेबो ने केने छला। चारि बजे घरपर पहुँचले छला। अबिते पहिने नहा कऽ चाह पीलैन आ मधुबनी जेबाक तैयारीमे जुटि गेला। सतीशकेँ कहलैन जे अहाँ मधुबनी फोन कऽ कहि दियौन जे हम सभ विदा भऽ चुकल छी, आधा-पौन घन्टामे पहुँच रहल छी। हुनको सभकेँ जँ बेवस्था करैमे किछु भाँगठ हेतैन सेहो तैबीचमे कऽ लेता।

सबा चारि बजे सिंहेसरक संग सोहन चौकपर पहुँचला। चौकपर अबिते टेम्पूबला तैयार भेल। सुमंगलक चिन्तित मन रहने कनी मन्हुआएल रहबे करए।

तैबीच सभ कियो टेम्पूमे बैसला। सुमंगलकेँ खसल मन देखि सोहन बजला-

"सुमंगल, तोहर मन किए खसल छह?"

सोहनक प्रश्न सुनि सुमंगलक मनमे विचारक द्वन्द्व शुरू भेल। विचारक द्वन्द्व ई जे अखन तक सुमंगल सोमेश्वरक विचारकेँ बेकतीगत बुझि बाजए नै चाहै छल मुदा विचारमे बदलाव आबि रहल छेलै जे जखन सोमेश्वर साहित्यिक क्रियाकेँ 'लपौड़ी' बुझि बाजल तखन ओ प्रश्न हमरेटा तँ नहि भेल, भेल तँ सबहक भेल। तँए सभ लग बजैमे संकोचे की...। बाजल- "सोहन भाय, सोमेश्वर कहलक जे कोन लपौड़ीमे पड़ल छह!"

सोहन मने-मन विचारिये रहल छला जे एहेन प्रश्न तँ वैचारिक मनक भेल। तइ बिच्चेमे रतीश टपैक पड़ल- "सोमेसरा की बाजत! चोरी कऽ कऽ बी.ए. पास केने अछि, अपने जकाँ सभकेँ बुझै छइ..!"

रतीशक बात सुनि सोहन बजला- "रतीश, उकटा-पैंचीसँ कन्द-मूल तक नइ पहुँच पेबह। हम सभ साहित्यसँ जुड़ल छी, तँए औगतेने नइ हएत।"

सोहनक बातकेँ दबैत रतीश बाजल- "भाय साहैब, अहाँ गैयाह लोक छी, तँए मारियो-गारि सुनि मनकेँ असथिर रखने रहै छी। मुदा अहीं कहू जे जे प्रश्न आगूमे औत तेकरा उत्तर तखने देब नीक कि रहि-सहि कऽ?"

सोहन बुझि रहल छैथ जे ई तँ नजैर-नजैरिक खेल छी। अपना जगहपर रतीशो सहिये अछि मुदा जगह-जगहमे सेहो अन्तर अछिए। जगहो तँ जगह छी जे केतौ मग्गह बनल अछि तँ केतौ बग्गह आ केतौ अग्गह सेहो अछिए। रतीशक विचारकेँ रोकैत सुमंगल बाजल- "रतीश भाय, अहूँक विचार प्रश्ने भेल। मुदा पहिलुक नम्बर हमर प्रश्नक अछि। मानि लेलौं जे अहाँ अपन विचार अगुरवारे दऽ देलिऐ।"

टेम्पूमे पाँचो गोरे, अपन-अपन जगह ठिकिया-ठिकिया बैस गेला। बैस तँ सभ गेल छला मुदा ड्राइवर पान-पराग-शिखर लेब बिसैर गेल छल। सएह अनैले दोकान चलि गेल छल। ओना, ड्राइवर भोरे–गाड़ी चलबैसँ पहिनहि शिखर-पराग भरि दिनक डेढ़ दर्जन एक्के बेर कीन लइए मुदा आइ ओकर कोनो आन ड्राइवर झंझारपुरमे चाह पीबैकाल निकालि नेने छेलइ। मधुबनी जाइसँ पहिने जखन अपन खर्चाक मुँह-मिलानी करए लगल तखन ने पान-

पराग देखलक आ ने शिखर। मुदा कियो चोरा लेलक तइ दिस ड्राइवरक नजैर नइ गेल, अपने दिस अँटकल रहल। मन मानि नेने छेलै जे भरिसक केतौ जरकीन-तरकीनमे खसि पड़ल। एक तँ ओहुना भरि दिन निमहिये गेल छी। चारि-पाँच पुड़ियासँ काज चलि जाएत। टेम्पूमे बैसल चारू गोरेक बीच सुमंगल आ सोमेश्वरक बीच भेल बात तेना झंझ-मंझमे ओझरा गेल जे सुमंगलक बात सोहनक मनमे धकिया-धुकिया गेलैन जइसँ प्रश्नक रूपे-रेखा बदैल गेल, तँए प्रश्नकेँ पुन: सोझरबैक खियालसँ सोहन बजला- "सुमंगल फेरसँ अपन बात बाजह?"

सुमंगल बाजल- "जखन घरपर सँ मधुबनी-ले विदा भेलौं कि दच्छिन दिससँ सोमेश्वर अबै छल। ओ पुछलक जे केतए जाइ छह? हम कहलिऐ जे मधुबनीमे साहित्यिक कार्यक्रम छी, ओतै जाइ छी। जैपर ओ कहलक- कोन लपौड़ीमे पड़ल छह।"

सुमंगल मुहसँ सुनल बातक गहींरता दिस सोहन तकलैन तँ उत्तर देब नमहर बुझि पड़लैन। अखन रस्ता चढ़ल कार्यक्रममे जा रहल छी, ओहू सम्बन्धमे विचार करैक अछि। तैठाम जँ अपन गमैये गीतमे गति गमा देब से नीक नहि। अखन जइ रणमे जा रहल छी, तेकर रणकौशल की हएत, मूल प्रश्न अछि। तँए कम-सँ-कम शब्दमे अपन प्रश्नक उत्तर देब अछि जइसँ समय बचत तँ आगूक विचार करब।

सोहन बजला- "सुमंगल, अपना समाजसँ जमीन्दारी प्रथाक मालगुजारी जमीन्दारसँ ससैर सरकारक हाथ गेल। जमीन जे छल ओ राय-छित्ती भेल। मुदा विचारक जे रस्ता छल ओ अखनो जीवित अछि, तही आधारपर तोरा सोमेश्वर एहेन बात कहलखुन, तँए बेसी चिन्ताक विषय नइ भेल। एकरा अधमरू साँपक फुफकार जकाँ फुफकार बुझह।"

बिच्चेमे सतीश बाजल- "सोमेसरा मर्द अछि ते चारि आखर लिखि कऽ देखा दिअ!" ❑

डीहक बटबारा

अमानतक दिन। चारि बजे भोरेसँ पुड़ी-जिलेबी-तरकारी इत्यादिक सुगन्ध गामक हवामे पसैर गेल। सौंसे गामक लोककेँ बुझले तँए केकरो सुगन्धसँ आश्चर्ज नहि। भोरे श्रीकान्तो आ मुकुन्दोक पत्नी फूल तोड़ि नहा-सोना कऽ बरहम स्थान पूजा करए गेली।

हलुआइ दू-चुल्हियापर तरकारियो बनबैत आ जिलेबियो छनैत। कुरसीपर बैसल श्रीकान्त मने-मन बरहम बाबाक कबुला केलैन जे जँ हमरा मनोनुकूल नापी भेल तँ जोड़ा छागर चढ़ेबह। तहिना मुकुन्दो बरहम बाबाकेँ छागर कबुललैन।

गामक सुगन्धित हवामे सबहक मन उधियाइत। चाह बनबैबला चाह बनबैमे आ पान लगबैबला पानमे व्यस्त। दुनू दिस कट्ठा-कट्ठा भरिक टेन्ट लगल, दड़ी आ जाजीम बिछौल। एक भागमे गाँजा पीनिहारक बैसार आ दोसर भागमे दारूक। जहिना बुचाइ कुदि कऽ कखनो हलुआइ लग जा देखैत तँ कखनो दारूबलाक बैसारमे जा दू-गिलास चढ़ा लैत, तहिना सरूपो।

सभ कथूक ओरियान काल्हिए दुनू गोरे दुनू दिस कऽ नेने तँए अनतए जाइक जरूरते नहि। चाह-पानक इत्ता नहि। जेकरा जेते मन हुअए से तेतै खाउ-पीबू। जलखैमे पुड़ी-जिलेबी-डलना आ कलौमे खस्सीक मौस आ तुलसीफुलक भात। तँए भरि दिनक चिन्ता सबहक मनसँ पड़ाएल। जीविलाह सभ दुनू दिस टहैल-टहैल खाइत-पिबैत।

श्रीकान्तो आ मुकुन्दो इंजीनियर। दुनू एक्के वंशक। दुनूक परदादा सहोदरे भाए। पाँच कट्ठाक घराड़ी, जइमे दुनू गोरेक अदहा-अदहा हिस्सा। जहियेसँ दुनू गोरे नोकरी शुरू केलैन, तहियेसँ गाम छोड़ि देलैन। एक-पुरखिया वंश तँए परिवारमे दोसर नहि। पैंतीस सालक नोकरीक बीच कहियो दुनूमे कियो गाम नै एला। जइसँ पिताक बनौल घर दुनूक खसि पड़लैन। गामक

स्त्रीगण सभ ठाठ-कोरो-धरैनकेँ उजाड़ि-उजाड़ि जरा लेलक आ ढिमका-ढिमकीकेँ सेरिया गामक छौड़ा सभ फील्ड बना लेलक। गामक जेते खेलौड़िआ छौड़ा सभ छल ओ सभ अपन-अपन खेलक जगह बाँटि लेलक। एकटा फील्ड कबड्डीक, दोसर गुड़ी-गुड़ीक, तेसर चिक्का-चिक्काक, चारिम गुल्ली-डण्टाक आ पाँचम रूमाल चोरक बनि गेल। उकट्ठी छौड़ा सभ एक दोसराक फील्डमे राता-राती झाड़ा फीर दइ। मुदा खेल शुरू करैसँ पहिने दस-बीसटा गारि पढ़ि सभ अपन-अपन फील्ड चिक्कन बना लिअए। ओना, दुनू गोरे–श्रीकान्तो आ मुकुन्दो–बाहरे घर बना नेने छैथ मुदा मरै बेरमे दुनूकेँ गाम मोन पड़लैन। साले भरिक नोकरी दुनूक बाँचल तँए तीन मासक छुट्टी लऽ लऽ गाम एला अछि। गाम अबैसँ पहिने दुनू गोरे फोनक माध्यमसँ अबैक दिन निर्धारित कऽ नेने छला। किएक तँ परोछा-परोछी नापी करौलासँ आगू झंझटक डर दुनूक मनमे रहैन।

घराड़ी नापी होइसँ दस दिन पहिनहि श्रीकान्त गाम एला। अपना तँ घरो नहि, मुदा अबै काल एकटा रौटी आ सुतै-बैसैक समानक संग भानसो करैक सभ किछु नेने एला। गाम आबि पितियौत भाएकेँ कहि सभ बेवस्था केलैन। सभ गर लगला पछाइत भाएकेँ पुछलखिन- “बौआ, गाममे के सभ मुँह-पुरखी करैए?”

भाए कहलकैन- “गाममे तँ कियो राजनीति नहियेँ करैए मुदा बुचाइ आ सरूप सभ धन्धा करैए।”

“की सभ धन्धा?”

“जेना कियो खेत किनैए वा बेचैए तैबीचमे पड़ि किछु कमा लइए। तहिना गाइयो-महींसमे करैए तँसंग भौँट-भाँटसँ लऽ कऽ कथा-कुटुमैती धरिमे सेहो किछु-ने-किछु हाथ मारिए लइए।”

भाएक बात सुनि इंजीनियर साहैब कनी काल गुम्म भऽ गेला। मने-मन सोचि-विचारि कऽ बजला- “कनी बुचाइकेँ बजौने आबह?”

“बड़बढ़ियाँ”

कहि भाए बुचाइकेँ बजबए विदा भेल। मने-मन श्रीकान्त सोचए लगला जे गाममे तँ सबहक हालत तेनाहे सन अछि। देखै छिऐ जे जेहने घर-दुआर छै

तेहने बगए बानि। दू चारिटा जे ईंटो घर देखै छिऐ सेहो भितघरे जकाँ। तँए गाममे ओहेन घर बना कऽ देखा देबै जे गामक कोन बात, परोपट्टाक लोक देखए औत। पुरान लोक सबहक कहब छैन जे जेहेन हवा बहै ओइ अनुकूल चली। जुग पाइक अछि, जेकरा पाइ रहतै ओ बुधियार आ जेकरा पाइ नइ रहतै ओ किछु नहि। असगर बरसपैतो फुसि। जेकरा पाइ छै वएह नीक घर बनबैए, नीक गाड़ीमे चढ़ैए, ओकरे धिया-पुता नीक स्कूल-कौलेजमे पढ़ैए आ ओकरे परिवारक लोक नीक लत्ता-कपड़ा पहिरैए आ तैसंग बेटा-बेटीक बिआह नीक परिवारमे होइ छइ। तेतबे नहि, आइक जे सुख-सुविधा विज्ञान करौलकहेँ ओकरो सुख भोगैए...। यएह ने जुगक संग चलब छी। समाजक बीच प्रतिष्ठा बनाएब तँ बामा हाथक काज अछि। अधलासँ अधला काज करि कऽ पाइ कमा लिअ आ समाजकेँ भोज खुआ दियौ, बस जशे-जश, प्रतिष्ठे-प्रतिष्ठा। हाथमे पाइ ऐछे, सभ किछु गौंआकेँ देखा देबइ। बेटो-बेटीकेँ पढ़ा-लिखा, बिआह-दुरागमन करा कऽ निचेने छी। तहन तँ एकटा काज मात्र पछुआएल अछि, सामाजिक प्रतिष्ठा। सेहो बनाइए लेब।

मने-मन श्रीकान्त विचारिते रहैथ कि बुचाइक संग भाए पहुँचलैन। लगमे अबिते बुचाइ दुनू हाथ जोड़ि बाजल- “गोड़ लगै छी काका। अहाँ तँ गामकेँ बिसैर गेलिऐ। सरकारक एयर कण्डीशन मकान भेटले अछि तहन कथीले थाल-कादोमे आबि मच्छर कटाएब?”

अपनाकेँ छिपबैत श्रीकान्त बजला- “नै बौआ, से बात नइ अछि। जखने नोकरीक जिनगी शुरू केलौं तखने दोसराक गुलाम बनि गेलौं। जे-जे हुकुम देत से से करए पड़त। तूँ सभ कम उमेरक छह तँए नइ देखलहक, मुदा हम तँ अंग्रेजक शासन देखने छी किने। शासन तरे-तर चलै छै, जे सभ थोड़े बुझैए। अंग्रेजक पीठपोहू छल ऐठामक राजा-रजबार आ ओकरा सबहक फाँड़ी छी जमीनदार सभ। ओ सभ जे ऐठामक लोकक संग बेवहार करै छल आ करैए से तँ तहूँ सभ देखिते छहक। मुदा ऐ सभ गपकेँ छोड़ह। तोरा जे बजौलियह से सुनह। साले भरि आब नोकरी अछि। नोकरी समाप्त भेला पछाइत गामेमे रहब। तँए तीन मासक छुट्टी लऽ कऽ एलौं हेन जे घराड़ीक अमानत करा घर बनाएब। बिनु घरे रहब केतए।”

बुचाइ- “हँ, ई तँ जरूरीए अछि, मुदा हमरा किए बजेलौं?”

पासा बदलैत श्रीकान्त बजला- “मुकुन्दजीकेँ सेहो खबैर दऽ देने छिऐन। ओहो काल्हिसँ परसू धरि एबे करता। ऐठाम तँ दुइए गोरेक घराड़ी अछि, तँए दुनू गोरेक रहब जरूरी अछि। तोरा तँ नइ बुझल हेतह, हमर परबाबा आ मुकुन्दक परबाबा सहोदरे छला। अढ़ाइ-अढ़ाइ कट्ठाक हिस्सा जमीन दुनू गोरेकेँ अछि। तँए कोनो पेंच लगाबह जे हमरा तीन कट्ठा हुअए।”

श्रीकान्तक पेटक मोलि बुचाइ देखि गेल। मुस्कियाइत बाजल- “एँह, अहीले अहाँ एते चिन्तित छी। ई तँ बामा हाथक काज अछि। अमीनकेँ मिला लेब, सभ काज भऽ जाएत। किएक तँ अमीनक गुनियाँ-परकालमे पाँच-दस धूर जमीन नुकाएले रहै छइ। मुदा अइले खरचा करए पड़त। हम तँ जोगारे ने बैसाएब, खर्च तँ अहींकेँ करए पड़त।”

पाइक गरमी श्रीकान्तकेँ रहबे करैन। मनमे ईहो बात रहैन जे भलेँ मुकुन्दो इंजीनियर छैथ, दुनू गोरेक दरमहो एक्के रंग अछि मुदा पाइमे बरबैर कऽ लेता, से केना हेतैन। मुस्कियाइत श्रीकान्त बजला- “बुचाइ, तोहर मेहनत आ हम्मर पाइ। सएह ने। जेते खर्च हएत, हएत। मुदा मैदानसँ जीति कऽ अबैक छह।”

श्रीकान्तक बात सुनि बुचाइ मने-मन खुश भेल। मनमे एलै, नीक मोकिर हाथ लागल। भरिसक राशि घुमल हेँ। ओह! बहुत दिनसँ अखबारो ने पढ़लौं जे कनी राशि देखि लैतिऐ। खाएर.., नहियोँ पढ़लौं तैयो शुभ बुझि पड़ैए। जोशमे बुचाइ बाजल- “काका, रूपैआ-पुत पहाड़ तोड़ैए। ई तँ मात्र अमानते छी, जे चाहबै से हेतइ। खाली अहाँ कंजूसी नै करबै।”

कंजूसीक नाओं सुनि श्रीकान्त बजला- “मरदक बात छिऐ। जे बाजि देब ओ बिनु पुरौने छोड़ब।”

बैगसँ पाँच हजार रूपैआ निकालि श्रीकान्त बुचाइकेँ देलखिन। रूपैआ जेबीमे रखि बुचाइ प्रणाम कऽ विदा भेल।

गामक पेंच-पाँचमे बुचाइ माहिर मुदा समाजमे अनुचित हुअए, से कखनो नइ सोचए। जहिया कहियो कोनो उकडू काज अबै तँ गुरु काकासँ पुछि लइत। ..बुचाइ मने-मन रस्तामे सोचए लगल जे ऐ बेर हिनका तेहेन सिखान सिखेबैन

जे मरै काल तक मन रहतैन। सरकारी खजानासँ लऽ कऽ ठीकेदार धरिसँ झिटलाहा रूपैआ केहेन होइ छै, से सिखता।

आँगन पहुँच बुचाइ चारि हजार पत्नीक हाथमे आ एक हजार अपना हाथमे रखलक। जहिना अगहनमे धानक ढेरी देखि, दुनू परानी किसानक मन खुशीसँ गदगदा जाइत तहिना दुनू परानी बुचाइकेँ भेल। मुदा दुनूक खुशीमे अन्तर होइए। किसानक खुशी मेहनतक फल देखि होइत जखन कि बुचाइक खुशी दलालीक। ..मुस्की दैत बुचाइ घरवालीकेँ कहलक- "खिड़कीपर एकटा शीशी अछि, नेने आउ?"

मुँह चमकबैत घरवाली बाजल- "खाइ-पीबै रातिमे शीशी की करब?"

बुचाइ- "शीशियो नेने आउ आ खेनाइयो नेने आउ। दुनू संगे चलतै। जाबे भरि मन पीअब नइ ताबे मूड नै बनत। बहुत बात सोचैक अछि। अहाँ नहि ने हमर बात बुझबै?"

पत्नी- "अहाँक बात बुझैक जरूरत हमरा कोन अछि। हमरा तँ अपने मन केनादन करैए, देह भँसियाइए।"

"अच्छा ठीक अछि, अहूँ दू घोंट पीब लेब।"

भोरे बुचाइ चौकपर पहुँचल। गामक बीचमे चौबट्टी। जइ चौबट्टीपर चारू-भरसँ तीस-पैंतीसटा छोट-छोट दोकान। दस-बारहटा दू-चारी घर, बाँकी कठघारा। ओना, एक्कोटा नमहर दोकान नहि, मुदा सभ कथुक दोकान। जइसँ गामक लोककेँ हाट-बजार जाइक जरूरत कम पड़ैत। जहिया कहियो कोनो परिवारमे नमहर काज जेना बिआह, सराध इत्यादि होइत तखने बजार जाइक खगता पड़ैत। ओना, भरि दिन चौकक दोकान खुजल रहैत मुदा गहिंकीक भीड़ साँझे-भिनसर होइत। भरि दिन लोक अपन-अपन काज-उदेम करैत आ साँझू-पहरमे दोकानक काज कऽ लइत। खाली चाहे-पानक बिकरी भिनसरु-पहरमे बेसी होइत।

चौकपर पहुँच बुचाइ दुनू चाहबलाकेँ एक-एक साए रूपैआ दऽ दोकानपर बैसल आ सभकेँ चाह पीअबैले कहलक। ..गाँजा पिआकक सेहो तीन ग्रुप चलैत। चाह पीब पान खा बुचाइ चिलमक ग्रुपमे पहुँच, दू दम लगा, तीनू ग्रुपमे पचास-पचास रूपैआ गाँजा-ले दऽ देलक। सबहक मन खुशी भऽ गेलइ।

मुस्कियाइत बुचाइ अमीन ऐठाम विदा भेल।

गाममे तीनटा अमीन। रामचन्द्र, खुशीलाल आ किसुनदेव। कहैले तँ तीनू अमीने मुदा पढ़ि कऽ अमीन रामचन्द्रेटा भेल। ..मिडिल पास केलाक पछाइत रामचन्द्र हाइ स्कूलमे नाओं नै लिखा सकल। आब तँ लगेमे हाइ स्कूल खुगि गेल छै, मुदा ओइ समयमे एक्कोटा हाइ स्कूल परोपट्टामे नै छल, जइसँ रामचन्द्र आगू नै पढ़ि सकल। बाहर पठा बेटा पढ़बैक ओकाइत रामचन्द्रक पिताकेँ नहि। सर्वे अबैसँ दस-पनरह बरख पहिने मुजफ्फरपुरक एकटा अमीन गाममे आबि अमानतक स्कूल खोललक। छह मासक कोर्स। चारि विषयक-पैमाइस, क्षेत्रमिति, कानून आ चकबन्दीक-पढ़ाइ। ओना, समानो सभ जेना-गुनियाँ, परकाल, मास्टर, स्केल, लेन्स, राइटऐंगिल, प्लेन, टेबुल, कंघी, टाँक, थ्याजो रैटर, जंजीर, फीता इत्यादि रखने। पाँच रूपैआ महिना फीस लइत। मधुकान्तक दरबज्जेपर स्कूल खोललक। मधुकान्ते खैयोले दइ। जेकरा बदलामे मधुकान्तकेँ सेहो पढ़ा देलक। ओना, गामोक आ गामक चारू-भरक गामक विद्यार्थी सेहो पढ़लक। कुल मिला कऽ पनरह गोरे पढ़लक। मुदा जमीनक नापी-जोखी कम होइत, तँए रामचन्द्र छोड़ि सभ अमीनी छोड़ि देलक।

सर्वे अबैसँ महिना दिन पूर्व बेगूसरायक एक गोरे आबि पँच-पँच साएमे अमानतक सर्टिफिकेट बेचए लगल। ओकरेसँ खुशीलालो आ किसुनदेवो सर्टिफिकेट कीनि लेलक। गामे-गाम सर्वे शुरू भेल। अमीन सबहक चलती आएल। नक्शा बनब शुरू होइते दलाली शुरू भेल। पाइ दऽ दऽ लोक अपन-अपन खेतक नक्शा बढ़बए लगल। लोकक दलाल अमीन आ सरकारक सर्वेयर। खुशीलालो आ किसुनदेवो उठि बैसल। मुदा रामचन्द्र कात रहल। गाए-महींस, गाछ-बिरीछ बेच-बेच लोक रूपैआ बुकए लगल। रामचन्द्र दबि गेल मुदा खुशीलाल आ किसुनदेव, नाओं कमा लेलक। जेमहर निकलैत तेमहर लोक सभ चाहो-पान करबै आ 'अमीन साहैब', 'अमीन साहैब' कहि परनामो करइ। दुनू गोरे सर्वेक नाँगैर पकैड़ किस्तवारसँ लऽ कऽ तसदीक खानापुरी, दफा-3, दफा-6,8,9 धरि दौग-बड़हा करैत रहल। जइसँ मोटर साइकिल मेण्टेन करए लगल।

खुशीलाल ऐठाम पहुँच बुचाइ श्रीकान्त दिससँ नापीक अमीन मुकर्रर कऽ

लेलक। नापीक फीसक अतिरिक्त पक्ष लइक फीस सेहो गछि लेलक।

दोसर दिन मुकुन्दजी सेहो गाम पहुँचला। बाहरेसँ रहैक सभ ओरियान केने एला। गाम अबिते दूटा जन रखि परती छिलबा रौटी ठाढ़ करौलैन। जखन जन जाए लगल तँ मुकुन्द पुछलखिन- “गाममे के सभ नेतागीरी करैए?”

मुकुन्दजीक बात सुनि एक गोरे बुचाइक नाओं कहलकैन। बुचाइक नाओं सुनि मुकुन्द बजा आनैले कहलखिन। दुनू गोरे विदा भेल। दुनू कोदारि लऽ एक गोरे घरपर गेल आ दोसर गोरे बुचाइ ऐठाम। तैबीच मुकुन्दजी पत्नीकेँ कहलखिन- “कनी चाह बनाउ?

पत्नी चाह बनबैक ओरियान करए लगली। गैस चुल्हिपर ससपेन चढ़ा बजली- “केकरा-ले तीन महला मकान बनेलौं।”

पत्नीक बात सुनि मुकुन्दजीक करेज दहैल गेलैन। करेजकेँ दहैलते आँखिमे नोर आबि गेलैन। आँखि उठा पत्नी दिस देखि नजैर निच्चाँ कऽ लेलैन। रूमालसँ नोर पोछि मुकुन्दजी मने-मन सोचए लगला जे अपन हारल केकरा कहबै! सपनोमे नै सपनाएल रही जे पढल़-लिखल मनुक्ख एते नीच होइए। केते मेहनतसँ बेटाकेँ पढ़ेलौं..! नोकरी दिएलौं। नीक घर, नीक पढ़ल-लिखल कन्याँक संग बिआह करेलौं, मुदा फल उल्टा भेटल। पढ़ल-लिखल लोक जे अपन सासु-ससुरक संग एहेन बर्ताव करैए तँ लोक जीविए कऽ की करत? ऐसँ नीक मरब। मुदा मृत्युओ तँ ओते असान नहि, तहन तँ जे भाग-तकदीरमे लिखल अछि से भोगब। अगर जँ बुढ़ाड़ीमे गंजने लिखल रहत तँ कियो बाँटि लेत। ओ तँ विधाताक रेख छी, के बदैल देत..!

मुड़ी गोंतने मुकुन्द घुनघुना कऽ बजैत रहैथ। ..पत्नीक आँखि तँ ससपेनपर रहैन मुदा करेज पीपरक पात जकाँ, जे बिनु हवोक डोलैत, डोलैत रहैन। आँखिसँ समतल भूमिक पानि जकाँ नोर टघरैत रहैन...।

चाह बनल। दुनू गोरे आमने-सामने बैस पीबए लगला। एक-एक घोंट चाह पीब एक-दोसरक मुँह दिस तकैथ तँ मुदा कियो किछु बजैथ नहि। जेना दुनूक हृदयक भीतर विर्ड़ो उठैत रहैन। ..मुकुन्दजी दुइए घोंट चाह पीलैन, बाँकी सभ सरा कऽ पानि भऽ गेल। तही काल बुचाइ पहुँचल। अबिते बुचाइ दुनू हाथ जोड़ि, दुनू गोरेकेँ प्रणाम कऽ बैसल। बुचाइकेँ देखिते मुकुन्द मनकेँ थीर करैत

पत्नीकेँ कहलखिन- "भरि दिनक थकान देहकेँ खण्ड-खण्ड तोड़ैए। मन केनादन करैए। कनी एटैचीसँ एकटा बोतल नेने आउ। जाबे पीब नहि, ताबे कोनो बाते ने कएल हएत।"

पतिक बात सुनि पत्नी एटैचीसँ एकटा हजार एम.एल.क ब्राण्डीक बोतल आ दूटा गिलास निकालि कऽ आनि आगूमे रखि देलकैन। त्रिकोण जकाँ तीनू गोरे तीन दिससँ बैसल आ बीचमे लोहाबला मोड़ुआ टेबुल, जैपर गिलास बोतल राखल। ..बोतलक मुन्ना खोलि मुकुन्द अपनेसँ दुनू गिलासमे ब्राण्डी ढारलैन। एक गिलास अपने आ दोसर गिलास बुचाइ दिस बढ़ौलैन। ब्राण्डी देखि बुचाइक मन चटपटाए लगल मुदा अनभुआर लोकक संग पीबैक परहेज करैत बाजल- "काकाजी, ई सभ हम नै पीबै छी। गाममे हमरा केतए ई चीज भेटत। गरीब-गुरबा लोक छी, जँ कहियो मनो होइए तँ एक दम चीलममे लगा लइ छी। नहि तँ पीसुआ भाँगक एकटा गोली कहियो-काल चढ़ा दइ छिऐ।"

जिद्द करैत मुकुन्द कहलखिन- "ई तँ फलक रस छिऐ। कोनो की मोहुआ-दारू आकि पलोथिन छिऐ जे अपकार करतह।"

मुकुन्दक मनमे रहैन जे शराब पिआ बुचाइसँ सभ बात उगलबा लेब। जाबे गामक तहक बात नै बुझब ताबे किछु करब कठिन हएत। ..दुनू गोरे एक-एक गिलास पीलैन। गिलास रखि मुकुन्द सिगरेटक डिब्बा आ सलाइ निकालि, एकटा अपनो हाथमे लेलैन आ एकटा बुचाइयोकेँ देलखिन। दुनू गोरे सिगरेट पीबए लगला। सिगरेटक धुआँ मुहसँ फेकैत मुकुन्द बजला- "बुचाइ, हम तँ आब बुड़हा गेलौं, तूँ सभ नौजवान छह। तोरे सभपर ने गामसँ लऽ कऽ देश तकक दारोमदार अछि। शहरमे रहैत-रहैत मन अकछा गेल। ओना, साले भरि नोकरियो अछि, तँए चाहै छी जे जल्दी नोकरी समाप्त हुअए जे गाम आबि अपन सर-समाजक बीच रहब। मुदा गाममे तँ अपना किछु अछि नहि। लऽ दऽ कऽ थोड़े घराड़ीटा अछि। जेकरा नपा कऽ घर बनबए चाहै छी। तइमे तूँ कनी मदैत कऽ दाए।"

बुचाइ- "हमरा बुते जे हएत से जरूर कऽ देब। अहाँ तँ अपने तेतै कमा कऽ टलिया नेने छी जे अनकर कोन जरूरत पड़त।"

मुकुन्द- "तूँ तँ जनिते छहक जे सभ दिन नीक एयर कण्डीशन घरमे रहै

छी, नीक गाड़ीमे चढ़ै छी, नीक लोकक बीच आमोद-प्रमोद करै छी, से केना हएत?

बुचाइ- “अहाँ की कोनो खेती-पथारी करब आकि माल-जाल पोसब, जे तइले खेत-पथार चाही। लऽ दऽ कऽ रहैक घर चाही, से तँ घराड़ी अछिए।

मुकुन्द- “कहलह तँ ठीके, मुदा रहैले तँ घर बनबए पड़त। बिजलियो तँ गाममे अछि नइ तइले जेनरेटर बैसबै पड़त, तहिना पानिक टंकी सेहो नहियेँ छै, तँए कलक संग-संग मोटर सेहो लगबए पड़त। गाड़ी रखैले घर आ साफ करैले जगह सेहो चाही। तहिना पैखानाक संग नहाइले सेहो घर चाही। तेतबे नहि, घरक आगूमे दसो धूरक फुलवारी, बैसैले चबुतरा सेहो चाही। चारू-भर छहरदेवाली से बनबए पड़त। सभले तँ जमीने चाही।”

बुचाइ- “हँ, से तँ चाहबे करी। मुदा हमरा की कहए चाहै छी?

मुकुन्द- “तोरा यएह कहै छिअ जे अपना अढ़ाइए कट्ठा घराड़ी अछि तइमे सभ किछु केना हएत। कहुना कऽ दसो धूर बढ़बैक गर लगाबह।”

मुकुन्दक बात सुनि बुचाइक मनमे हँसी उठल। मुदा हँसीकेँ दबैत बाजल- “देखियौ काका, पान-दस धूर जमीन अमीनक हाथमे रहै छै, मुदा ओ तँ तखने हएत जखन पंचो आ अमीनो पक्षमे रहत।”

मुकुन्द- “तहीले ने तोरा बजेलियह। हमरा तँ केकरोसँ जान-पहचान नै अछि, तोरा तँ सभसँ छह। तँए, तूँ हमरा अप्पन बुझि मदैत करह।”

मने-मन बुचाइकेँ बुझि पड़लै जे ई पनहाएल गाए जकाँ छैथ, तँए सेरिया कऽ हिनका सिखबैक अछि। चपाड़ा दैत बाजल- “देखियौ काका, गामक लोक गरीब अछि, ओ जे पक्ष लेत से ओहिना किए लेत। गौंआँक लिए जेहने अहाँ तेहने श्रीकान्त काका। तहन तँ कियो जे नेत घटौत से बिनु मीठ खेने किए घटौत?”

मुकुन्द- “तइले हमहूँ तैयारे छी। जेना जे तूँ कहबह से हम देबह।”

बुचाइ- “अच्छा हम भाँज-भूज लगबैले जाइ छी। मुदा काल्हि खन श्रीकान्त काका सेहो कहने रहैथ। ओना, हम हुनका कहि देने रहिऐन जे अमानतक दिन हमहूँ रहब। तँए थोड़े दिक्कत हमरा जरूर अछि। मुदा तैयो

दिन-देखार तँ हम अहाँक भेँट नै करब, साँझमे जरूर करब। जेना जे हेतै से सभ बात अहाँकेँ कहैत रहब आ अहूँ ओइ हिसाबसँ अपन गर अँटबैत रहब। ओना, गाममे अखन सरूपक संग बेसी लोक छै, तँए अहाँकेँ ओकरासँ भेँट करा दइ छी। ओ जँ तैयार भऽ जाएत तँ कियो ओकरा रोकि नै सकतै।"

"बड़बढ़ियाँ।"

कहि मुकुन्द बैगसँ दस हजार रूपैआ निकालि बुचाइकेँ दऽ देलखिन।

रूपैआ गनि बुचाइ बाजल- "ऐसँ की हएत? हम ने गामक पेंच-पाँच बुझै छी। काजो तँ उकड़ूए अछि।"

"एते ताबे राखह। जेना-जेना काज आगू बढ़ैत जाएत तेना-तेना कहैत जैहह।"

"बड़बढ़ियाँ।"

कहि बुचाइ प्रणाम कऽ विदा भेल।

मने-मन मुकुन्द सोचए लगला जे भलेँ श्रीकान्तो इंजीनियरे छैथ मुदा जेते पाइ हम कमेलौं तेते हुनकर नन्नो ने देखने हेतैन। भऽ जाए पाइयेक भिड़न्त। मने-मन सोचबो करैथ आ खुशियो होथि।

मुकुन्द ऐठामसँ निकलला पछाइत रस्तामे बुचाइक छगुन्ता बढ़लै जाइ, मनमे अबै- आरौ बहिं, आइ धरि एहेन-एहेन बुढ़बा चोट्टा नइ देखने छेलौं। जिनगी भरि पाइए होंसतैत रहल मुदा सबुर नइ भेलइ। अच्छा, ऐ बेर दुनू सिखता। जइ गामक लोक आइ धरि सहि-मरि अपन बाप-दादाक गाम आ घराड़ी धेने रहल, समाजक बेर-बिपैतमे संगे प्रेमसँ रहल ओइ गाममे जँ एहेन-एहेन चोट्टा आबि कऽ रहत तँ कए दिन गामकेँ सुख-चैनसँ रहए देत। सभकेँ टीकमे टीक ओझरा नाशे करत किने..!"

दोसर दिन, सबेरे सात बजे बुचाइ सरूप ऐठाम पहुँचल। दुनूकेँ बच्चेसँ दोस्ती, तँए धियो-पुता भेलोपर दुनूक बीच रउए-रउ चलैत। सरूपकेँ दरबज्जापर नइ देखि बुचाइ हाक पाड़ए लगल- "दोस छेँ रौ, रौ दोस?"

अँगनाक दछिनबरिया ओसारपर बैस सरूप दारूक बोतलक मुन्ना खोलैत रहए। बुचाइक आवाज सुनि, बाजल- "हँ, दोस रौ, आ-आ, अँगने

आ।”

घरक कोणचर लग अबिते बुचाइ सरूपक घरवालीकेँ देखि बाजल-

“दोस रौ, दोस्तिनीक थुथुन बड़ लटकल देखै छियौ। रौतुका झगड़ा अखन तक लदनहि छैँ, फरियेलौ हेन नहि। हम तँ रौतुका झगड़ा रातिए-मे उठा-पटक करैत फरिया लइ छी आ तूँ अखन तक रखनहि छैँ।”

बुचाइक बात सुनि सरूप बाजल- “धुर बुड़ि, सभ दिन एक्के रंग रहि गेलैँ। कहियो तोरा बजैक ठेकान नै हेतौ।”

बाजि सरूप पत्नीकेँ कहलक- “एकटा गिलास नेने आउ?”

एकटा गिलास आनि पत्नी सरूपक आगूमे रखलक। दुनू गोरे एक-एक गिलास दारू पीलक। बोतलकेँ डोला कऽ देखि सरूप फेर दुनू गिलासमे ढारए लगल। तैबीच बुचाइ बाजल- “एक गिलास दोस्तिनियोँकेँ दहुन?”

बुचाइक बात सुनि कला बजली- “हम नै गाइक गोंत पीबै छी।”

बुचाइ- “कनी पी कऽ देखियौ जे केहेन ताउ चढ़ैए।”

कला मुस्कियाए लगली, तैबीच बात बदलैत सरूप बाजल- “भोरे-भोर दोस किमहर एलैँ?”

जेबीसँ पाँच हजार रूपैआक गड्डी निकालि बुचाइ सरूपक आगूमे रखैत बाजल- “ले, ई तोहर हिस्सा छियौ। गाममे दूटा मोकिर फँसलौ हेन। तँए सेरिया कऽ दुनूकेँ सिखबैक छौ। एकटाकेँ हम संग देबै आ दोसरकेँ तूँ दही। जहिना धिया-पुता दूटा मुसरीकेँ नाँगैर पकैड़ लड़बैए तहिना दुनू गोरे दुनूकेँ लड़ा।”

सरूपक आगूमे रूपैआ देखि कलाक मुहसँ हँसी निकललैन। हँसी देखि बुचाइ बाजल- “एकटा बात बुझै छिऐ दोस्तिनी, लछमी दुइए-टा होइए। एकटा घरवाली आ दोसर रूपैआ। दोस, तोहर भाग बड़ जोरगर छौ। किएक तँ दुनू तोरा लगेमे छौ।”

बुचाइक बात सुनि कला पाछू दिस मुँह घुमा लेली। कलाकेँ पाछू-मुहेँ घुरल देखि बुचाइ बाजल- “मुँह घुमौने नै हएत दोस्तिनी। अहीमे-सँ रूपैआ लिअ आ दोकानसँ अण्डा नेने आउ। भुजल चूड़ा आ अण्डाक कोफ्ता

खुआउ।”

एकटा पचसटकही लऽ कला अण्डा आनए दोकान विदा भेली। खाली अँगना देखि बुचाइ सरूपकेँ फुसफुसाइत कहलक- “दोस, दूटा जुएलहा चोर गाम एलौ हेन। दुनू जेहने ‘चोर’ तेहने ‘लोभी’ अछि। दुनू अपन-अपन घराड़ी नपौत। दुनूकेँ अढ़ाइ-अढ़ाइ कट्ठा जमीन छै, जे खतियानी छिऐ। किएक तँ दुनू एक्के वंशक छी। एक-पुरखिया अछि तँए दोसर-तेसर नइ छइ। दुनू चाहैए जे हमरा तीन कट्ठा हुअए तँ हमरा तीन कट्ठा हुअए। दुनूकेँ पाइक गरमी छै, तँए एक-दोसरकेँ निच्चाँ देखबए चाहैए। गामक लोक तँ दुनूक नजैरमे बोन झाँखुर छी। से थोड़े हुअए देबइ। पैयो खा जेबै आ सुपत-सुपत बँटबरो करा देबइ।”

कनी काल गुम्म रहि सरूप बाजल- “आँइ रौ दोस, अपने सभ कोन नीक लोक छेँ रौ। भरि दिन झूठ-फूस बजै छी, ताड़ी-दारू पीबै छी, तहन नीक केना भेलौं रौ।”

बुचाइ- “धुर बुड़ि, तोरा निशाँ चढ़ि गेलौ, तँए नइ बुझै छीही। तोहीं कह जे गाममे कोनो जातिक लोक किए ने हुअए मुदा जहन मरैए तँ कठियारी जाइ छिऐ की नहि? गरीबसँ गरीब लोक किए ने हुअए, कियो बिनु कफने जरौल गेल? अपना हाथमे जँ पाइ नहियोँ रहल तँ दू-चारि गोरेसँ मांगि-चांगि पूरा दइ छिऐ की नइ? तेसर सालक गप मन छौ की नहि, देखने रही किने जे मखनाक गाए बाढ़िमे भँसल जाइत रहै तँ भरि छाती पानिमे सँ पकैड़ अनलौं। मोतिया बेटीक बिआह कोन पेंचपर करा देलिऐ से बिसैर गेलही। खंजनमा-डोमक घरमे जे आगि लगल रहै तँ देखने रही की नै जे अपन घैलची परहक घैल लऽ कऽ सभसँ पहिने आगि मिझबैले गेल रहिऐ। हमरा देखलक तहन पाछूसँ सभ गेल। जइकेँ चलैत माए केते दिन तक गरियबैत रहल आ कहैत रहल जे तहूँ छुबा गेलेँ आ घैलो छुबा गेल। आँइ रौ, गारियो-फज्झैत सुनि कऽ जे सेवा करै छी उ धरम नइ भेल?”

मुड़ी डोलबैत सरूप बाजल- “हँ, से तँ ठीके कहै छेँ।”

बुचाइ- “हम श्रीकान्त कक्काक पछ लऽ कऽ रहब आ तूँ मुकुन्द काकाकेँ संग दहुन। जहिना इलेक्शनमे परचार करैक, ऑफिस चलबैक, चाह-पानक खर्च, लॉडस्पीकर आ सवारीक खर्च, तैसंग बूथपर दसटा कार्यकर्ता

रखैक खर्च, एजेंटक खर्च, नेता सबहक सुआगत-ले मेहराउ बनबैक खर्च नेतासँ लइ छिऐ तहिना अखनसँ जाबे तक नापी हेतै ताबे तकक खरचा दुनू गोरेसँ दुनू गोरे लेब। हेतै तँ उचिते मुदा ठकसँ ठकब कोनो पाप थोड़े छी।”

सरूप- “केना-केना पाइ लेबही से तँ प्लानिंग कऽ लेमे किने?”

बुचाइ- “घबराइ छँए किए, इलेक्शनोसँ बेसी लेबइ। अमीनक घूस, पंचक घूस, चौक-चौराहाक चाह-पान-गाँजा-भाँग आ ताड़ी-दारूक, तैसंग लठैतक खर्च। केतेक कहबौ। जेना-जेना काज अबैत जेतै तेना-तेना टनैत जेबइ। अखन जे आएल हेन ओ सगुन छी। साँझमे जहन खूब अन्हार तेसर साँझ भऽ जेतै तहन चलिहैं। तोरा दुनू गोरेकेँ मुँह-मिलानी करा देबौ। चौकपर दूटा चाहक दोकान छेबे करै, एकटा पर साँझ-भिनसर तूँ बैसिहैं आ एकटा पर हम बैसब। तूँ मुकुन्दजी दिससँ बजिहैं जे हुनका तीन कट्ठा घराड़ी छैन आ दोसरपर हम बैस बाजब। मुदा एकटा बात मन रखिहैं जे जहन श्रीकान्त काका चौकपर आबैथ, तखन अपने दिससँ चाह-पान खुआ, हुनके बात बजिहैं आ जखन मुकुन्द काका औता तँ हमहूँ बाजब। जइसँ हुनका सभकेँ हेतैन जे सौंसे गौंआँ हमरे दिस अछि। अखन तँ गौंआँ सभकेँ चाहे-पान आ गँजो-ताड़ी पइर लगतै मुदा नापी दिन पुड़ी-जिलेबी जलखैमे आ मौस-भात कलौमे भोजन करा देबइ।”

सरूप- “बड़बढ़ियाँ प्लानिंग छौ।”

बुचाइ- “हम श्रीकान्त काका दिससँ खुशीलाल अमीनकेँ ठीक केलौं हेन, तूँ मुकुन्द काका दिससँ किसुनदेव अमीनकेँ ठीक करिहैं। दुनू अमीन तँ दुनू पार्टीक हएत, मुदा एकटा मध्यस्त अमीन सेहो चाही। तइले रामचन्द्र भायकेँ पकैड़ लेब। तहिना गामोक लोक तँ दुनू दिस बँटाएल रहत, मुदा एक्कोटा तँ तेहल्ला पंच चाही, तइले गुरु काकाकेँ पकैड़ लेब। जखने गुरु काका पंच आ रामचन्द्र भाय अमीन रहता तखने एक्को तिल जमीन एमहर-ओमहर थोड़े हएत।”

दोसर दिन बुचाइयो आ सरूपो गुरु काका लग पहुँचल। गुरु काका दलानेपर बैसल छला। गुरु काकाकेँ प्रणाम करैत दुनू गोरे बैसल। दुनूकेँ एक संग देखि गुरु काका बजला- “की बात छिऐ हौ बुचाइ! दुनू भजारकेँ संगे देखै

छिअ?”

बुचाइ- “अहीं लग एलौ हेन काका। श्रीकान्तो काका आ मुकुन्दो काका घराड़ी नपौता, तहीमे अपनो रहबै।”

गुरु काका- “की करता ओ सभ घराड़ी नपा कऽ। केहेन बढ़ियाँ तँ धिया-पुता सभ खेलाइए।”

सरूप- “रिटायर केलाक पछाइत गामेमे रहता, नोकरियो लगिचाएले छैन। तँए अखने नपा कऽ घरमे हाथ लगौता।”

गुरु काका- “सुनै छी जे दुनू गोरे शहरेमे घर बनौने छैथ, तहन गामोमे अनेरे किए बनौता, हुनका सभकेँ गाममे थोड़े बास हेतैन। जिनगी भरि तँ बड़का-बड़का होटल देखलैन, नीक रोडपर नीक सवारीमे चललैथ, दामी-दामी वेश्यालय देखलैन, से सभ गाममे थोड़े भेटतैन। अनेरे गाममे आबि कऽ किए थाल-कादोमे चलता आ मच्छर कटौता?”

गुरु कक्काक बात सुनि लपैक कऽ बुचाइ बाजए लगल- “से नै बुझलिऐ काका, दुनू गोरे भारी चोट खा कऽ चोटाएल छैथ। तँए गाम दिस झुकला।”

अकचकाइत गुरु काका पुछलखिन- “से की?”

बुचाइ कहए लगलैन- “तेसर सालक घटना छिऐ। श्रीकान्त कक्काक पत्नी ड्राइवरकेँ संग केने बजार गेली। बजारसँ समान कीनि जहन घुमली तँ दोसर गाड़ी सेहो पछुअबैत रहैन। जहन पाँतरमे गाड़ी पहुँचलैन तँ पैछला गाड़ी आगू आबि रोकि देलकैन। गाड़ीसँ चारि गोरे उतैर हिनका गाड़ीमे बैस ड्राइवरकेँ दोसर रस्तासँ बढ़बैले कहलक। वेचारा की करैत। बढ़ल। थोड़े दूर गेलापर गाड़ी रोकि, काकीकेँ उतारि ड्राइवरकेँ कहलकै, मालिककेँ जा कऽ कहुन जे पाँच लाख रूपैआ नेने आबैथ आ पत्नीकेँ लऽ जाइथ। दू घन्टाक समय दइ छिअ। ..ड्राइवर विदा भेल। एमहर काकीकेँ चारि-पाँच ठूसी मुँहमे लगा देलकैन। जइसँ ऐगला चारिटा दाँतो टुटि गेलैन। ठोह फाड़ि कऽ कानए लगली। कनिते काल मोबाइल दऽ कहलकैन जे पतिकेँ कहियौन जे जल्दी रूपैआ लऽ कऽ आउ नहि तँ हम नै बँचब। ..ताबे ड्राइवरो पहुँच कऽ कहलकैन। अपना हाथमे दुइए लाख रूपैआ छेलैन, जे हालक आमदनी रहैन बाँकी रूपैआ सभ बैंकमे रहैन। वएह दुनू लाख रूपैआ लऽ कऽ गेला आ पएर-दाढ़ी पकैड़ कऽ पत्नीकेँ छोड़ा अनलैन।”

बुचाइक बात सुनि ठहाका दैत गुरु काका बजला- "आ मुकुन्द किए औता?"

मुस्कियाइत बुचाइ- "हुनकर तँ आरो अजीव बात छैन। एक दिन एकटा ठीकेदारक पार्टी चललै। जेते बड़का-बड़का हाकिम आ ठीकेदार सभ छल, सभ रहए। मुकुन्द अपन पुरना गाड़ी छोड़ि नवका गाड़ी, जे बेटाकेँ सासुरमे देने रहैन, लऽ कऽ गेला। जहन पार्टीसँ घुमि कऽ एला तँ पुतोहु कहलकैन- पुतोहुक गाड़ीपर चढ़ैत केहेन लगल? ऐ बातक चोट हुनका खूब लगलैन। बेटा-पुतोहुसँ मोह टुटि गेलैन। तँए गाममे रहता।"

बुचाइक बात सुनि गुरु काका गुम्म भऽ जेना किछु सोचए लगला। कनी कालक पछाइत बजला- "गाम तँ गामे छी। शुद्ध मिथिला। भारत। जे स्वर्गोसँ नीक अछि। मुदा सभ गामक अपन-अपन चरित्र आ प्रतिष्ठा छइ। जे चरित्र आ प्रतिष्ठा गामक कर्मठ, तियागी लोकैन बनौने छैथ, अपन कठिन मेहनत आ कर्तव्यसँ सजौने छैथ। ओकरा जीवित राखब तँ अखुनके लोकक कान्हपर भार अछि। नोकरीक जिनगीमे किछु कियो केलैन तइसँ समाजकेँ कोन मतलब, अपना-ले केलैन। समाजक एक अंग होइक नाते हुनको सबहक कान्हपर किछु भार छेलैन जे अखन धरि थोड़बो नहि निमाहि सकला। मुदा तैयो जँ समाजमे आबि, समाज रूपी फुलवारीमे फूल लगबए चाहता तँ बढ़ियाँ बात। मुदा से लक्षण-करणसँ नै बुझि पड़ैए। समाजमे रहैले समाजक चरित्रक अनुकूल अपन चरित्र बनौता तखने ने समाजमे अँटाबेश हेतैन। ई तँ नहि जे गदहा गेल स्वर्ग तँ छान-पगहा लगले गेलइ।"

गुरु कक्काक बात सुनि बुचाइयो आ सरूपो एक्केबेर पुछलकैन-

"काका, गामक विषयमे हम सभ किछु ने बुझै छी, से कनी बुझा दिअ?"

गुरु काका बजला- "अखन काजक बेर अछि तँए बहुत बात तँ नइ कहि सकबह, मुदा जहन बुझैक जिज्ञासा छह तँ दूटा बात जरूर कहबह। देखहक, गामक पढ़ल-लिखल वा बिनु पढ़ल-लिखल लोक, पेट भरै दुआरे नोकरी करैले बाहर जाइ छैथ, नीक बात। मुदा गामकेँ सोलहन्नी नै छोड़ि दैथ। अखन देखै छी जे अमेरिका, इंग्लैडसँ लोक तीन दिनमे गाम आबि सकै छैथ। तँए सालमे कम-

सँ-कम एक्को बेर, नहि तँ हुनको गाम छिऐन, केतेको बेर आबि सकै छैथ। जइसँ गामक लोक आ खेत-पथारक संग सम्बन्ध बनल रहतैन। मुदा से नै कऽ गामकेँ सोलहन्नी छोड़ि, अनतहि घर बना रहए लगै छैथ, ओ गामक दुर्भाग्य छी। जेकर फल होइए गामक ज्ञान निर्यात भऽ जाइए। जइसँ सुतल गाम सुतले रहि जाइए। संगे गामक बेवहार, कला-संस्कृति सभ टुटि जाइए। रिटायर केलाक पछाइत वा जिनगीक अन्तिम अवस्थामे, जँ कियो गाम आबि रहए चाहता तँ हुनका गाम केहेन लगतैन। डेग-डेगपर टक्कर आ बात-बातमे विवाद हेबे करतैन। ..दोसर बात सुनह, अपना गाममे वैदिकजी भेल छैथ। जिनके पोता शुभकान्त छिऐन। वेदक प्रकाण्ड विद्वान वैदिकजी। नाओं तँ छेलैन गंगाधर मुदा वैदिकजी नाओंसँ विख्यात भेला। अपनो राज्यमे आ आनो-आनो राज्यमे जहन पण्डितक बीच शास्त्रार्थ होइ तँ हुनकर जवाब देनिहार कियो ने ठहरैत। अनेको तगमा आ प्रशस्ति पत्र भेटलैन। अखनो परोपट्टाक लोक हुनके नाओंपर अपना गामक नाओं 'वैदिकजीक गाम' बुझैए। हुनके चलौल अपना गामक पानि छी। पहिने पानिक छुआ-छूत अपनो गाममे छल, मुदा ओ सभकेँ बैसार करा कऽ बुझा देलखिन जे दुनियाँमे जेते मनुक्ख अछि, सभ मनुक्ख छी, तँए मनुक्ख-मनुक्खक बीच छुआ-छूत नै हेबा चाही। थोपड़ी बजा सभ हुनकर विचारक समर्थन कऽ देलक। ओइ दिनसँ पानिक छुआ-छूत गामसँ मेटा गेल। तहिना दोसर भेल जोगिनदर, भिखारी दासक पक्का चेला। अजीब कला हुनकोमे छेलैन। जहिना नचैमे अगिया-बेताल, तहिना गीत गबैमे। जे पार्ट लऽ कऽ स्टेजपर अबैत, धऽ कऽ झहरा दइत। एहेन बिपटा अखन धरि कोनो नाचमे नइ देखलिऐ। ओकरे परसादे गाममे भिखारी दासक नाच केतेको बेर भेल। जहन भिखारी दासक पार्टी छपरासँ पूब-मुहेँ असाम, बंगाल, नेपाल विदा होइ तँ अपने गाममे रूकइ। खाली खेनाइ आ इजोतक खर्च गौंआँक होइ। तहिना जब तीन-चारि मासमे घुमै तँ फेर अँटकै। तहिना भेल महावीर। वेचारा बड़ गरीब छल। नोकरी करैले कलकत्ता गेल। मुदा नोकरी नै कऽ रिक्सा चलबए लगल। अजीब संस्कार ओकरोमे छेलइ। रिक्शो चलबै आ गीतो-कविता बनबै। पहिने तँ लिखल-पढ़ल नै होइ, मुदा अ-आसँ सीखब शुरू केलक। किछुए दिनक पछाइत लिखबो आ पढ़बो सीखि लेलक। रिक्सापर जहन चलै तँ अपन बनौल गीत गाबए। एक दिन एकटा साहित्य प्रेमी रिक्सापर चढ़ल रहैथ आ महावीर

रिक्शो चलबै आ गीतो गबइ। उतरै काल कवि पुछि देलखिन। सभ बात महावीर कहलकैन। ओ एकटा कवि गोष्ठीमे आमंत्रित कऽ देलखिन। ओइ गोष्ठीमे पहुँच महावीर तीनटा कविता आ दूटा गीत गौलक। तइ दिनसँ कवि गोष्ठीमे आमंत्रित हुअ लगल। बंगाल सरकार दस हजारक पुरस्कार आ प्रशस्तिपत्रसँ सम्मानित केलकैन। तहिना भेल कारी खलीफा। जेकरा इलाकाक लोक खलीफा मानैत। बड़का-बड़का दंगलमे पहुँच ओ आन-आन जिलाक केतेको खलीफाकेँ पटकलक। ओकरा चलैत गाममे कियो केकरो बहु-बेटीकेँ खराब नजैरसँ नै देखैत। एक बेर एकटा घटना जमीनदारक सिपाहीक संग घटलै। एक साए लाठी सिपाहीकेँ समाजक बीचमे मारलकै। तही दिनसँ जमीनदार दू बीघा खेत ओहिना दऽ देलकै। एहेन-एहेन पण्डित, कलाकारक बनौल गाम छी, तेकरा हम सभ अपना जीबैत केना दुइर कऽ देबइ। आइ जँ गाम दुइर हएत तँ ऐगला पीढ़ी केकरा गारि पढ़तै। तँए जँ दुनू गोरे मनुक्ख बनि गाममे रहए चाहता तँ बड़बढ़ियाँ, नहि तँ गाममे रहने कियो समाज तँ नहि बनि जाइत।”

अमानत भेल। कोनो बेसी झमेल रहबे नै करइ। पाँच कट्ठाकेँ दू भाग केनाइ। बँटवारा करि रामचन्द्र अमीन बजला- “जिनका संदेह हुअए ओ चाहे कड़ीसँ वा फीतासँ वा लग्गीसँ आकि डेगसँ भजारि लिअ।” ❑

संकल्प

कोनो अविकसित वा अर्द्धविकसित देशो आ गाम-समाजक संग परिवारो आ बेकतियोक बीच बेरोजगारियो आ पछुपनो रहिते अछि। अपनो समाज आ देशोमे अछिए। कियो जानि-बुझि एहेन परिस्थितियो आ परिवेशोक सामना करैत अपन जीवनकेँ संचालित करै छैथ आ कियो कखनो अपनो, कखनो परिवारोकेँ आ कखनो देशो-दुनियाँकेँ दोख लगा मन शान्त करिते छैथ। विचारपुर गाममे रामलाल एहने एक किसान परिवारक बेकती छैथ जे सइयो समस्या, सइयो छान-वान आ खगल बेर-बेगरताक बीच अपनाकेँ ठाढ़ केने डेगे-डेग ससैर रहल छैथ। जहिना एक दिस रामलाल अनेको बेर-बेगरताक अभावमे खगल जिनगीक गाड़ी खिंच रहल छैथ तहिना विचारक दुनियाँमे ईहो जानि-मानि रहल छैथ जे जइ देशमे उपजाऊ भूमि-सम्पदाक बाहुल्य अछि तइ देशक किसानमे ओहन अपरिमित शक्ति सेहो अछिए जे किसानी जिनगीकेँ जिनगीक रूपमे जीवाइये सकैए।

रस्तेकातमे रामलालक अँगनो-घर छैन आ दरबज्जा तँ सहजे रस्ते कातमे, रस्तेक रूखिये सेहो छैन्हे। जइसँ जेते अपन दुआर-दरबज्जाक लज्जैत बनौने छैथ तेते रस्तोक बनौनहि छैथ। ओना, गामक केतेको लोक ई उपराग दइते छैन जे जेते फुलक गाछ रामलाल अपन दरबज्जापर नइ लगौने छैथ तइसँ बेसी रस्तापर–सार्वजनिक भूमिमे–रोपने छैथ। मुदा तइ सभ बातकेँ रामलाल ने कहियो कान-बात देलैन आ ने बाते कानमे धेलैन। किएक तँ अपनो मन कहिते छैन जे फुलक गाछ भलेँ हम रोपने छी मुदा देवी-देवताक पूजा करैले आनो-अपन अपने रोपल जकाँ तोड़ियो कऽ आ बीछियो कऽ लइये जाइ छैथ, तइले हम किनको मनाहियो तँ नहियेँ करै छिऐन। तखन ओ सबहक भेल आकि हमरेटा...।

आइ ओही रस्ता परहक फुलक गाछक जड़िकेँ निहारि-निहारि रामलाल

देखि रहल छला जे हालक अभावमे एना भेल कि कोनो कीड़ाक आगमन भेलै जे एना दिनो-दिन गाछक बढ़बारिक बदला घटबाहि भेल जा रहल अछि...। गाछक जड़िकेँ खोदि कऽ देखि रामलाल मुड़ी उठा मने-मन विचारए लगला कि रस्तापर एक गोरेकेँ अबैत देखलैन।

अनगौंआँ रहने रामलाल चिन्ह नहि सकला। ओना, मनुख तँ मनुखे भेला जे एकरूपिया देवियो-देवताकेँ चीन्हब कठिन अछिए। किएक तँ कखन देवी दुर्गा बनि जेती आकि लछमिये-सरस्वती, से जानब तँ कठिन अछिए।

मनक विकारकेँ रामलाल विचारि-विचारि सुविचार बनबैले मन ओरियेबिते छला कि ओ आदमी आगूमे आबि ठाढ़ भऽ गेलैन। रामलाल चीन्हि नहि सकला। ओना, कखनो-कखनो चिन्हारो अनचिन्हार भइये जाइए, मुदा अनगौंआँ तँ सहजे अनचिन्हार जगहक भेबे केलाह तँए अनचिन्हार सोभाविके...। दरबज्जाक आगूक रस्ताक विचार करैत रामलाल जखन पाछू उनैट ओइ आदमी दिस तकलैन तँ किछुओ परेखमे नहि एलैन जे ओ पीड़ित अवस्थामे छैथ आकि बेपीड़ित अवस्थामे। तैबीच अपन संक्षिप्त परिचय दैत ओ बेकती अपने बजला- “हम बगले गाम रहै छी, किसुनलाल नाम भेल।”

परिचय सुनि रामलाल विचार कइये नहि पेब रहल छला जे किसुनलाल ऐठाम आबि रूकि कऽ चुपचाप ठाढ़ किए भेला। गाछक जड़िक जँ जानकार रहितैथ तँ किछु विचार दइतैथ, नहि जँ किछु जानए चाहितैथ तँ सेहो किछु बजितैथ मुदा से दुनूमे सँ किछु ने..!

अपनाकेँ सम्हारि रामलाल बजला- “चलू, दरबज्जापर।”

‘दरबज्जापर चलू’ कहैत रामलाल उठि कऽ ठाढ़ भेला। रामलालकेँ ठाढ़ होइते किसुनलाल बजला- “किछु संकल्पक संग हम घरसँ निकलल छी, तँए..!”

‘संकल्पक संग घरसँ निकलल छी’ सुनिते रामलालक मन, अकासमे उड़ैत नमहर चिड़ै जकाँ चकभौर लेलकैन। संकल्पक विकल्प तँ दुनू दिस अछि। केहेन विकल्प, केहेन संकल्पवान बनबैक दिशामे बढ़ौत आ केहेन संकल्पक समाधानक केहेन विकल्प हएत? असमंजसमे पड़ल रामलाल पुन: बजला- “जेतेकाल ऐठाम रूकि गप करब तेतेकाल किए ने दरबज्जेपर बैस गप-सप्प

करब?”

ओना, नव पीढ़िक पढ़ल-लिखल किसुनलाल तँए मनमे उठि चुकल छेलैन जे सार्वजनिक पथ–माने गामक रस्ता–पर मान-अपमानक प्रश्न नहि रहैए ओ तँ अधिकार-कर्तव्यक बीच बास करैए। मुदा दरबज्जा तँ से नहि, ओ तँ बेकती-विशेषक भऽ जाइए। ओना, दरबज्जाक सेहो सार्वजनिको रूप अछि आ बेकती-विशेषक सेहो अछिए। खाएर जे अछि तइसँ रामेलाल आकि किसुनेलालकेँ कोन मतलब छैन। भाय किछु छी, मनुख तँ छीहे किने। जँ मनुख विचारक आदान-प्रदान नइ करता तखन तँ मनुखक आकार रूप भऽ सकता मुदा मानव मानब तँ कठिन भइये जाएत।

एकाएक किसुनलालक मनमे पाइनिक बेग जकाँ विचारक बेग उठलैन। उठलैन ई जे आन जीव-जन्तु अपन सुख-दुखकेँ भोगि सकैए मुदा केकरो कहि तँ नइ सकैए। ओना, कहब जे अधिकसँ अधिक दुखकेँ अपने-आपमे अङ्गेजब महानता भेल, मुदा ऐठाम से नहि, ऐठाम बस एतबे जे जाबे अपन दुख आन लग नइ बाजब ताबे जँ ओ सुखदातो होथि तँ बुझता केना जे हमरा चलैत दोसरकेँ एते कष्ट भऽ रहल छैन...।

किसुनलाल सहर्ष बजला- “भाय साहैब! अपनो पियास लगल अछि, चलू एक गिलास पानियोँ पीब।”

किसुनलालकेँ अगुएने रामलाल दरबज्जापर पहुँच चौकीपर बैसबैत बजला- “अहाँ बैसू, हम पानि नेने अबै छी।”

आँगन दिस रूखि करिते रामलालक मनमे उठलैन जे ई तँ मिथिला छी। ऐठाम अतिथि-अभ्यागतक सेवा जहिना अनिवार्य नहि धरमो मानल जाइत अछि तहिना निमाहबो तँ कठिन अछिए। हमरा हाथक पानि हाथमे लइसँ पहिने जँ किसुनलाल बाजि जाथि जे केहेन पियास बुझबैक पानि छी, तखन तँ कठिन परीक्षाक घड़ी आबिये जाएत..! भाय, परिस्थिति केहनो किए ने हुअए मुदा मनुखो तँ रगड़ी होइते छैथ किने, किछु-ने-किछु समाधानक बाट ताकिये लइ छैथ, भलेँ ओ सुफाँइट हुअए कि कुफाँइट।

रामलाल मन सक्कत केलैन। पानि नेने दरबज्जापर किसुनलाल लग आबि बजला- “पहिने किछु अन्न ग्रहण करितौं तेकर पछाइत जँ पानि पीबितौं

तँ बेसी नीक होएत।”

अन-पानिपर किसुनलालक मन नइ रीझल मुदा अपन मनक संकल्प अपने विचारकेँ फोड़ैत निकलल- “आने-आन पढ़लो-लिखल आ बिनु पढ़लो-लिखल युवक जकाँ हमहूँ पढ़ल-लिखल युवक छी। बी.ए. केलाक सात बर्ख भऽ गेल, नोकरीक पाछू वौआइत रहलौं। आइ घरसँ संकल्पित भऽ कऽ निकलल छी जे चाहे जे काज हुअए, बिना अपनौने घुमब नहि।”

एक तँ नोकरीक संकल्प, तोहूमे घर छोड़ि घुड़मुड़िया..! रामलालक मन बिहुसलैन। बिहुसते बजला- “संकल्प तँ सक्कत अछि मुदा अछि भरिसक नरकक ठेलम-ठेल जकाँ..!”

रामलाल बजला एतबे, मुदा मनमे ईहो बात रहैन जे एक तँ परतंत्रक जिनगी अङ्गेजब, सेहो लाखक-लाख घूस दऽ कऽ।

ओना, किसुनलालक चेहरा भीतरसँ जहिना चमैक रहल छेलैन तहिना बाहरसँ दमैकियो रहले छेलैन। चमकै-दमकैक कारण किसुनलालक मनमे ई छेलैन जे जहिना अपन जिनगीक बुड़ैत नैयाक नाह देखै छला तहिना संकल्पित जिनगीक कटिवद्धता सेहो छेलैन्हे।

तैबीच रामलालक पत्नी–सुकन्या–चाह नेने पहुँचली। सुकन्याकेँ देखि किसुनलालक छाती दड़कए लगलैन। पत्नीक संग जीवन-यापनक की पैघ-पैघ अरमान मनमे छल आ आइ की भऽ रहल अछि..! मुदा अपन पीड़ा पीड़ितसँ जरिते किसुनलालक मनसँ नोकरीक संकल्पक बुलबुला, बरखाकालक पानिक बुलबुला जकाँ धीरे-धीरे फुटि-फुटि पानिमे विलीन हुअ लगलैन आ जिनगी जीबैक संकल्प मनमे उठए लगलैन जइसँ दुनू गोरेक बीच चुपा-चुपी पसैर गेलैन।

चुपा-चुपी देखि रामलालक मन कछमछेलैन। बजला- “पहिने चाह पीबू, पछाइत जे टुट-नफाक गप अछि ओ होइत रहत।”

अदहा कप चाह किसुनलाल पीब नेने छला मुदा रामलाल अतिथि आग्रह देखि चौथाइयोसँ कम्मे चाह पीने रहैथ। तैबीच किसुनलाल बजला- “ऐगला जिनगी-ले..?”

बिच्चेमे किसुनलालक बोली थकथका गेलैन। थकथकाएबो सोभविके

छल, की तँ सात बर्खसँ धाँगल-टुटल जिनगीक ने भुक्तभोगी रहि चुकल छैथ।

थकमकाइत-धकमकाइत किसुनलालकेँ देखि रामलाल बजला- "अखन अहाँ नवयुवक छी! ओना, किछु समय बीचक जरूर नष्ट भऽ गेल मुदा जखने जागी तखने परात।"

'जखने जागी तखने परात' सुनि किसुनलालक मन सुगबुगेलैन। सुगबुगाइक कारण भेलैन जे एक तँ पढ़ल-लिखल नौजवान, दोसर सात बर्खसँ देश-समाजक बाढ़िक थपेड़सँ नीक जकाँ थपड़ा सेहो गेले छला जइसँ मनुखक चतुर्दिक जिनगीक रूप-रंग सेहो बहुत किछु अनुभव कराइये देने रहैन। सुगबुगाइत किसुनलालक मनमे सभसँ बेसी गाम-घरक खेतिहर किसानक जिनगी जोर मारलकैन। खेतिहर किसानक वृत्ति किसुनलालक मनमे अबिते अपने फुटलैन- "वाह रे खेतिहर किसान! एक दिस पढ़ि-लिखि खेतीकेँ हँसियापर बैसा छोड़ि-छोड़ि परतंत्रक नोकरी पाछू बेहाल छैथ आ दोसर दिस कृषि-वृत्तिकेँ स्वतंत्र जिनगीक इज्जत-धर्म सेहो मानियेँ रहल छैथ..!"

किसुनलालक विचार सुनि रामलालक मनमे विचारक सुप्रभात झलकी देलकैन। मुदा विचारो-विचारक बीच जे खाँच अछि ओकरा समतल बनबैमे किछु कठिनाइयो आ बाधा सेहो अछिए। तँए विचारक जड़ि दिस रामलालक मन बढ़िये रहल छेलैन कि दोहरी बाट नजैरपर चढ़लैन। बजला- "किसुनलालजी, मनुखकेँ सभसँ पहिने अपन ओकातिक अनुभव करक चाही, पछाइत ओइपर जिनगी केना ठाढ़ हएत तइ दिस नजैर बढ़ेबाक चाही। जखने से हएत तखने मनुखकेँ कोनो-ने-कोनो रस्ता भेटबे करत।"

रामलालक विचार किसुनलाल नीक जकाँ नहि बुझि पेला मुदा एहेन तँ आशा मनमे रहबे करैन जे जँ नीक विचार एक बेरे नहि बुझी तँ दोहराइयो-तेहराइयो कऽ बुझैक कोशिश जरूर करी। जखने मनक विचार सोझरा जाएत तखने हाथ-पैरक काज सेहो रस्ता पकड़बे करत...।

मुँह फोड़ि किसुनलाल बजला- "नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं।"

कोनो विचार जखन अपन विचाररूपमे चलैए आ राही-बटोहीक बीच ओझल हुअ लगैए तखन एक नहि अनेको उदाहरणसँ जहिना ओकरा फरिछाएल जाइ छै तहिना रामलाल बजला- "अपना ऐठाम समर्पणक विचार खाली विचार नहि जिनगी जीबैक मूल तत्त्व सेहो छी। तँए अपनाकेँ...।"

किसुनलाल- “की समर्पण?”

ओना, शॉर्ट-कटमे रामलाल बाजि गेला जे ‘अपनाकेँ अपने-आपमे समर्पण’ मुदा किसुनलालक चेहराक सुर्खीमे कोनो सुखपन नहि अबैत देखि रामलाल फरिछबैत पुछलखिन- “अपन बपौती सम्पैत की सभ अछि?”

ओना, सात बर्ख पहिने तक किसुनलाल ‘बपौती सम्पैतिक’ अर्थ खाली खेते-पथार आ धने-सम्पैतटा कँ बुझै छला, मुदा सात बर्खक जिनगीक हिलकोरसँ विचारोमे थोड़ेक हिलकोर आबिये रहल छैन जइसँ बपौती सम्पैतिक माने खाली जमीने-जायदादटा नहि, पारिवारिक-सामाजिक सम्बन्धक संग बेकतीगत जवाबदेही सेहो जुड़ल अछि, से किछु-किछु बुझिमे आबए लगलैन। तँए किसुनलाल धकमकाइत बजला- “बपौती सम्पैत तँ केतेको रंगक अछि।”

किसुनलालक विचार रामलाल बुझि गेला। तँए लगले हाथ फरिछबैत बजला- “अखन जइ तरहक समस्या बेरोजगारीक अछि मात्र ओतबेपर विचार करू। अपना केते खेत-पथार अछि?”

किसुनलाल बजला- “पाँच बीघा।”

रामलाल- “भैयारी केते छी?”

किसुनलाल- “दू भाँइक भैयारी अछि।”

रामलाल- “अपन देश कहियौ कि राज्य आकि गामे कहियौ, खेतक कुल सम्पदा आ लोकक कुल सम्पदाकेँ एकठाम हिसाब जोड़ियो तँ...।”

किसुनलालक मन विचारक घाटसँ जेना लगले असनान करिकऽ निकलल होनि, तहिना पवित्र सेहो भइये गेल छेलैन। मुदा अन्तक अन्तिम बात जे अपना विचारसँ नोकरीक संकल्प लऽ कऽ निकलल छला आ रस्तामे कियो वौस कऽ घुमेनिहारो ने होनि सेहो केहेन हएत...।

किसुनलाल बजला- “आब की करी?”

रामलाल- “गामक रस्ता पकड़ू।”

किसुनलाल- “सहए।”

रामलाल- “हँ तँ आरो की...।” ❑

के मानत?

भिनसुरका समय। चाह पीब विचारिये रहल छेलौं जे आइ कोन-कोन हलतलबी काज अछि। पहिने तेकरा पतिआनी लगा मनमे सहिआइर ली, पछाइत जे हएत से हएत। तइ बिच्चेमे पत्नी चारू-पाँचू बेटा-बेटीकेँ फुसला कऽ पनिया लेलैन आ टुसि देलखिन जे आइ शुक्र दिन छी जे तीनू बेरागनमे सभसँ नमहरो आ नीको अछिए, माने शुभ दिन अछि। तँए अदरा पाबैन कइये लेब।

अखाढ़ मास आर्द्रा नक्षत्रक समय, तँए एक पनरहिया अदरा पाबैन चलबे करत। भर्लें पियासल धरती पाइनिक अभावमे अपना देहसँ 'लू' पैदा करैपर किए ने बीर्तमान हुअए...।

एक मुहेँ चारू-पाँचो धिया-पुता बाजल- "बाबू, आइ अदरा पाबैन हएत से आमक ओरियान करू।"

धिया-पुताक बात सुनि मन मनाही करैत विचार देलक जे माइयक समदिया पाँचू छी, तँए चोरकेँ नहि पकैड़ चोरक माइकेँ पकड़ब ने बुधियारी छी, मुदा ऐठाम तँ आगूमे पाँचो धिया-पुता आबि गेल अछि जे दुनू परानीक सझिया छी..!

ओना, भीतरे-भीतर तामस सेहो उठैत रहए आ खींस सेहो उठिते रहए। मुदा से तामस कखनो धिया-पुतापर उठए तँ कखनो पत्नीपर, तँ कखनो आम आ अदरा पाबैनपर...।

कहू! जे भगवान अपन काज करबे ने केलैन माने बरखा भेबे ने कएल जे जमीन आर्द्र होइत, आ तइ भगवानकेँ अदराक आम आ खीर खुएबैन से एहेन खाइबला मुँहकेँ चुल्हिक खोंरनीसँ किए ने खोंरनाठयैन।

ओना, धिया-पुता एक्के बेर बाजल से भरिसक अपने जे नइ किछु बजलौं तँए आकि की, से नहि बुझि पेलौं। भरिसक ओ सभ ऐ धोखामे पड़ि

गेल जे बाबू जखन किछु ने बजला तखन ओ ओरियानक पाछू लगि जेता। अखन भिनसर भेबे कएल अछि, पाबैन कहुना-कहुना तँ दुपहरमे ने हएत।

बाजए किछु ने कियो मुदा रहल सभटा लगेमे ठाढ़। मनक जे खींस रहए ओ खिखिर जकाँ खेंखियाइत पत्नीपर जा अँटैक गेल। पत्नीक सीमान लग खींस पहुँचते आरो खिसिया उठल।

खिसिया ई उठल जे समाजक जे देखौंस करब ओ हमरा छजत? एते दिन संग-संग रहला पछातियो जे मनुख पतिक जीवनकेँ नहि परेख सकली ओहन मनुख पति धर्मक पालन की कए सकै छैथ..! ओ अखनो तक ई नहि देखि रहली अछि जे डॉक्टरसँ ओझा (मंत्र-तंत्रबला) तक अपन एजेंसी पसाइर नेने अछि, ओ अखन तक एतबो नहि बुझि पेली अछि जे असलीसँ नकली आ नकलीसँ असलीक संग असली-नकली दुनू संग मीलि अपन महजाल पसाइर नेने अछि..! तैठाम जँ ओकरा सबहक जिनगीक संग अपन परिवारक जीवनकेँ लऽ जाए चाहब तँ पहिने अपन ओकातिक विचार सेहो ने कऽ लेब अछि।

ओना, भीतरे-भीतर मन आमक गाछी सभ दिस सेहो औनाइत रहए। किए तँ कोनो उपरारि गाम एहेन नइ अछि जइ गामक एक चौथाइसँ बेसी जमीनमे आमक खेती–गाछी-कलम–लगल अछि। सालमे एक बेर आम फड़ैए, जे भेल ओइ खेतक उपज, से एकोटा गामक गाछी-कलम ऐ साल एहेन नहि बँचल रहल जे फड़ल हुअए। साए रूपैये किलो बाहरी आम आबि-आबि गाम-घरमे बिकाइए।

जखने गाम-गामक गाछी-कलम नहि फड़ल तखने मनकेँ मना लेलौं जे ऐबेर एकोटा आम नइ खाएब। सालमे एक दिन जामुन खाइ छी से ऐबेर दू दिन खा लेब। आ जँ सम्भव हएत तँ ओकर आँठियो बीछ कऽ घर-वैद रखि लेब। बेरपर काज एबे करत। किए तँ सर्दी-खाँसी जकाँ डायविटीज सेहो अनिवार्ये जकाँ भइये गेल अछि।

तरे-तर पत्नीपर मन खींससँ अरखींस दिस सेहो बढ़ए लगल मुदा तेकरा रोकि-रोकि थतमारि कऽ जॉंति-जॉंति मनेमे रखने रही।

आगूमे धिया-पुता सभ ठाढ़ भेल मुँह दिस देखैत रहए।

मुहसँ जखन कोनो बकार नहि निकलैत रहए तखन पत्नी सोहरदे लगमे

आबि बजली- “अधासँ बेसी अदरा नछतर बीत गेल, मुदा अखन तक पाबैन नहि भेल अछि तँए आइ पाबैन कइये लइतौं।”

एक तँ ओहिना भीतरे-भीतर मन तामसे कोयला भेल जाइत रहए, तइ परसँ पत्नीक विचार आरो मनकेँ खोंचारि देलक। तामसे देह लहैरते रहए मुदा भिनसुरका समय रहने तामसकेँ पेटसँ नहि निकालि पेटेमे दबने रही। किए तँ मन ईहो कहैत रहए जे भिनसुरके मुहूर्त्तसँ ने दिन भरिक मुहूर्त्त चलैए। माने ई जे जखने भोरे-भोर मुहाँ-ठुठी करब तखने भरि दिन अहिना होइते रहत।

खिसिया कऽ दरबज्जापर सँ उठि पढुआ काका ऐठाम मन बदलैले विदा भेलौं। मनक विचार बदलैले की जइतौं तँ मनक तामस मिझबैले आगू बढ़लौं।

दरबज्जापर बैसल पढुआ काकाकेँ देखिते प्रणाम नइ केलिऐन। किए तँ जहिना पढुआ कक्काक मन विसाइन-विसाइन बुझि पड़ल तहिना घोघ सेहो लटकल देखलयैन।

भाय, प्रणामो-पाती तँ सम-गम स्थितिक विचारेमे ने नीक होइए, जँ कियो बेथित, चिन्तित वा दुखी होइथ तैकालक प्रणाम-पाती तँ व्यंग्य सेहो पैदा करैए जेकर माने विपरीतो दिशा दिस बढ़िते अछि।

मने-मन हँसियो लागए जे अन्हराकेँ अन्हारसँ भेँट भेल..! मुदा की करितौं, तँ जहिना मरण-हरणमे जिज्ञासु घरबैयाक संग धौना खसा चुप-चाप मुड़ी गोंति बैस जाइ छैथ तहिना हमहूँ पढुआ कक्काक आगूमे धौना खसा बइस गेलौं।

विचारवान पढुआ कक्काक मनमे बर्खाक बून जकाँ बुना-बुनी झहैरतो रहैन आ अपने पानिसँ उठि पानियेँमे फुटि-फुटि विलीन सेहो होइत रहैन। पाइनिक बुलबुला जहिना बर्खाक समय धरतीपर अपने जनमबो करैए आ फुटबो करैए तहिना पढुआ कक्काक मनक विचारमे सेहो भरिसक होइत रहैन। बुलबुला चाहे झीसी-फुहीक मकैया वा जनेरैये किए ने हुअए आकि रबड़क बैलून जकाँ नम्हरे किए ने हुअए मुदा फुटैमे कियो-केकरो आशा थोड़े तकैए आकि अपने मुहेँ कहियौ आकि सौंसे धड़े कहियौ, फुटम-फुट भइये जाइए...।

कनियेँकालक पछाइत पढुआ काका बजला- “बुझलहक गोकुल, देखले दिनमे इज्जत जा रहल अछि!”

पढुआ कक्काक बात सुनि मन धड़फड़ा गेल। धड़फड़ाइते फुटल-

"काका, अखन जाइयेपर अछि ने, गेल नइ ने अछि? सुइयाक नोकपर जेते जमीन चढ़ैए तेते जमीन ले तँ अठारह दिनक घमासान महाभारतक लड़ाइ भऽ गेल, अपनेक तँ इज्जतक प्रश्न अछि।"

ओना, अपना जनैत विचारकेँ वेगबान बनबए चाहलौं मुदा होशगर नैया जकाँ जहिना बीच धारोमे अपन नाहक धारा बदैल लइए, तहिना पढुआ काका अपन विचारकेँ बदलैत बजला- "बौआ, तोहर विचारपर पछाइत विचार करब, अखन अप्पन बात सुनेबह।"

अखन तक जे मनमे पत्नीपर पीत लहरल छल ओ प्रीत बनि पिताशयमे पचि गेल। पढुआ कक्काक मुहसँ निकललैन- 'अखन अपन बात सुनेबह' सुनि केना कहितिऐन जे पहिने हमरे सुनू।

अखन तक जे प्रणाम करब पछुआ गेल छल तेकरा पुरबैत बजलौं-

"काका, अपने तँ..!"

'अपने तँ' पर धियान नहि अँटका पढ़आ काका बजला- "बौआ, की कहबह! इज्जत बाँचब कठिन भऽ गेल अछि। परुकाँखन बौआकेँ माने ओइ बेटाकेँ जे अमेरिकामे दस सालसँ रहि रहल अछि, आम खाइले आबए कहलयैन। छुट्टीक दुआरे नहि आबि सकला। ऐबेर फोन-पर-फोन अबैए जे आठम दिन गाम पहुँच रहल छी। ओइठाम कि अपना सभ जकाँ अछि जे जखन मन हुअए बैग लिअ आ विदा होउ। ओइठाम तँ लोक कमाइले जाइए तँए खटब छइहे।"

की मनमे आबि गेल की नहि, से अखनो तक नहि बुझि पेलौं अछि, अनेरे हँसा गेल।

हमर हँसीकेँ हँसिया नहि बुझि पढुआ काका की बुझलैन से तँ वएह जनता मुदा सौनक बदराएल मेघ जकाँ बजला-

"बौआ, अरामसँ सुतैले अपना सबहक देश-दुनियाँ अछिए, तइले लोक अमेरिका किए जाएत। अखन एहेन स्थिति बनि गेल अछि जे जँ बौआकेँ नइ अबैले कहबैन तँ कहता जे दस बर्खपर दस दिन-ले ऐबेर आमक मासमे गर भेटल अछि, तहूमे अबैसँ बाबू मनाही करै छैथ। आ जँ अबैले कहबैन आ आम

नइ देखता तँ अनेरे कहता जे पिताजियो सेहो ठकि लेलैन।”

पढ़ुआ कक्काक बात सुनि मन मनाही केलक जे अनेरे अपन दुनू परानीक बीचक बात दुनियाँमे पसार करए चाहै छी आ दुनियाँक बात बुझैले छुटीए ने भेटैए। आब कि ओ जुग-जमाना रहल जे लोक दुनियाँकेँ घुमि-घुमि कऽ देखैले जाएत आकि दुनियाँकेँ मोबाइलमे समेटि पेंटक जेबीमे सदिकाल रखने रहैए। मुहकेँ बन्न केने रहलौं।

तैबीच पढ़ुआ कक्काक मनक पाशा जेना बदैल गेलैन तहिना बजला-

“बौआ, अपना सभ जखन गाममे रहै छी तँ गामे ने अपना सबहक देश-दुनियाँ सभ किछु भेल।”

ओना, नीक जकाँ पढ़ुआ कक्काक विचार नहि बुझि पेलौं मुदा गाम जँ देश-दुनियाँ बनि जाए तँ केकरा अधला लगतै? अपनो नीके बुझि पड़ल! बजलौं- “उचिते किने..!”

बिनु लक्ष्य कएल गोला गाछपर फेकलासँ जहिना कोनो पाकल आम टुटि कऽ आगूमे खसिते मन उत्साहित होइए जे अर्जुन सँ की हमर लक्ष्यवाण कमजोर अछि, तहिना मनमे भेल।

तैबीच गम्भीर होइत पढ़ुआ काका बजला- “बौआ, शरीर-ले पौष्टिक आहारो तँ जरूरीए अछि किने।”

सह पबिते सहटैत बजलौं- “एकरा के काटत।”

आरो गम्भीर होइत पढ़ुआ काका बजला- “सन्तुलित भोजनमे फलोक अनिवार्यता तँ अछिए किने?”

अनायासे मुहसँ निकैल गेल- “से तँ अछिए।”

पढ़ुआ काका बजला- “आमो ने फल छीहे।”

अपने बजा गेल- “अमृत फल छी, भलेँ सालक एके-डेढ़ मास किए ने भेटए मुदा एहेन मीठगर-सुअदगर आ रसगर आन कोन फल अछि।”

जहिना चौबट्टीपर पूबसँ अबैत यात्री, पच्छिम दिसक रस्ता छोड़ि जँ दच्छिन मुहेँ विदा होइए वा उत्तरसँ अबैत यात्री मुड़ि कऽ पूब मुहेँ विदा होइए तहिना पढ़ुआ काका मुड़ैत बजला- “पाँच हजार लोक अपना गाममे अछि।

बारह साए बीघा गामक रकबो अछिए। तइमे चारि साए बीघासँ ऊपर गाछिए-कलम ने अछि।”

पढुआ कक्काक बात ‘पाँच हजार गामक जनसंख्या’ सुनि मन आगू सुनैसँ पछुआ गेल। किए तँ गाममे जे टोले-टोल लोक अछि मन तेमहर चलि गेल। तँए आगूक बात कान लग तक आबि ओहिना ठाढ़े रहल मुदा नहि सुनि पेलौं। बजा गेल- “काका, लोकेटा नइ अछि, ओही हिसाबसँ परिवारो अछि। तहूमे आब तँ सहजे सुतपुतिया भट्टा जकाँ घौंदा-घौंदे परिवारो फड़ए सेहो लगल अछि।”

हमर बात पढुआ काकाकेँ अधला नइ लगलैन। ओ भरिसक थाहि लेलैन जे चीनीक रसक बोरमे डुमल जिलेबी जहिना रसा जाइए तहिना गोकुल सेहो विचारक रसमे रसपूर्ण भऽ गेल अछि तँए एना बचकन बोल मुहसँ निकैल रहल छइ।

अजमा कऽ पढ़आ काका आगू बजला- “बौआ, हमहीं-तूहीं ने गामक लोक होइक नाते गामक कर्त्ता-धर्त्ता सेहो भेलिऐ।”

आगू बजैक क्रम पढुआ काकाकेँ रहबे करैन मुदा वायु गुदगुदा कऽ पेटसँ निकैलते बजा गेल- “गामकेँ नीक बनाउ कि अधला बनाउ, गामक विधाता-ब्रह्म अपने सभ ने भेलिऐ।”

हमरा बाजबसँ भरिसक पढुआ काका आँकि लेलैन जे जइ चीजक संग केकरो अपनत्व बढ़ै छै आ प्रेमपूर्ण ढंगसँ समर्पित होइत–बिसवास करैत–प्रेमपन जीवन बीतबए लगैए, तही आसक बाट-बटोही ने अपनो सभ भेलिऐ।

चीनीक बोरमे जहिना रस पीब जिलेबी रसभर बनैए तहिना पढुआ काका सेहो रसाइत रसमे डुमल बात बजला- “बौआ, गामक जेते नीक जमीन अछि– माने बारहो मास उपज दइबला–तइमे अपना सभ फलक खेती, खास कऽ आमक गाछी-कलम, लगौने छी!”

बिच्चेमे बजा गेल- “हँ, से तँ लगौनहि छी!”

पढुआ काका बजला- “चारि साए बीघासँ कम गाछी-कलम अपना गाममे नहियेँ हएत?”

पढ़ुआ काका की बाजए चाहै छला आ की बाजि देलैन तइ बीचमे पड़िते अकबका गेलौं, जइसँ नाटक खेलेनिहार लोक जकाँ एकाएक चेहराक भाव बदैल गेल, जे पढ़ुआ काका आँकि लेलैन।

अपन विचारक भाव बदलैत पढ़ुआ काका बजला- "बौआ गोकुल! गाम-गामक गाछी-कलम–आमक–मिला कऽ लाखो बीघाक खेती सालो भरिक मरा गेल आ हम अपनाकेँ दोबर होइक चेहरा ऐनामे देखि रहल छी..!"

एक तँ पहिनहि पढ़ुआ कक्काक बात सुनि मन विधुआ गेले छल तैपर तेहेन आरो लदगर विचार लादि देलैन जे विधुर जकाँ आरो मन बिधुआ गेल

थोड़ेकाल धरि चुप रहि हारल-मारल बटोही जकाँ बजलौं- "से की काका?"

पढ़ुआ काका जेना निर्णायक दौड़मे पहुँच गेल छला तहिना बजला-

"जइ फलक खेतीमे सइयो बीघा जमीन बरदाएल अछि तइ गामक लोककेँ उचितो आहार भरि फल-सेवन नइ हुअए ई केते उचित छी?"

मन अकछा गेले छल। बजलौं- "अहाँक बात के मानत?" ❑

परिपक्व निरलज

सूर्यास्तक समय भऽ गेल रहै मुदा सूर्य डुमल नहि छल। अपनौं बाड़ीसँ काज कए नित्यकर्म दिस जेबाक विचार कइये रहल छेलौं कि मनसुख आएल आ बाजल- “रजनी कान्त भाय, बुधियार भाय जहलसँ एला अछि से चलू कने जिज्ञासा कऽ लिऐन।”

बुधियारक नाओं सुनिते देह जेना सिहैर उठल। सौंसे देहक रूइयाँ ठाढ़ भऽ गेल। ओना, अपनो बुझल छल जे परसू साँझमे बुधियार जहलसँ आएल, मुदा मनमे तेते घृणा ओकरा प्रति अछि जे मन भिन-भिना गेल। केकर जिज्ञासा करए जाएब। ओना, जिज्ञासा करब अधला विचार नहियेँ छी मुदा जिज्ञासोक तँ अपन महत छइहे। आइ जँ कियो जनसेवा वा अपने कोनो एहेन वृत्ति केलाक पछाइत जहल गेल रहैत जइसँ अपने वा जनमानसेक भलाइक विचार निहित रहैत तँ ओइ जिज्ञासाक अपन महत होइत, मुदा जे से नहि भऽ लुचपन्नीक कारणे जहलसँ आएल अछि, तेकर जँ जिज्ञासा करए जाएब तँ तेकर स्पष्ट माने होइए जे अपनो ओहने-ओहने लुचपन्नीक समर्थक छी। जे अपन विचारक ठीक विपरीत बात भेल। बजलौं- “मनसुख, तूँ जखन बुधियारक जिज्ञासा करए विदा भेल छह ते जाह, मुदा हम नइ जेबह।”

मनसुख समाजक ओहन लोक, जेकरा अपन कोनो वैचारिक दिशा नहि। की नीक आ की अधला तेकर विचार करैक ने जरूरते छै आ ने से बुझबे करैए। समाजक देखा-देखीक अनुकूल अपनो चलैए आ ओही विचारानुसार हमरो आबि कहलक। अपन तँ विचारो अछि आ विचारक अनुकूल चलैक दिशा सेहो अछि, तँए ओहन-ओहन काजकेँ अधला बुझि परहेज केनहि छी।

समाजमे बुधियारक परिवार सम्पन्न परिवार मानलो जाइए आ अछियो। सम्पन्न ऐ खियालसँ जे जेकरा पचास बीघासँ ऊपर अखनो जमीन छै। चारि भाँइक भैयारीमे भिनौज भेला पछातियो सोमनाथक अमलदारीमे, माने

बुधियारक पिता सोमनाथकेँ चारि साए बीघासँ ऊपर जमीन छेलैन। ओना, जमीन्दारी नहि छेलैन, जमीन्दारीक माने भेल रैयतसँ जमीनक मालगुजारी लेब। सोमनाथकेँ से नहि रहैन मुदा रूपैयोक आ धानो-चाउरक महाजनी तँ छेलैन्हे। अन्नक डेढ़िया चलै छेलैन। एक मनसँ डेढ़ मन सूदि-सवाइ चलै छेलैन। जइसँ केते लोकक जमीन कर्जा तरे सोमनाथकेँ भेल छेलैन। अपना मुइला पछाति सोमनाथक चारू बेटामे भिन-भिनौज भऽ गेल। ओना, किछु जमीन एक-दोसर भैयारीमे बेइमानियो भेलैन आ अपना भैयारीमे मुकदमावाजी सेहो भेलैन। जइसँ बहुत जमीन बिकबो केलैन। खाएर जे भेलैन मुदा पचास-पचास बीघा अखनो भैयारीक माथपर जमीन छैन्हे।

बुधियार चालू-पुरजा लोक। सभ पार्टी माने राजनीतिक पार्टीसँ साँठ-गाँठ रखनहि अछि। जखन जेहेन हवा बहल तखन तइ पार्टीक संग भऽ गेलौं आ अपना उल्लू सीधा करैत रहलौं, यएह चरित्र बुधियारक रहल। महाजनी सोल्होअना, माने सूदि-सवाइ समाप्त भऽ गेलैन।

सरकारी योजनानुसार, बैंक राष्ट्रीयकरण भेला पछाइत माने जखन इन्दिराजी प्रधानमंत्री छेली तखन जे बैंक सभ राष्ट्रीयकरण भेल, तेकर पछाइत आमजनकेँ सेहो बैंकक सुविधा प्राप्त भेल। ओना, शत-प्रतिशत लोककेँ सुविधा नहि भेटलैन। तेकर कारण बैंकक अपन आर्थिक स्थिति सेहो छेलै मुदा किछु लोककेँ सुविधा भेटबे केलैन। ओही सुविधानुसार बुधियार पाँच गोरेकेँ अगुआ माने पाँचटा साधारण किसानकेँ अगुआ बैंकसँ लोन दियौलैन। आ पाँचो अनपढ़ लोक जइसँ अपने लिखै-पढ़ैक लूरि नहि छेलैन। अँगुठाक निशानेसँ काज करै छला। बैंकक मैनेजरसँ साँठ-गाँठ करैत पाँचो गोटेकेँ लोन मंजूरी करौलैन। मुदा लोन लोनीकेँ माने कर्ज नेनिहारकेँ प्राप्त नहि भेलैन। ओ रूपैआ बुधियार अपने उठा लेलैन। साल भरिक पछाइत जखन बैंकक कर्जक तगेदा पाँचोकेँ भेलैन, तखन चारि गोरेकेँ जे मुँह दुब्बर छला, हुनका उनटा-सीधा बुझा बुधियार चुप केने रहला मुदा सिंहेश्वर चकित भेल।

सिंहेश्वरक बहनोइ सेहो चालू-पुरजा लोक। हुनका जा कऽ सिंहेश्वर सभ बात कहलैन जे महींस पोसैक नामपर तीस हजार रूपैआ बैंकसँ लोनक लेल दरखास्त देलिऐ। केते दौड़-बरहा केलाक पछातियो लोन नहि भेटल। जे साल

भरि पहिलुका बात छी। ऐ साल माने एक सालक बाद तीस हजार मूर आ ओकर सूद लगा पैंतीस हजार रूपैआ कर्जक तगेदाक नोटिश भेल अछि।

सिंहेश्वरक बात सुनि रघुवीर पुछलखिन- “अपने बैंकसँ रूपैआ उठेने छेलौं आकि कियो दोसराइतिक हाथे कारोबार केने छेलौं?”

तैपर सिंहेश्वर कहलखिन- “बुधियारक हथौटी कारोबार केने छेलौं। आइ-काल्हि, आइ-काल्हि करैत जखन तीन मास बीत गेल। ताबे खेतीक समय सेहो आबि गेल छल, हारि-थाकि कऽ छोड़ि देलिऐ।”

सिंहेश्वरक बात सुनि रघुवीर बुझि गेला जे एहेन-एहेन विचौलिया सभ एहेन-धन्धा करिते अछि। रघुवीर सिंहेश्वरकेँ संग केने बैंकपर गेला। बैंकक मैनेजरकेँ नोटिश देखबैत कहलखिन जे सिंहेश्वर भैंसक लोन लेल दरखास्त जरूर केने छला मुदा अन्तो-अन्त हुनका लोन प्राप्त नहि भेलैन।

बैंकक मैनेजर सभ कागजात मिलबैत कहलखिन- “हम किछु नहि कए सकै छी। तहूमे तीनिये मास एना भेल अछि, नीक जकाँ सभ किछु बुझलो ने अछि।”

रघुवीर पुछलखिन- “तखन की उपाय हएत?”

मैनेजर रस्ता बतबैत कहलखिन- “शिकायतिक एकटा दरखास्त बैंकोमे दऽ दियौ। जइसँ हम तत्काल तकेदा करब रोकि देब आ अहाँ आगू बढ़ि जिलाक जे बैंक अछि, जिनका अधीन ऐ सभ बैंकक कारोबार अछि, एकटा दरखास्त हुनका लग दियौ। जँ कोनो तेहेन जानकार लोक होथि तँ हुनका संग कऽ लेब।”

बैंकक मैनेजरक विचारानुसार रघुवीर सएह करैत कहलखिन- “ठीक छै सर, हम अपने सक्षम छी, किनको जरूरत हमरा नहि अछि।”

कहि रघुवीर घरपर आबि विचारलैन जे अनेरे तेसर-चारिमक भाँजमे की पड़ब। अगर बैंकक जिला ऑफिस जँ नहि किछु करत तँ सोझे न्यायालयमे केस करब। यएह विचारि रघुवीर जिलाक बैंक पहुँचला। बैंकक मैनेजर पंजाबी छला। रघुवीर अपन सभ बात सरदारजीकेँ कहलखिन। सरदारजी, तेसर दिनक समय बना ग्रामीण बैंकक शाखामे पहुँचला। रजिष्टर देखि बुझि गेला जे बैंकक मैनेजर आ विचौलियाक साँठ-गाँठसँ एहेन घटना भेल अछि। बैंकक मैनेजर तँ

अपन कागजी मिलानी एहेन हिसाबसँ केने जे पकड़मे नहि आबि रहल छला मुदा बुधियार तँ पकड़मे आबि गेल। ओही कारबाइमे बुधियार जहल गेल छल। जइमे लोनक आधा माने पनरह हजार रूपैआ जमा करौलाक पछाइत न्यायालयसँ, दस दिन जहलमे रहला पछाइत जमानत भेल छल।

हमर बात सुनि मनसुख बाजल- “भाय साहैब, अहाँ नहि जाएब तँ नहि जाउ, मुदा समाजक हैसियतसँ हम जाइ छी।”

बजलौं- “तोरा जेबासँ थोड़े मनाही करै छिअ।”

अदहा घन्टाक पछाइत मनसुख पुन: आएल। अबिते बाजल- “रजनीकान्त भाय, पहुँचते बुधियार भाय अहींक चर्च उठौलैन।”

बजलौं- “पहिने ई कहह जे बुधियारक मन केहेन बुझि पड़लह।”

मनसुख बाजल- “मिसियो भरि मन मलिन नहि बुझि पड़ल।”

बजलौं- “जखन ओइठाम, बुधियारक ऐठाम गेलह तखन आरो के सभ छला?”

मनसुख बाजल- “आर कियो ने छला। जाइते बुधियारकेँ पुछलयैन जे कोन लफड़ामे पड़ि गेलौं। कहलैन- हौ, जिनगीमे अहिना होइ छै। जखन पुरुख बनि धरतीपर जनम नेने छी तखन केस-फौदारी आकि जहल-हिरासतक डर करब। जँ से करब तखन एको दिन जीब सकै छी।”

मनसुख मुँहक बात सुनि मनमे उठल जे कहिऐ, ऐ धरतीपर निरलजोक की कमी अछि..! मुदा फेर अपने मन कहलक जे वेचारा मनसुख मुँह दुब्बर लोक अछि, एकरा कहिये कऽ की हएत। आइ जँ बुधियार सोझामे रहैत तँ किछु कहबो करितिऐ। बजलौं- “हमरा विषयमे बुधियार की सभ कहलखुन?”

मनसुख बाजल- “ओ बजला जे गामक सभ जिज्ञासा करए आएल मुदा रजनीकान्त अखन तक नहि आएल अछि।”

बुधियारक विचार सुनि मन तामसे श्रृंग चढ़ि गेल। एक दिस हुअए जे पहिने दसटा गारि दिऐ, दोसर दिस ईहो हुअए जे गारिये पढ़ब मुदा सुनत तँ नहि। तँए अनेरे गारिये पढ़ि कऽ की हएत। फेर मनमे भेल जे जखन बुधियार मनसुखक सोझामे हमर चर्च केलक से बड़बढ़ियाँ आ हम जँ मनसुखक सोझामे

दसटा बात कहबै से बड़ अधला। मनमे अबिते पुन: क्रोधक दोसर तोर मनमे उठि गेल। जेना-जेना तामस उग्र होइत गेल तेना-तेना देहमे थरथरी सेहो तेज हुअ लगल। बजलौं- “मनसुख, बुधियार हमर के, तीन मे कि तेरह मे। धनीक बापक बेटा छी तँ रहह, तइसँ हमरा कोन मतलब अछि। आइ तक कहियो एक सेर कि एक टका मांगए गेलिऐ।”

बिच्चेमे मनसुख बाजल- “भाय साहैब, एना जे उक्टा-पैंची करब तँ अनेरे झंझट हएत। जइ झंझटसँ लाभ किछु ने आ नोकसान ढेरी हएत।”

मनसुखक बात सुनि मियाद आरो गरमा गेल। बजलौं- “झगड़ा-झंझटक डर करब तखन मुँह उठौल हएत। मुँह उठबैले सभ किछु करए पड़ै छै। तोरा बुझल हेतह कि नइ बुझल हेतह। भऽ सकैए जे सुननो हेबह तँ बिसैर गेल हेबह।”

बिच्चेमे मनसुख बाजल- “कनी मोन पाड़ि दिअ। जखने मोन पाड़ि देब तखने मोन पड़ि जाएत।”

बजलौं- “पाँच साल पहिलुका घटना मोन पाड़ह। सुनने रहक ने जे माइनर एरीगेशनमे नोकरीक बहाली ले दस-बाहर गोरेसँ बीस-बीस हजार रूपैआ बुधियार नेने रहइ। ने केकरो नोकरी भेलै आ ने केकरो रूपैये घुमबैले तैयार भेल।”

मनसुख बाजल- “हँ, अदहा-छिदहा तँ मोनो अछि मुदा अदहा-छिदहा बिसरियो गेलौं। ओही रूपैआ ले ने रूपलाल आ गौरीशंकर बुधियारकेँ चौराहापर पकैड़ कऽ कहने रहै जे जँ तोरा बुते नोकरी नइ दियौल भेलह तँ हमर रूपैआ सूदि लगा कऽ लाबह। नहि तँ एको डेग आगू ससरऽ नहि देबह।”

बजलौं- “हँ!”

मनसुख बाजल- “हँ! हँ! आब मोन पड़ल। सौंसे गामक लोक जे बैस कऽ पनचैती केने रहैथ।”

बजलौं- “हँ। देखने रहक ने जे गाममे कियो बुधियारक जमानतदार होइले तैयार नहि भेला। तेहने निरलज-पतीत बुधियरबा अछि। ई तँ रच्छ रहल जे दीनानाथ काका अपना सिर सभ दोख उठबैत जान बँचौलखिन। नहि तँ

ओही दिन तेहेन मरम्मत दुनू गोरे कऽ दइतैन जे पुस्त-पुस्ताइन धरि बुधियारकेँ नीक जकाँ मोन रहितैन।”

दुनू गोरेक माने हमरा आ मनसुखक बीच गप-सप्प होइते छल कि गिरिधारी लाल पहुँचल। गिरिधारी लालकेँ पहुँचते बजलौं- “की हाल-चाल गिरिधारी?”

गिरिधारी लाल बाजल- “भाय साहैब, अहींसँ एकटा विचार पुछए एलौं हेन।”

बजलौं- “केहेन विचार?”

गिरिधारी लाल बाजल- “भाय साहैब, काल्हिसँ केते गोरे कहलैन हेन जे बुधियार जहलसँ एला हेन तँए जिज्ञासा कऽ लहुन।”

बजलौं- “ऐ मे हम कि विचार देबह। अपन जे मन हुअ से करह।”

गिरिधारी लाल बाजल- “भाय साहैब, अपना सभ एक विचारक लोक छी, जखन कोनो विचार करैक होइए तखन अहींसँ ने पुछि लइ छी। जँ अपना मने करैक रहैत तँ केने रहितौं किने।”

गिरिधारी लालक विचार सुनि मने-मन विचार केलौं जे पहिने गिरिधारीए लालक मनक विचार किए ने बुझि ली। बजलौं- “अपन की विचार होइ छह?”

गिरिधारी लाल बाजल- “भाय साहैब, जँ अपना संग नीक बेवहार बुधियारक रहैत तँ कनी सोचबो-विचारबो करितौं मुदा मन अछि कि नहि जे स्कूल लगहक जे पँचकठबा खेत अछि, ओइ खेतक बेचनामा दाम-दीगर हमरासँ केने रहए। अदहा रूपैआ सेहो दऽ देलिऐ आ पछाइत डाकपर चढ़ा ओइ खेतकेँ दोबर दाममे जागेसरक हाथे बेच लेलक। अपने जे रूपैआ देने रहिऐ ओ छह मास तक घिसियौर कटा कऽ देलक।”

ओना, ई बात अपनो बुझलो छल आ मोनो छल, मुदा दुनूक बीच बीचक सम्बन्ध दुआरे बजलौं- “कनी-कनी मनो अछि मुदा नीक जकाँ मोन नहि पड़ि रहल अछि।”

गिरिधारी लाल बाजल- “आठ-दस बरख तँ भइये गेल अछि, भरिसक तेँ बिसैर रहल छी।”

बातकेँ आरो मटियबैत बजलौं- “हौ गिरिधारी भाय, देखिते छहक जे केते धनचक्करमे सदिकाल पड़ल रहै छी, तँए भरिसक मनसँ उतैर गेल।”

गिरिधारी लाल बाजल- “भाय साहैब, बुधियारक बेटीक दुरागमन रहइ। हाथमे पाइ-कौड़ी नइ रहै जे काज सम्हारैत। हमरा कहलक जे गिरिधर भाय, स्कूल लगहक खेत बेचब। तोरा खेतक आड़ियेमे अछि, लऽ लएह। आठ हजार रूपैये कट्ठाक हिसाबसँ चालीस हजार दाम भेल। कहलिऐ जे काल्हिये रजिष्ट्री ऑफिस चलह, ओतइ सभ रूपैओ दऽ देबह आ तोहूँ रजिष्ट्री कऽ दिहह।”

बजलौं- “आब कनी-कनी बात मोन पड़ल जाइए।”

गिरिधारी लाल बाजल- “तइ पर ओ कहलक जे पाँचमे दिन बेटीक दुरागमन छी। बुझिते छहक जे बेटीक दुरागमनमे केतेक जोगार करए पड़ै छै। तँए अखन रजिष्ट्री ऑफिस जेबाक पलखैत नहि अछि। तहूमे बीचक दू दिन ऑफिस बन्नो रहइ। अपनो मनमे भेल जे बेटी-जाति तँ समाजक होइए, तँए बीस हजार रूपैआ लगले दऽ देलिऐ। बेटीक दुरागमन भेला पछाइत जखन रजिष्ट्री करैले बुधियारकेँ कहलिऐ तखन तीन-तेरह देखबए लगल। जमीनकेँ डाकपर चढ़ा देलक। सहए छी ओ बुधियरबा।”

बजलौं- “जमीनक की भेल?”

गिरिधारी लाल बाजल- “की हएत। डाकक भीर नहि गेलौं। जमीनक डाकक माने जमीने मात्रक डाक नइ ने होइए। समाजमे दुश्मनियो बढ़ै छै किने।”

जेते बात गिरिधारी लाल बाजल ओ तँ अपनो बुझले रहए, मुदा सात-आठ बरख पहिलुका बात रहै तँए अनठा कऽ बाजल छेलौं। बजलौं- “खाएर, जे जहिया भेल से तहिया भेल। औझुका की विचार छह से बाजह?”

जहिना बरखा भेलापर कोनो सुखल धारमे खेत-पथारक पानि एने धारा बनि बहए लगैए आ पाछूसँ पहाड़क पानिक संग गाम-घरक खेत-पथारक पानि मिलि पाछूसँ आबि धारक धाराकेँ प्रवल बना दइए जइसँ धारक पेट उफानपर उठि जाइए तहिना गिरिधारी लालक विचारमे उफान उठि गेल। बाजल-

“भाय साहैब, अपना समाजमे यएह सभसँ पैघ कमजोरी अछि जे लगले

लोक कोनो बातकेँ बिसैर जाइए। जइसँ समाजक गति-विधि कमजोर होइत-होइत एते कमजोर बनि गेल अछि जे अपन कोनो चीन्हि-पहचिन्ह रहिये नहि गेल छइ।"

गिरिधारी लालक विचारमे सह दैत बजलौं- "तखन की करैक विचार छह?"

गिरिधारी लाल बाजल- "अपन विचार अछि जे जिज्ञासा करए नहि जाएब।"

अपन जान बँचबैत बजलौं- "जखन अपन विचार नइ जेबाक छह तखन नइ जाह। गाममे केकरो कोइ मालिक छी जे नइ जेबह ते कियो गामसँ उजारि देतह।"

गिरिधारी लालकेँ जेना सह भेटलै तहिना बाजल- "भाय साहैब, जइ मनुखकेँ आइन नहि आ जइ बरदकेँ पाइन नहि ओहो कोनो मनुखे भेल आकि बरदे भेल।"

गिरिधारी लालक विचार सुनि हँसी लगि गेल। मुदा हँसीकेँ दाबि बजलौं- "गिरिधारी भाय, अपना समाजक सभसँ पैघ दुर्बलता यएह छी जे जइ समाजक पेटमे एते प्रवल शक्ति अछि जइसँ किछु कए सकैए, ओ समाज ओहन मरल पड़ल अछि जे जेकरा कोनो गति गुद्दा नहि छइ।"

ओना, गिरिधारी लालक मनमे बुधियारक प्रति आगि धधैक रहल छेलै, मुदा ऐठाम तँ ओ छल नहि जे ओइ आगिकेँ आरो धधकबैत। तैयो अपन मनक आक्रोशकेँ आक्रोशित करैत गिरिधारी लाल बाजल- "भाय साहैब, जँ समाजमे एकरूपता रहैत तँ ओहन-ओहन निरलज-पतीतकेँ बीच चौराहापर ठाढ़ कए समाज मुँहपर थुकैत। मुदा समाजो तँ तेहेन बनि गेल अछि जे के केकरा थुकत।"

बजलौं- "गिरिधर भाय, देखिते छहक जे समाजो बिनु डोराडोरिक मनुख जकाँ बनि गेल अछि। तखन तँ अपन इज्जत-आबरू बँचबैत मनुख बनि जीब ली यएह सभसँ पैघ उपलब्धि भेल।"

हमर बात जेना गिरिधारी लालकेँ जँचल तहिना बाजल- "ठीके कहलौं,

भाय सहाएब।”

बजलौं- “आब की करबह?”

गिरिधारी लाल बाजल- “कियो अपन जीवनक अपने मालिक छी। ओना, समाजमे रंग-बिरंगक दुष्ट सेहो अछि, मुदा ओइ दुष्टक बीच अपन विचार आ बेवहारकेँ जहाँ धरि सम्भव हुए तहाँ धरि रक्षा करैत जीवन जीब ली, यएह ने भेल मनुक्खक सभसँ पैघ मनुखपना।”

बजलौं- “हँ, से तँ भेबे कएल।”

गिरिधारी लाल बाजल- “ऐ भागक सुर्ज ओइ भाग किए ने उगै, मुदा अपन विचारकेँ कोनो हालतमे बदैल नहि सकै छी। नइ जाएब बुधियरबाक जिज्ञासा करए, जाइ छी अपन घर।”

बजलौं- “जाह।” ❑

परिवारक विघटन

चारि बजे भोरेमे कीर्तिदेव काका, ओछाइनपर ऐ-कर–सँ–ओइ-कर कछमछ करैत पड़ले-पड़ल विचारि लेलैन जे आइ ओ मंगलदेवसँ जेना-तेना भेँट करबे करता। भेँट करैक असल कारण छैन जे अपनाकेँ कीर्तिदेव काका सामाजिक लोक बुझै छैथ मुदा गाममे आइ चारि दिन मंगलदेवक माइक श्राद्ध-कर्म भेला भऽ गेल अखन तक नीक जकाँ हिसाब-किताब बुझि नहि सकला। कीर्तिदेव काकाकेँ अपनापर ग्लानियोँ उठलैन जे आजुक परिवेशमे अमेरिकाक समाचार, कोनो घटना भेलाक पाँचे मिनटमे दुनियाँ भरिक लोक बुझि जाइए आ अपने गामक समाचार चारि दिन बितलोपर नहि बुझि पेलौं हेन। जँ समयक संग नहि चलब तँ सामाजिक लोक केते दिन बनि रहब। आब कि समाजमे ओ धारणा रहल जे देशक उन्नति जनक उन्नति आ जनक उन्नति देशक उन्नति हएत।

जहिना कीर्तिदेव काका लोकक धारणा देखि विचारए लगला कि अपनो धारणा अपन सामाजिक जीवनमे देखलैन। जखन देशमे भुखमरी छल, मोटा-मोटी 1974 इस्वीक पूर्व तक जे अन्नक अभाव छल, तखन ऐठामक किसान खेतक आड़ि पकैड़ ओते श्रमो आ साधनो लगौलैन जइसँ खेतीमे उन्नति भेल आ देश अन्नक मामलामे आत्म-निर्भर भऽ गेल। मुदा ओइ आत्मनिर्भरताक भविष्य की भेल से तँ भोगिये रहल छी। की देशक जे उपजाऊ भूमि अछि ओइमे समुचित उपज भऽ रहल अछि। जखन समुचित पैदावार नहि हएत तखन खेतक आशापर जीनिहार लोकक समुचित विकास केना हएत। की एकरा मानि लेल जाए जे खेतक जे पैदावार अछि ओ सभसँ बेसी अपना देशक अछि? ऐ सँ बेसी उपज दैक शक्ति खेतमे अछिए नहि।

पड़ले-पड़ल कीर्तिदेव कक्काक नजैर पुन: अपन जीवन दिस घुमलैन। घुमिते अपन सामाजिक जीवन आड़ि पकड़लकैन। भेल तँ खाली सामाजिके

जीवनटा मे आड़ि पकड़ब भेल से बात नहि अछि। जीवनक जे क्षेत्र हुअए, आ ओ जँ मनलग्गू हुअए तँ आँखि मुनि ओइ क्षेत्रकेँ पकैड़ अड़ियबैत अपन जीवनक आड़ि बान्ही। जखन देह बन्हा जाए, जेना झाड़-फूँक केनिहार; झाड़-फूँक करैसँ पहिने अपन देह बन्हैत मंत्र पढ़ै छैथ- 'जल बान्हू, थल बान्हू, बान्हू अपन काया, सबा हाथ धरती बान्हू, नरसिंहनाथक दया।' कहू जे एते बन्हा गेला पछाइत कोन खेतक आड़ि कमजोर रहत जेकरा कोसी-कमलाक पलाड़ी तोड़ि देत..? मने-मन कीर्तिदेव काका विचारिये रहल छला कि बाँसक बीटमे सँ घुटकी चिड़ैक घुटकी आवाज कानमे पड़लैन। घुटकी कानमे पड़िते मन फुड़फुड़ाइत कहलकैन- "भोर भऽ गेल। ओछाइन पकड़ने जीवन थोड़े चलैए ओ तँ बाधित होइए।"

नीन टुटला पछाइत जे संकल्प कीर्तिदेव कक्काक मनमे उठल छेलैन ओ पुन: जागि कहलकैन- "आइ मंगलदेवसँ भेँट करबे करब।" जखने मंगलदेवक भेँट कक्काक मनमे एलैन तखने पुन: अपने मन कहलकैन- "पहिने अपन घरक गोसाईं पूजि लेब तखन ने दुनियाँक पुजेगरी बनि पुजबैत रहब। ई नहि ने जे मोलबी साहैब जकाँ आफन तोड़ि बाजए पड़ए जे 'संगेमे बैद मियाँ मरता है।"

दुनियाँ दिस ताकब तँ देखि पड़त जे अपना लगसँ लऽ कऽ सौंसे दुनियेँ गुरुवन पसरल अछि। मुदा तइमे अपन गुरुवन केहेन बनाएब तइले तँ अपने ने कारीगिरी सीखि कऽ करए पड़त। ओछाइन छोड़िते काजक महत्व माने संकल्पित क्रियाक महत्व, जेना पुन: कीर्तिदेव काकाकेँ सिरचढ़ भऽ गेलैन। अपन सभ क्रिया जेना मनसँ हटए लगलैन माने मंगलदेवसँ भेँट करैक प्रबल इच्छा, एक नम्बर काजक सूचीमे एने अपन नित्य-कर्मक सूची दू नम्बरमे आबि गेलैन, जइसँ बेहोशीक स्थिति बनियेँ गेलैन मुदा अपनाकेँ सचेत करैत चेतलैन जे भेल तँ मंगलदेवसँ भेँट करि कऽ मातारामक श्राद्ध-कर्मक हिसाब-किताब बुझैक अछि। क्षणमे क्षणाक होइबला कोनो तेहेन नहियेँ अछि तखन अपने उताहुलो हएब नीक नहियेँ हएत। जहिना सभ दिन अपना संग अप्पन बासभूमिकेँ क्रियान्वित करैत निकलै छी तहिना निकलब। चौक-चौराहाक लोक मंगलदेव छीहे जँ चौकपर भेटत तँ नीक जकाँ सभ गपो-सप्प हएत आ कर्मक समीक्षा सेहो संगे-संग चलबे करत। चौक-चौराहाक गप-सप्पक अपन महत्वो

अछिए। तहिना काजोक तँ अपन महत्व अछिए। भलेँ लोक काजक दौड़मे अकानि किए ने बाजैथ जे आब युगे बदैल गेल। श्राद्धकर्ममे पुरुखक निमित्ते दियादोवाद सभ नह-केश कटबै छला, आब देखै छी जे एक दियाद अमेरिकामे तँ दोसर चीनमे रहए, तैठाम नह-केश कटबए कर्ममे दियादवाद केतएसँ औता। मुदा से नहि, एक-एक क्रियामे, केतए-केतए केते विघटन भेल आ केतए-केतए सुघटन भेल, तइले तँ अपन होश राखैये पड़त किने।

संजोग बनल मंगलदेव चौकेपर, पहिलुके जकाँ माने माइक मृत्युसँ पहिने जेना रहै छल, तहिना बीचमे बैसल। जखने दस गोरे गोलिया कऽ बैसब कि सभकेँ सभ बिच्चेमे बैसब भेल। कीर्तिदेव काका सेहो बीचमे बैसते अकानि कऽ सुनलैन जे मंगलदेवेक माइक श्राद्ध-कर्मक गप-सप्प चलि रहल अछि। बिना किछु बजने कीर्तिदेव काका मंगलदेवपर नजैर गाड़लैन। जे मंगलदेवकेँ अपन माइक श्राद्ध-कर्मक विषयमे अप्पन मन की कहि रहल छइ। हारल सन छै आकि जीतन सन। माने जखने कोनो यज्ञ कर्म विधि-विधान पूर्वक सफल होइए तँ ओ सफल भेबे कएल, जँ से नहि भेल तँ केतौ-ने-केतौ ओ कमी, कम रहबे करत। ओना, सामाजिक स्तरपर समाजकेँ बीचमे रखि देखबो नीक होइते अछि। किए तँ कबीर बाबा कहबे केने छैथ- दो पाटन के बीचमे बाँकी बचा ने कोई। सभ ओइ पाटनक बीच छीहे, तँए अपन-अपन पाटनक पट करबाक ओरियान अपने ने करैत चलब।

अखन तक जेते कीर्तिदेव काका सुनलैन तइमे कनी-मनी तुष्टियो भेलैन आ कने-मने नहियोँ भेलैन। मुदा सभ गप तँ सुनने नहि छला तँए बिनु सुनल बात रहिये गेलैन। तैबीच गप-सप्पक एक पराग्राफ सेहो सम्पन्न भेल। चारू कात कीर्तिदेव काका हिया कऽ देखला जे कियो किछु बाजि तँ ने रहल अछि। मुदा कीर्तिदेवे काकाकेँ बजै दुआरे सभ चुप छला आकि अपन-अपन मनक बातकेँ विरामसँ मुराम जगह पकड़ा लेलैन से तँ वएह सभ जनता। सभकेँ चुप देखि कीर्तिदेव काका बजला- “मंगल केहेन रहल?”

ओना, कीर्तिदेव कक्काक अपन आत्मचेतन मानि लेलकैन जे मंगलदेव जहिना भीतर अछि तहिना ऊपरो तँ अछिए। माने जेहेन विचार तेहने मन बना काजो करैत अछि। ओना, एहनो विचारक दू-दिशिया बाट अछिए। नीकोमे नीक

आ अधलोमे अधला, मुदा से ऐठाम नहि अछि। मंगलदेव नीकमे नीक अछि। मंगलदेवक विचार सुनि कीर्तिदेव काकाकेँ गणेशजी मोन पड़लखिन। जहिना गणेशजी एक संगे लिखब बुझब दुनू जनै छला तेना तँ कीर्तिदेव काकाकेँ नहि भेलैन, मुदा विचारमे धक्का जकाँ जरूर लगलैन।

धक्का लगिते कीर्तिदेव कक्काक मन मंगलदेवक बचपनपर पहुँचलैन। माने जखन बच्चा स्कूलमे पढ़ै छल। मंगलदेव दसमा क्लासक विद्यार्थी, उम्र-पनरह बर्ख रहइ, पटना हाइ स्कूलक छात्र छल, तखन परिवारक बीच एहेन तनाव उत्पन्न भेल जे मतिछिन्नू जकाँ मंगलदेवकेँ बना वौड़ा देलक। से एक दिन, दू दिन वौड़ल नहि रहल, पाँच बर्ख धरि वौड़ल रहल।

संयोग बनल, एक दिन गामेमे, अपन गाममे, चारि-पाँचटा गुदरिया बबाजी, माने सारंगी लऽ कऽ अखनो अँगने-अँगने गोरखबाबाक गीत सभ गबिते छैथ, सबेर-सकाल गाम पहुँचल। ओही बीच मंगलदेव सेहो सारंगी नेने, एकरंगा पहिरने छल। पाँच बर्ख पूर्वक चेहरा मंगलदेवक लोकक बीच आबए लगल। मुदा मंगलदेवक बचपनक जीवनकेँ विचार तेना बदैल चुकल छल जे ने मंगलदेवकेँ अपन कोनो चीन्ह-पहचिन्ह रहल आ ने समाज वा परिवारजनक प्रति मिसियो भरि सिनेह।

बच्चाक नाओं सुनि (माने बीस बर्खक मंगलदेवक) एक्के-दुइये गामक लोकक भीड़ लागि गेल। एक दिस गुदरिया बबाजी अपन रोजगारमे घटा देखि मंगलदेवकेँ छोड़ैले नहि तैयार तँ दोसर दिस गामोक लोक अपन गामक बच्चाक रक्षा लेल तैयार भेला जे ई हम्मर बच्चा छी। बीस बर्खक मंगलदेव होशविहीन, बेहोशीक अवस्थामे छल।

स्त्रीगणक बीच दू दल बनि गेल। माने विचारक दू दल। किछु गोरे बाजैथ जे ई बच्चा फल्लाँगामवाली काकीक छिऐन तँ किछु गोरे बाजैथ जे बच्चा गुदरिया बबाजीक छिऐ। तइ संग किछु गोरे ईहो बाजैथ जे जखन गुदरिया बेना धारण कऽ लेलक तखन ओ गुदरिये भेल किने। ओना, किछु गोरे ईहो कहैत जे जँ केकरो घरसँ बच्चा लऽ जा कऽ गुदरिया बना लेने हुअए तखन? कोनो कि सियानमे गेल। आब मोछक पम्ह एलैए, आबक बाद जँ जाएत तखन ने हएत जे बालिग भेला पछाइत गेल। सेहो तँ नहियेँ अछि। मुदा ई सभ विचार

स्त्रीगणक बीच चलि रहल छल। पुरुखा-पुरुखीक विचार सोल्होअना दृढ़ छल जे बच्चा समाजक छी, समाजमे रहत, तइले जे हुअए।

ओना, जाबे पुरुख सभ गोलिएला माने दस गोरे जमा भेला, तइसँ पहिने मंगलदेवक माइयो आ परिवारक आनो-आन स्त्रीगण सभ आबि बच्चाकेँ देखि सामूहिक स्वरे बजली- 'मंगल नामक ई बच्चा हमर छी।'

अन्तोअन्त यएह विचार भेल जइसँ मंगलदेव पुन: परिवारमे घुमि कऽ आबि गेल। आबि तँ गेल मंगलदेव मुदा विकृत चेतनाक संग आएल। जहिना समजमे एक रहितो पशु वाणी विहीन रहने, एक-दोसराक बीच सिनेह नहि पेबैए तहिना मंगलदेवोक संग भेल। समज माने पशुक जेर। धीरे-धीरे मंगलदेवक चेतन-शक्ति पुन: जागृत हुअ लगल। जइसँ धीरे-धीरे मिडिल स्कूलक प्रध्यानाध्यापकक जेठ सन्तानक रूपमे पुन: जागृत भेल। वएह छी मंगलदेव।

ओना, मने-मन कीर्तिदेव काका ऐठाम आबि अँटैक गेला जे जइ बच्चाकेँ बालपने अन्हरा गेल माने कालासागरमे डुमि गेल ओ जँ मंगलदेव सन जवान बनि समाजमे परिवारक संग ठाढ़ अछि तँ की मंगलदेव वीर पुरुख नहि भेल? जँ नहि भेल तँ की कहल जाए..? कीर्तिदेव कक्काक मन भीतरे-भीतर तृप्ति भऽ गेलैन मुदा तेकरा मनेमे दाबि रखि किछु ने बजला। ओना कीर्तिदेव कक्काक मुँहक बकार बन्न रहैन मुदा नजैरिक पानि मेघौन रहबे करैन। मंगलदेवक रूपक रंग देखए लगला।

तइ बिच्चेमे मंगलदेव बाजल- "चाचाजी की कहब, परिवारक विघटन भऽ गेल।"

बाल-बोधक प्रश्नमे बेसी काटो-खोंट नीक नहियेँ होइए, जँ केतौ काट-खोंटक खगता बुझि पड़ैए तँ ओइ बच्चाक ऐगला वक्ता, माने जेकरा मुहसँ ओ सुनलक तेकरा दिस बढ़क चाही। जँ अपन चेतना रहितै तँ ओ दोसराकेँ बिना कहने अपने ओइ काजक पाछू लगि जाइत। परिवारक विघटन भऽ गेल? की विघटन भेल? विघटनक हजारो कारण अछिए। मुदा परिवार तँ एक सीमाक भीतर होइए तँए विघटनक कारणोक अपन सीमा हेबे करत। मंगलदेवक परिवारपर जखन कीर्तिदेव कक्काक नजैर अँटैक गेलैन तखन मास्सैबक माने

मंगलदेवक पिताक दृश्य देखलैन।

मंगलदेवकेँ वौड़ला पछाइत जखनसँ मास्सैवक कानमे पड़लैन तखनेसँ ओ कान ठाढ़ कए तक्का-हेरी शुरू केलाह। सैंकड़ो कबुला-पातीक संग सइयो स्थानक भ्रमण केलाह। मंगलदेवक ताका-हेरी कऽ मास्सैव सात दिनपर गाम आएले रहैथ, माने एकठामक पता लगलैन, तैठामसँ। घुमि कऽ आएल छला, जहिना देहक थकान तहिना टुटल मनक थकान सेहो रहैन। बेहोशीक अवस्थामे पहुँचले रहैथ, असाध्य बेथा मनमे रहबे करैन, गुम-सुम भेल अवस्था, रातिमे मरि गेला। तैबीच मंगलदेव वौड़ले छल। संजोग बनल, कीर्तिदेव काका पुन: बिना किछु बजने मंगलदेवपर नजैर देलैन कि मंगलदेव बाजल- "चाचाजी, सभ तरहेँ परिवारक विघटन भऽ गेल।"

मंगलदेवक विचार सुनि कीर्तिदेव कक्काक मनमे अनेको प्रश्न एकसंग चिड़ैक झुण्ड जकाँ धरतीपर एक्केबेर खसलैन। चारि भाँइक भैयारीमे सभसँ जेठ मास्सैव, बाँकी तीन भाँइक परिवारक जे गति-विधि रहलैन तइ अनुकूल मास्सैवक परिवारमे विघटन भेबे केलैन। शिक्षाक दौड़मे शेष तीनू भाँइक परिवार जेते आगू बढ़ि गेलैन तइ अनुकूल विघटन भेबे केलैन। तीन भाँइक भैयारीमे मंगलदेव जेठ भाय छैथ, परिवारक आर्थिक उपार्जनक साधन किछु जमीन छैन। ओना, गाममे एहनो किछु परिवार अछिए जे जमीन-जत्था रहला पछातियो अपने खेती नहि करै छैथ, दोसर तरहक जीवन बनौने छैथ। जेना पढ़ल-लिखल आ कमो-सम्म पढ़ल-लिखल आन-आन बेवसायसँ जुड़ल रहने अपन खेत-पथार बटाइ लगा लइ छैथ। तेहने परिवार मंगलदेवक, तँए खेतीक लूरिसँ सोल्होअना अनाड़ी।

जहिना मंगलदेवकेँ समुचित शिक्षा नहि भेट सकल तहिना उजरल-उपटल परिवार रहने, छोट दुनू भाँइकेँ सेहो नहि भेट सकल। परिवारक ओहन बेवहार बनल अछिए जे श्रमजीवीसँ, ऐठाम श्रमजीवीक माने शारीरिक श्रमसँ अछि, वुद्धिजीवीक सीमा पकैड़ नेने अछि जइसँ शारीरिक शक्ति दबले-दबाएल रहि गेल। जी खोलि कियो खेतमे मेहनत करैले तैयार नहि। एक तँ बहुत बेसी खेतो-पथार नहियेँ छैन, तैपर बटेदारक हाथे खेती भेने अपन सम्पत्तिक उचितो अंशमे कमी होइते छैन।

मंगलदेवक माए- वसुन्धरा, छियासीम बर्ख टपि सतासीम बर्खमे मरलखिन अछि। अपन सैंतीस बर्खक वैधव्य जीवनक पछाइत वसुन्धरा मरली अछि। तैसंग अपन जेठ बेटा माने मंगलदेवकेँ हेरेबाक सन्ताप सेहो भोगिये चुकल छेली। मुदा भाय मिथिला छी किने! ऐठाम एकसँ एक कीर्तिमान महिला स्थापित केनहि छैथ। गरीबीक अवस्थामे भूखकेँ केते पचा जीवन–प्राण–केँ बँचा सकै छी ओ ऐठाम माने मिथिलानी बखूबी जनै छैथ जइसँ जीवनक ओहन आशा बनले रहै छैन, जेहेन जीवनक बीच गुदस कऽ रहली अछि।

वसुन्धरा पूर्ण आशाक संग जीवनक हारि-जीतकेँ देखैत अपन छियासी बर्खक पूर्ण अवस्था बितौलैन। परिवारमे जेठ पुतोहुक नाते वसुन्धरा देखि चुकली जे केना-केना परिवारक गति रहल। मुदा किए केकरो कोनो अपन सोग-सन्ताप कहथिन। अकलेलो-बकलेल जँ तीनटा बेटा अछि तँ कियो आँगुर देखा 'निपुत्री' तँ नहि कहत। जँ कहत तँ ओकर पाँचो आँगुर नइ काटि लेबइ। उगैत-डुमैत अपन जुड़ल-टुटल परिवारक घावकेँ वसुन्धरा मने-मन भरि लेलैन। जइसँ पुरना माने पहिलुका सभ घाव पचि गेलैन। जहिना एक दिस अपन बिलटैत परिवारक घाव मनमे रहैन तहिना दोसर दिस अपन मिडिल स्कूलक प्रध्यानाध्यापकक पत्नीक गौरव सेहो रहैन। बीचक एक पीढ़ीक जीवनक खाधि बनियेँ गेलैन मुदा ऐगला पीढ़ी, माने मंगलदेवक भैयारीक पीढ़ी, तीनू परिवारमे माने तीनू भाँइक बेटामे इंजीनियर बनि ठाढ़ भइये गेल अछि।

चौक-चौराहाक गप-सप्प भेने बीचमे केते आरो गप-सप्प चलबे कएल। मुदा मंगलदेव ले धनिसन। अपने परिवारसँ वौड़ेलौं तँ वौड़ेलौं मुदा डुमकियो काटि परिवारक विघटनकेँ तँ बँचेबे केलौं। दोसर बात मंगलदेवक मनमे ईहो उठै छल जे गाममे जेमहर-जेमहर घुमै छी तेमहर-तेमहर लोक श्रवणे कुमार कहैए। श्रवण कुमारक पाछू मंगलदेवक काज नुकाएल छल। तीन बर्ख धरि, जखन माए, वसुन्धरा, ओछाइन पकैड़ लेलखिन, तेकर निमरजना मंगलदेव जहिना विचारसँ तहिना बेवहारसँ नीक जकाँ पार-घाट लगौलकैन। तँए आन जे बुझह मुदा अपन मन तँ सदिकाल कहबे करत जे हमरो सन बकलेल-ढहलेल बेटा माता-पिताक पार-घाट लगा सकैए। तइ बीच श्राद्धक भोजक चर्च उठबैत श्यामलाल बाजल- "भोजमे बारीक रही, गामक हँसारथक प्रश्नक भार तँ

ऊपरमे छेलएहे, मुदा लोकक (पंचक) जे छुताएब देखलौं से किछु ने फुरल।”

सोझमतिया मंगलदेव माफ करैत बाजल- “जाए दियौ! कोनो अनगौंआँकेँ बजैक मुँह तँ नहि ने रहए देलिऐ। दू साँझ भोज केलौं। छप्पनो प्रकार तँ खुएबे केलिऐन।”

बीचमे कीर्तिदेव काका टोकलखिन- “अपना गाममे तँ एकसंझू भोज सेहो होइए।”

मंगलदेव बजला- “हमरा सभमे, सौजनी प्रथा अछि। जइमे हमसभ पनरह गाम छी। ओना, कोनो-कोनो गाममे एकघरो-दू-घरो छी, आ कोनोमे बेसियो छीहे।”

“केते पंच भेल छेला?”

“दुनू साँझ मिला एक हजार बहरवैया आ डेढ़ हजार अप्पन गौंआँ-समाज छेला।”

कीर्तिदेव काका बजला- “चलू, निचेन भेलौं।”

मंगलदेव बाजल- “निचेन की हएब कपार, ऐठामक सभ परिवारक भार अनेरे ऊपरमे आबि गेल अछि।” ❑

बिनु खुट्टाक गाए

छठम-सातम दशकमे आने गाम जकाँ इमानपुर सेहो मिथिलाक गाम छल। ओइ समय वातावरणमे एहेन राजनीतिक चेतना जीवित छल जे जयप्रकाश बाबू, सूरज बाबू, कर्पूरीजी, धनिकलालजी इत्यादिक संग मधुबनी जिलाक मध्यसँ पच्छिम, अखुनका दरभंगा जिला तक, भोगेन्दजी, राजकुमार पूर्वे आ तेजनारायणजीक संग अनेको कार्यकर्ता, ओहन जुझारू छलाहे जे दिन-राति देशक समस्या आ समाधानक उपाय बुझेबो आ करैयोक पाछू बेहाल छला। तइ समय इमानपुरक सुमनकान्त हाइ स्कूलक विद्यार्थी छला।

समाज तिरहुतिया झोंकमे पड़ले छल, अखनो अछि जे जइ गाममे बेटीक बिआह केने छी ओइ गामक अकची-दोकची नहि बाजि सकै छी।

दिवानाथ आ निशाकान्तक बीच भैंसा-भैंसीक कनारि साहित्य क्षेत्रमे छेलैहे। जे नइ खून तँ देह-हाथ सिंगसँ चीर-फारि देबे करता। दुनू बीच वैचारिक दूरी एतेक जे भाँगक शर्वतमे जँ पचि जाइत तँ एक-दोसरकेँ उठाकऽ पीब लइतैथ। दुनूक जीवन आन सम्बन्धमे जे रहल होनि मुदा साहित्यिक मंचपर एक्केठाम बैइसै छैथ। दुनू पीतमरू साहित्यकार छथिए तँए गोष्ठीकेँ अपन अनिवार्य काज बुझितो एकठाम होइते छैथ।

साहित्यकारक बीच जे भोजनक सम्बन्ध रहल, माने जैठाम जेहेन स्वागत भेल तैठामक तेहेन चर्चा भेल आ जैठाम से नहि भेल तैठामक हँसारथ भेल। किछु इलाका एहेन अछि जे भोज-काजमे अगुआएल अछिए। भोजनक बीच जे अगुआएल-पछुआएलक विचार साहित्यकारक बीच अछि ओ तँ एकरूपता एनहि कमत। एकरूपताक तँ विराटपन वएह ने भेल जे जीवनक सभ दिशामे एकरूपता हुअए। ओ एकरूपता अनैले पछुआएलकेँ सेहो अगुआए पड़तैन आ अगुआएलकेँ सेहो शान्त-चित्तसँ अपन जगह ग्रहण करए पड़तैन।..वैचारिक मतभेदकेँ पाटैले सुमनकान्त साहित्यिक गोष्ठीक आयोजन

केलैन। जइमे खासकऽ खेबा-पीबामे जेहेन बेवस्था आनठामक कार्यक्रममे नहि भेल छल, तेहेन बेवस्था केलैन। कार्यक्रमक पछाइत बेवहारमे एकरूपता एबे कएल। खाएर जे भेल से भेल, संयोगसँ दिवाकान्तो आ निशाकान्तो कार्यक्रममे पहुँच गेला। निशाकान्तक सोभाव एहेन जे सदिकाल विरोधे निरमबैक प्रक्रिया मनमे चलैत रहै छैन, जइसँ भारपर जे बदाम अबै छल तेकर अंकुराकेँ टेढ़ कहैक आदत छैन्हे। कार्यक्रमक रूप देखि निशाकान्त भीतरे-भीतर तँ खूब जरला मुदा अपन भगिनीक सासुर इमानपुर रहने तिरहुतिया भौकमे पड़ि गेला। तँए गामक इतिहास, माने भगिनीक सासुरक परिवारसँ चिन्हा-परिचय करैमे बेसी समय लागिये गेल छेलैन।

दुखद पहलू बुझू आकि संयोग, बेटी पक्ष रहने इमानपुरक सम्बन्धी सभ ठेलने-ठेलने सीमाकात टपा देलकैन मुदा निशाकान्तो बाबू तँ निशाकरजी छथिए, महादेव जकाँ कार्यक्रमक प्रशंसा ओहन कइये रहला अछि जे अपन परिवारसँ सामूहिक रूपमे तय भेल। तय भेल जे 'सगर राति दीप जरय'क कार्यक्रममे एते तरहक भोज्य विन्यास केतौ नहि छल आ समाजक रूझानो एहेन जे दोसर कार्यक्रममे नहि भेल छल। निशाकरजी इमानपुरक साहित्यिक कार्यक्रम केलाक पछाइत अपन गाम गेला। संयोग बनलैन जे जइ भगिनीक सासुर इमानपुर, ओ गाड़ीसँ उतरला पछाइत डेरापर पहुँचते सोझामे पड़ि गेलैन। कौशल्या शिक्षिकाक संग शिक्षक-नेता, तँए बजैमे फड़कोर छथिए। निशाकान्त बाबू बजला- "कौशल, तोहर सासुर देखलियौ।"

सासुरक नाओं सुनि कौशल्या मुस्कुराइत कहलकैन- "रस्ताक थकान अछि। पहिने पानि-चाह पीबू, पछाइत स्नान कऽ लेब। ताबे हमहूँ खाइ-पीबैक ओरियान करै छी।"

जहिना भूखल राजा हुअ कि रंक, अपन वाध्यता देखैबते अछि। तहिना निशाकान्त बाबू बजला- "गाड़ी-सवारी आकि स्टेशने परहक कोनो सामान खाइबला होइए। पानियोँ तेहेन भेटैए जे नल-ट्यूवेलसँ भरि सफका शीशीमे 'शुद्ध जल' कहि बेचैए.!"

सासुरक नाओं सुनि कौशल्या ओहिना खुशी भेली, जेना बिआह-दुरागमनसँ पूर्व बिऔहिता-दुरगमनिया लटलट करैए। खाएर एकरा छोड़ू।

सुमनकान्तक साहित्य क्षेत्रमे प्रवेश द्वार वएह गामक साहित्य कार्यक्रम छिऐन।

अपना ऐठाम अदौसँ चलैन रहल अछि जे घरवासक भोज घरवारी करि कऽ अपन घर-दुआर समाजकेँ ई सोचि देखबै छैथ जे अपन देखा देने रहबैन तखन ने ओहो अपन देखौता। आकि हम दुनियाँकेँ खूब देखै छी, आ अपन कियो ने देखैए।

साठि इस्वीसँ पूर्व, जहिना इलाकामे शिक्षण-संस्थान आँगुरपर गनल छल तहिना समाजमे शिक्षणक गति सेहो मंथरे छल। मैट्रिक पास बेकती कोनो-कोनो गाममे छला। जँ मैट्रिकमे कनियोँ नीक रिजल्ट होइ छल तँ इलाकामे चर्चाक मुद्दा बनि जाइ छल। गुलाम देशक जे रूप-रेखा होइए ओ अपनो मिथिलाक छेलैहे। तहूमे लोक इमानपुरकेँ घेघहा गाम कहै छल। कहब की घेघहा गाम? ..इमानपुरक लोक अस्सीक दशकसँ पूर्व इनारेक पानि पीबै छला आ पोखैरमे नहाइ छला।

इनारक पानिमे आयोडिनक कमी छल, जे पानि समाजक लोक पीबै छला। तइसँ गरदैनमे फलकान आबि जाइ छेलैन, तँए गामक चारूकातक गामक लोक इमानपुरकेँ घेघहा गाम कहै छल, मुदा सातम दशकसँ पानिक महत्वकेँ बुझिते समाज, माने इमानपुरक लोक, एते जागि गेला जे इनारक उपटान तँ भेबे कएल जे खेतक पटौनी ले सेहो प्रति आठ बीघाक हिसाबसँ गाममे बोरिंग गड़ि गेल। दमकलक भरमार भऽ गेल। किसान तेते जागि गेला जे चाउर-दालिक संग तीमन-तरकारी आ फल-फलहरी सेहो आन गामक लोकक हाथे बेचए लगला। तरकारीक खेती भेने गाममे बेचैबलाक जरूरत पड़ल। दस गोरे रोजगार करब शुरू केलैन।

सत्तैरिक दशक तक अबैत-अबैत सुमनकान्तकेँ समाजक दशा-दिशाक बोध भऽ गेलैन। भोगेन्द्रजीक राजनीतिक कार्यक्रम जहाँ-तहाँ चलिते छेलैन। मंचक इमानदार वक्ता भोगेन्द्रजी छेलाहे। अपना इलाकामे, माने मधुबनी जिलाक पूबरिया इलाकामे, समाजवादी विचारधाराक बोलवाला छल। खाएर जे छल तइसँ सुमनकान्तकेँ कोन मतलब छेलैन, मतलब छेलैन अपन समाजकेँ आगू बढ़ाएबसँ।

देश स्वतंत्र भेला पछाइत जहिना गाम-गाम मिला कऽ पंचायतक निर्माण

भेल तहिना पंचायतमे मुखिया, सरपंच, पंचायत सेवकक बेवस्था सेहो भेल। गाम-गाममे जहिना भूदानी कार्यकर्ताक बैसार, पदयात्रा इत्यादि होइ छेलैन तहिना राजनीतिक कार्यक्रम सेहो चलिये रहल छल। जातिवादी विचारसँ सभ प्रभावित रहबे करैथ।

जातियोक तँ अजीव लत्ती अछिए, जे शीत-रौदमे जँ मरनासन्नो होइए तँ साओन-भादोमे लतैर-चतैर जाइते अछि। कहब जे अमरलत्ती जकाँ बिनु जड़ि-सिरक अछि, से नहि अछि। माटिक भीतर ओकर जड़ियो छै आ सिरो तँ छइहे। तँए कखनो-काल एहेन सुनबे करब जे 'एहेन विचार जाति-पाँजिसँ ऊपर उठि करू।'

कम्युनिस्ट पार्टी भोगेन्द्रजीक नेतृत्वमे करीब छठम दशकसँ बाढ़ि-रौदीक समाधानक आन्दोलन चलि रहल अछि। जिलाक लोक जे आब कोसी, कमला, बागमतीक महत्वकेँ बुझि रहला अछि। भोगेन्द्रजीक आन्दोलित विचारकेँ सभ राजनीतिक दल रोकलैन। नतीजतन समाज पछुआ गेल।

सातम दशकक अन्त आ आठम दशकक शुरूमे सुमनकान्त कौलेजसँ निकैल गेल रहैथ। दुर्गापूजाक मतभेद इमानपुरमे शुरू भेल। कहब जे पहिनेसँ होइत अबैत पूजामे मतभेद भेल? ..नहि प्रथमे पूजामे मतभेद भेल। 'लूटमे चरखा नफ्फा' सएह भेल इमानपुर गामकेँ। अखन बेसी नहि कहब, मात्र एकटा बात कहब।

अपना इलाकामे ठाम-ठाम दुर्गापूजा बहुत दिनसँ होइत आबि रहल अछि। खास कऽ सोति-ब्राह्मणक गाममे। पछाइत आनो-आन जातिक गाममे शुरू भेल। इमानपुरक समाजमे, जहिना कबीर मतक विचार तहिना आनो-आन धार्मिक सम्प्रदाय सबहक विचारक लोक छेलाहे। जइसँ दुर्गास्थानमे बलिप्रदानक विरोध भेल। गामक लोकक विचार एकमुँहरी जे गाममे दुर्गापूजा हुअए मुदा वलिप्रदान नहि हुअए। ब्राह्मण दुनू दिस बटा शक्तिहीन भइये गेल छला। दुर्गापूजाक माने भेल दस दिनक दसो दुआरिक पूजा। सौंसे गामक हिन्दूक पूजा।

आइ पचास बर्खक दुर्गापूजा इमानपुरमे भऽ गेल छैथ मुदा अखन तक वलिप्रदान, छागरक वलि, नहि कबूल केलैन अछि। जखन कि चारूकातक

आन-आन गाम सबहक दुर्गास्थानक दुर्गा वलि चढ़ौआ लइते छैथ। एकर माने इमानपुरक सीमा बन्हाएल अछि? नहि, सोल्होअना नहि बन्हाएल अछि, अखनो इमानपुरक किछु गोटा चढ़ौआ कबुला मानि आन-आन गाममे छागर चढ़ैबते छैथ। तँए कहब जे इमानपुर गामक दुर्गाकेँ आन-आन गामक लोक लड्डू-मिठाइ आकि फल-फलहरी नहि चढ़बै छैन, सेहो बात नहियेँ अछि। आजुक परिवेशमे देवालय सभक सेहो व्यापारीकरण भइये रहल अछि। अपन जीवनमे सुमनकान्त जहिया जे केलैन से सभ बिसैर अपन विचार अपना जीवन ले स्थापित कइये नेने छैथ।

1967 इस्वीक पछाइत इमानपुरमे सुमनकान्त अपनो कम्युनिस्ट पार्टीक सदस्य बनला आ अपना गाममे सेहो सदस्य बना पार्टी ठाढ़ केलैन। समाजक अधिकांश जातिक पढ़ल-लिखल नौ-जवान संगठित भेला। सुमनकान्तकेँ सेहो दिशाक बोध कौलेजे जीवनसँ भेलैन, मुदा जखन ओ गाममे, माने इमानपुरमे चारि दिनक पार्टी क्लास चलौलैन तखन विचारक दिशामे आरो मजगूती एलैन।

जमगर कार्यक्रम भेल, मार्क्सवादी चिन्तक-साहित्यकार जनार्दन चौधरी, प्रभुनारायण राय, डॉ. खगेन्द्र ठाकुर, चन्द्रकेतु शर्मा आ भोगेन्द्रजीक संग अनेको साथी कार्यक्रममे भाग लेने रहैथ। समाजपर काफी प्रभाव पड़ल। समय आगू बढ़ल।

1952 इस्वीमे स्थापित पंचायत चुनाव, 1962 इस्वीमे भेल। अधिकांश गाम (पंचायत) ओहने छल जैठामक लोक पंचायतक महत्व बुझिते ने छला। मुदा तँए कहब जे सौंसे जिलाक पंचायतमे अहिना भेल, सेहो नहियेँ भेल। जमि कऽ लड़ाइ सेहो चलल। तहूमे मधुबनीक पच्छिमी क्षेत्रमे भूमि आन्दोलन जमि कऽ चलि रहल छल, गाममे आर्थिक जागृति आबि गेल छेलइ। ओना, आजुक जे बजारोन्मुख दिशा समाजकेँ भऽ गेल अछि जइसँ गाम गामे बनल रहि गेल।

आजादीक दौड़क जे आन्दोलनी पीढ़ी छला, ओहो दिनानुदिन, उमेर पेब, कमए लगला। जइसँ राजनीतिक चेतनाक ह्रास समाजमे भेल। सेवाक रूप बदैल गेल। सस्ता नेतृत्व बढ़ि गेल। कोनो स्थानमे कोनो पूजाक अगुआइ केलौं, जइमे कमेबो केलौं आ समाजक बीच प्रभावशाली सेहो भेबे केलौं। तहिना

आनो-आन एजेन्सी सभ सक्रिय अछिए। खाएर जे अछि, अखन एतबे कहब।

दिशाक बोध भेने सुमनकान्त अपन गामकेँ खँतिया कऽ, माने गामक बीच जे कोनो शोषित बेवहार चलि रहल छल तेकरा सभकेँ गतानिकऽ, अपन सेवा कर्म शुरू केलाह।

ओना, राजनीतिक मंचपर बैस विचार करब तखन अन्तर्राष्ट्रीयसँ परिवारक संग मनुक्खक जीवन अनेको स्तरक समस्यासँ ग्रसित अछिए ओही समस्यासँ मुक्ति कराएब भेल सेवा।

सुमनकान्त अपन जीवनकेँ गाम-समाजसँ जोड़ि सामाजिक, आर्थिक आ राजनैतिक- सभ दिशामे समाजकेँ आगू-मुहेँ धकेलैक विचार करैत सभसँ पहिने समाजक बीच जे खेबा-पीबाक छुति बनल अछि, ओइ दिस बढ़ला। समाजक कोनो जाति शेष नहि बँचला जिनका ऐठाम समाजक सभ जाति नहि खेलैन। समाजमे धार्मिक स्थान सभक एहेन धारणा बनले अछि जे कियो कहैत जे 'जाति न पूछो सन्त को पूछो आत्मिक ज्ञान।' तहिना दोसर दिस सेहो एहेन चलैन अछिए जे जातिसँ ऊपर उठि जखन कोनो धार्मिक सम्प्रदायसँ जुड़ै छी तखन सभ एक भेलौं, तँए एकठाम बैस खेबा-पीबामे कोनो परहेज नहि। ओना, समाजमे बेटा-बिआहक बरियाती आ मृत्युक बरियातीमे सभ जातिक प्रवेश सभठाम अछिए, मुदा सामाजिक रूपमे एहेन बेवहार सेहो अछिए जे नहेबोकाल आ खेबोकाल अलग-अलग भइये जाइत अछि। सामन्ती शोषण ऐ रूपेँ समाजकेँ जकड़नहि छल जे पढ़लो-लिखल विद्वत प्रवर छुआ-छुतक विचार करबे करै छला आ करितो छथिए। जघन्य-सँ-जघन्य अन्याय बच्चा सभक संगे भेल अछि। चौकीपर बैसल सहवर्गी छात्रकेँ लगमे गुरुजी बैसबै छला आ आन-आन जातिक बच्चाकेँ ठेहुनियापर बैस चौकीपर किताब-कौपी रखि पढ़बै छला। खाएर जे छल ओकरा गुरु बुझू सतगुरु नहि। सतगुरु वर्तमान जीवन देनिहार भेला।

सामाजिक रूपमे दुर्गापूजामे सबहक प्रवेश भेलैन। सबहक माने सभ जातिक बच्चियाकेँ कुमारि मानल गेल, जइसँ खेनाइ खेबाक संग अनेको बेवहारमे एकरूपता आएल। तैसंग खेती-गिरहस्तीक संग सुमनकान्तक जीवन चलिते छेलैन।

ओना, विस्तारमे नहि जाएब। जहिना शिक्षाक क्षेत्रमे तहिना किसानी जीवनमे गाम बहुत आगू बढ़ल। समाजक वैचारिक विचारक हवामे पार्टीक बीच टूट शुरू भेल। पंचायत तेसर चुनावी दौड़ आएल। पार्टीक बीच कसगर दराइर जाति आ वर्गक रूपमे उभरल।

अखन तक समाजक जे सामाजिक रूप छल, तइमे सूदखोरी, जमीनक बटाइ, सिकमी, भूदान इत्यादि आन्दोलन सभ कोनो-ने-कोनो रूपमे चलिये रहल छल। अनेको बेकती केस-मुकदमामे सेहो पड़ले छला, मुदा तइमे भूदानक जिलाकार्यालय नाटकक विपटाक काज करए लगल। एक-एक जमीनक पर्चा तीन-तीन, चारि-चारि गोरेक नाओंसँ बनबए लगल।

सामाजिक नेतृत्वक सेहो सस्ता भइये गेल अछि। शहर-बाजारक आमदनी कोनो-ने-कोनो रूपमे गाम आबिये रहल अछि। सुमनकान्त समाजक बीच अपन अधिकार, माने भोँटक खरीद-बिक्री देखि अपनाकेँ चुनावक राजनीतिसँ कात करैत 2015 इस्वीक चुनावसँ सोल्हन्नी अलग कऽ लेलैन।

ऐबेरक चुनावमे सुमनकान्त स्पष्ट भऽ गेला जे ने कोनो उम्मीदवारक पक्षमे रहता आ ने विपक्षमे रहता। समाजक पंचायत छी समाजक लोक अपन निर्णय करह। अही विचारकेँ अगुआ सुमनकान्त अपनाकेँ पाछू कऽ लेलैन। ओना, सुमनकान्त ईहो देखि रहल छला जे बिनु जड़ि-छीपक उम्मीदवार सभ मैदानमे छैथ। कियो एकरंगा पहीरि तँ कियो पाइयक हाथे चुनावमे तैयार छथिए। मनमे चुट्टी धारीक अनुभव छैन्हे। जहिना चुट्टीक धारीमे विपरीत दिशासँ अबैत चुट्टीकेँ सभ चुट्टीक संग मुँहमिलानी होइते अछि, से हेबे करत। जइसँ सभकेँ अपन राजनीति आ राजनीतिक बोध हेबे करतैन। पछाइत अपन भविसपर नजैर गाड़ि अपन जीवन बनौत।

एहेन विचार मनमे उठैत-उठैत सुमनकान्तक मनमे महाभारतक ओ विचार उठि गेलैन जे द्वापर युगमे भेल छल।

द्वापर युग ओहन युग छीहे जैठामक परिस्थिति कृष्ण सनक सुदर्शन चक्रधारीक जन्म देलक आ आगूओ देबे करत। मुदा से अखन नहि, अखन एतबे जे महाभारत द्वापर युगक महाभारत भेला पछाइत अर्जुन आ कृष्ण एकठाम बैस विचार केलैन जे जहिना अंगरेजी शासनकेँ हटबैमे देशक जनता सक्रिय

रूपसँ भाग लेबे केलैन। कियो अंगरेजक पीठू बनि जन-गणक घरमे आगि लगौलैन, माए-बहीनिक इज्जत लुटलैन आ वएह सभ अपनाकेँ पैघ आन्दोलनी बनि स्वतंत्रता सेनानीक पेंशन उठबै छैथ। खाएर, ओइसँ जखन आगू बढ़ै छी तखन गाम-गाममे जे आन्दोलनी पेट साधि जीवनकेँ लड़ाइक दावपर लगा अपन जानो देलैन, परिवारो बिलटौलैन आ हुनका कियो जानियोँ ने रहल छैन।

जिनकर नाओं लोक जनैए तिनकर पचहतरमी साल गीरहपर मोन पाड़ल जाइ छैन, मुदा जे हेरा गेल छैथ की तिनकरो पचहतरमी साल गीरहपर मोन पाड़ल जेतैन? जानसँ बाजी लगा जे आन्दोलनमे अपन हिस्सेदारी देलैन, हुनकर चर्च के करत? समाजक ओहन रूप बनि गेल अछि जइसँ समाजक सेवाक अरथे बदैल गेल अछि। खाएर जे अछि से अछि तइसँ द्वापर युगक अर्जुन आ कृष्णकेँ कोन मतलब छैन, मतलब छैन जे कौरव-पाण्डवक बीच जे लड़ाइ भेल ओ दुनियाँक चौदह हजार लड़ाइमे एकटा ओहो भेल।

कृष्ण अर्जुनकेँ कहलैन- “अर्जुन, अहाँ लड़ाइक महानायक बनलौं, हम तँ अस्त्र उठेबे ने केलौं, एक-दू ठाम जे उठेबो केलौं तँ ओ चोरनुकबा भेल, सघन लड़ाइमे उठाएब नहि भेल। लाखो सेना अपन भागीदारी देलैन, तइमे बहुत गुमनामो रहि गेला, तँए एकबेर ढोल्हो दऽ दियौ जे महाभारतमे जिनकर जे योगदान छैन, ओ अपना मुहेँ बजता।”

कृष्णक विचार अर्जुनकेँ जँचलैन। तँए कृष्णक विचारकेँ मानि अर्जुन सौंसे देशमे, पाण्डव देशमे, ढोल्हो दिया देलखिन। ढोल्हो दिएलाक बाद अर्जुनक मनमे उठलैन जे जँ समय निर्धारित नहि कऽ देबैन तखन तँ सुननिहारेक बीच फेर महाभारत शुरू भऽ जाएत, तखन केकर नेतृत्व चलत? की फेरसँ महाभारत कराएब? कोनो देश होउ कि परिवार-समाज आकि बेकती-विशेष, महाभारत तँ एक्केबेर हएत।

अर्जुन कृष्णकेँ कहलकैन- “एक तँ सौंसे देशक लोककेँ एकठाम बैसा सभकेँ सुनि-सुनि बजैक मौका देबैन, तखन अपन केलहा काज बिसैर जेता आ सुनलहे बातक जवाब दिअ लगता, तखन थाह केना पएब?”

अर्जुनक विचार कृष्णकेँ जँचलैन। बजला- “दोहराकऽ ढोल्हो दिया दियौ जे पहिने महाभारतक विचार बाजैथ, पछाइत सुनल-सुनाएल विचारक जवाब,

सवाल-जवाबक कार्यक्रममे दैथ।”

जहिना अर्जुन ढोल्हो दियौलैन तहिना महाभारतक रचयिता सभ अपन-अपन उपस्थिति दर्ज करबैत अपन-अपन वक्तव्य देलखिन। तइमे सबहक भावना यएह रहैन जे जँ हम नहि गुल्ली-पेंच केने रहितौं तँ महाभारतक सिहिन्ता अर्जुनकेँ लगले रहि जइतैन।

कृष्ण अर्जुन दिस देखि बजला- “की अर्जुन?”

अर्जुन उत्तर देलैन- “जनिहेँ मीयाँ धुनै बेरिया।”

चुनाव सम्पन्न भेल। जहिना एकक राजनीतिक प्रलय भेल तहिना दोसरक उदय सेहो भेबे कएल अछि। नरकोमे ठेलमठेल होइते अछि। एक-एकक जनगणना हएब शुरू भइये गेल अछि। ❑

गामसँ गाए उपैट गेल

अपना ऐठाम माने मिथिलाक धरतीपर, गाएकेँ माए कहल जाइए। प्रश्न अछि 'माए' मनुक्ख छैथ मुदा 'गाए' तँ पशु छी जे जानवरो छीहे, तखन?

मिथिलाक दर्शन देखि चुकल अछि जे जहिना माइक पेटसँ माने मनुक्ख-माए पेटसँ बच्चा रूपमे मनुक्ख पैदा लइए तहिना माए-गाएक पेटसँ बच्चा पशु पैदा लइए, तखन? हँ! ओना, टुकड़ी-पुरजाक रूपमे अनेको समता अछि, मुदा पूर्ण रूपेँ मात्र एकटा साम्य देखार रूपमे अछि। ओ अछि, दू साए सत्तैर (270) दिनमे दुनूक पेटसँ बच्चाक जन्म। जहिना माइक पेटमे दू साए सत्तैर दिन, माने नअ मास, मनुक्खक बच्चा रहैए तहिना गाइयोक बच्चा पेटमे रहैए। ऐठाम ई नइ बुझब जे मनुक्खमे ओहन मनुक्ख नइ छैथ जे आगू-पाछू नइ होइ छैथ.! माने जे सात मासक पछाइत माने दू साए दस दिनक बाद आ बारह मास माने तीन साए पैंसठ दिनक बीच बच्चाक जन्म नइ होइए.? शास्त्र-पुराणमे एहेन कथा भरले अछि। तहिना जानवरोमे तँ अछिए जे पाँच माससँ लऽ कऽ बारह मासक बीच सेहो बच्चा होइते अछि। भलेँ ओ कुत्ता-बिलाइसँ लऽ कऽ हाथी तक किए ने हुअए। मनुक्खक एकटा सीमा ब्रह्माजी बना देलैन जे मनुक्ख हाथी बरबैर भऽ सकैए माने बारह मासपर बच्चा दऽ सकैए मुदा पाँच मासक कुत्ता-बिलाइक बरबैर नइ भऽ सकैए। तँए मनुक्खक अन्तिम छोर सात मास भेल। एकर माने ई नइ बुझब जे मनुक्खमे कुत्तपना आकि बिलाड़िपना गुण नइ अछि। ऐठाम एहनो तँ अछिए जे एक कुत्ता हाकिम बनि कुरसीपर बैइसैत अछि माने सी.आई.डी. विभागमे, आ दोसर सिपाही-कुत्ता सलामी बजबैए। खाएर जे अछि से रहऽ, अपन-अपनठाम सभ ठीक-ठाक रही।

मिथिलाक भूमि आइये नहि, अदौसँ पशु-पालन करैत आबि रहली अछि। ओना, पशु सेहो अनेको रूपो आ रंगोक अछिए, कमो-बेस सभ तरहक जानवरक पालन ऐठाम सर्कसक बाघ-सिंहसँ लऽ कऽ बकरी तक होइते आबि

रहल अछि। केतबो बाघ बकरीकेँ खाइए वा बघुआएल रहैए तैयो बकरीक वंश कहाँ उपटल अछि। गाइक पालन भेने गाए अप्पन खाँढ़ बनाइये नेने अछि जे मिथिलाक धरोहर छी। बाध-बोनमे भरि-भरि दिन गाए-महींसकेँ चरा किसान खेबाक दूधो आ हर जोतैक बच्छो-बरद बनबैत भोजनसँ उपार्जन तकक ओरियान कइये नेने छला। गौ पालनमे बुद्धदेव यएह चेतौनी देलैन जे 'भाय, बच्छासँ बरद होइए, जे खेतीक मुख्य साधन छी, तँए गाएकेँ सुरक्षित रखैक अछि।'

अनेको फल-फलहरी, अनेको पशु-पक्षीक पालन, अनेको रंगक अन्न, फूल, फल इत्यादिक सेवा मनुक्ख अप्पन स्वरूपमे करैत आबि रहला अछि, तइमे जे उन्नति हेबा चाही से नहि भऽ कुभेला भेले अछि। गाइक ओहन नस्ल बनि गेल अछि जेकर दूध फुच्चीक नापसँ नापल जाइए। कहब जे अपना ऐठाम फुच्ची छोड़ि दोसर कोनो नाप नइ अछि? से तँ एहेन नापक डोलो-बाल्टीन अछिए जे दस-बीस किलो एकबेरमे नापि सकै छी। मुदा नपने रहत आ वौउसे ने रहत तँ नापब कथी? खाएर किछु अछि तैयो तँ गाइयेक दूध अछि, जँ खुरचनो भरि गाइक दूध कण्ठतर पहुँचत तँ ओ अमृत पाने भेल किने जे गाइये-महींससँ भेटैए।

गाइयक पालन अपना ऐठाम सतयुगेसँ होइत आबि रहल अछि। जाबे धरि परिवारक गठन नइ भेल छल, ओना अहूमे कहले जा सकैए जे राता-राती परिवारक गठन भेल आ समाजक संग दुनियाँक निर्माण भेल? परिवारक गठनक हजारो बर्खक इतिहास रहले अछि। छिट-फुट रूपमे अखनो अछिए। खाएर अखन से नहि, अखन बस एतबे जे जखन मनुक्ख जंगली रूपमे छला तँ गाइयक शिकार करै छला आ खाइ छला। ओना, आजुक परिवेशमे सेहो एकटा प्रश्न उठिये रहल अछि जे गाए (दूध दइवाली) आ बरद (हर-गाड़ी खिंचैबला) दुनू एक्के वंशक पेटसँ जन्मैए। गाइयक वंश दूध देत, मुदा बरदक वंश की करत? जखन कि गाड़ी-सवारीक रूपमे इंजन-गाड़ी आ खेत जोतैक रूपमे अनेको रंगक इंजन आबि रहल अछि, जेकर गति पशुसँ बहुत बेसी अछि। ऐठाम एकटा प्रश्न विचारणीय अछि।

अपना ऐठाम गाइयक सेवा हजारो बर्खसँ भऽ रहल अछि, तइ वंशमे

केतेक सुधार भेल अछि? हजारो बरख पूर्वमे जे फुच्चीक नापसँ गाइयक दूध नापल जाइ छल से अखनो जीवित अछि आकि ओकर परिवर्तित विकसित रूप आबि गेल अछि? जे मालदह आम हजारो बरख पूर्व अपन रूपमे छल ओकर आजुक परिवर्तित-विकसित रूप की अछि? एक नहि अनेको प्रश्न अछि। मिथिलाक जे धरती ऋषि, मुनि, तत्त्ववेत्ताक जन्मभूमि सभ दिनसँ रहल अछि आ अखनो अछिए। गाम-गाममे पैघ-पैघ वैज्ञानिक, दार्शनिक, राजनेता पैदा लइये रहला अछि आ आगूओ लइत रहता। की हुनकर दायित्व मातृभूमिक प्रति किछु ने छैन? ओना, मूल प्रश्न अछि समाज सत्तासँ। समाजक गठनक जे प्रक्रिया अछि ओ एहेन सघन अछि जे एकसूत्रमे आनब जटिल अछिए। दुनियाँक दृष्टिपटलपर मिथिलाक भूमि अखनो ओ रूप धेनहि अछि जे हजारो बरख पूर्वमे रहल। ओना, गाइयक पालनक सेहो अनेको रूप अछि। सुभ्यस्त परिवार, राज्यसत्तासँ जुड़ल जे छला ओ नीक-नीक नस्लक गाए जरूर पोसै छला। मुदा समाजक बहुसंख्यजनक खुट्टापर वएह वंश (गाइयक वंश) जीवित अछि जे हजारो बरख पूर्वमे छल। नीक नस्लक गाए, हुनका सभकेँ माने सुभ्यस्त लोककेँ दू रूपमे उपलब्ध होइ छेलैन, पहिल आन-आन क्षेत्रसँ अनै छला जइसँ अपना खुट्टापर ऐगला वंश तैयार होइ छेलैन, तैसंग दोसर ईहो छेलैन जे गाम-गाममे केतौ-केतौ दोगला गाए भेने सेहो उपलब्ध होइ छेलैन।

देश स्वतंत्र होइसँ पहिने, माने 1947 इस्वीक पूर्व जे पशुपालनक स्थिति छल ओ अखनो मिथिलामे जीवित अछि। पानिक अव्यवस्थासँ माने धार-धूरक अनियंत्रित व्यवस्था रहने मिथिलाक ओ स्थिति अखनो बरकरार अछिए जे पूर्वसँ चलि आबि रहल अछि। गाए पालनक लेल हरियर चाराक जरूरत पड़ैए जे खेतमे उपजैए। खेत पानिमे डुमल रहैए, तखन हरियर चारा औत केतएसँ? जखन चारा नहि तखन पशुपालन केना? तहिना माछक स्थिति सेहो अछि। गाम-गामक पोखैर बाढ़िक पानिमे भँसिया जाइए.!

देश स्वतंत्र भेलोपरान्त जहिना मिथिलांचलक आन-आन गामक किसान अधनीनू सुतल छला तहिना किसानक देश भारतक सत्ता किसानक जिनगीक लेल तीन-चारि दशक तक सुतल रहल।

जहिना आजादीक पूर्वक किसानक रूप छेलैन तहिना आजादीक

पछातियो एक नमहर अन्तराल तक रहलैन। ओना, देश आजाद भेल मुदा देशक शासन सूत्र खण्ड-पखण्ड छल। हजारो देशी राजा आ राजाक छोट भाए जमीन्दार छेलाहे। ओना, किछु सूत्र एहेन छेलैहे जे पूरा देशकेँ एकमे बन्हने छेलाएहो आ अखनो बन्हने अछि।

समाजमे वैचारिक रूपमे जहिना अनेको धारा प्रवाहित भऽ रहल छल तहिना किसानक जीवनमे सेहो छेलैन्हे। देशक पहिल पंचवर्षीय योजनाक समय पानिक लेल जहिना पंजाबक किसान जगला तहिना केरल आ बंगालक किसान खेतक अधिकारक विषमताकेँ मेटबैक दिशामे बढ़ला। ओना, मिथिलांचलक किसान सेहो खेतक विषमताक अधिकारक सम्बन्धमे उठिकऽ ठाढ़ भेला। जेतेटा देश अखन अछि तेतेटा आजादीक समय सेहो छल, मुदा खेतीक समुचित बेवस्था नइ रहने, आन-आन देशसँ अन्नो कीनए पड़िते छल। तैसंग लोकक एहेन स्थिति छेलैन जे भरि पेट कुअन्नो ने भेटै छेलैन। साँझक-साँझ दिनक-दिन भूखल रहै छला। जखन कि अखुनका जकाँ ने एते लोके (जनसंख्या) छल आ ने अन्नक खरचे।

मिथिलांचलक जहिना आन-आन गाम अछि तहिना विलासपुर सेहो अछि। आने गाम जकाँ विलासपुरोक लोक कखनो, माने कोनो मुद्दापर, एक सूत्रमे बन्हि एकजुट भऽ जाइ छैथ तँ कखनो हजारो फन्नाक बीच पड़ि हजारो टुकड़ीमे टुटियो-फाटि जाइ छैथ। से कोनो आइये भेल आ पहिने नइ होइ छल, सेहो बात नहियेँ कहल जाएत किए तँ एना सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि।

विचारधाराक रूपमे गाम विभाजित अछिए। स्वतंत्रताक पछाइत जमीनक एहेन प्रश्न फँसल जे एकदिस सशस्त्र विद्रोह, माने एकदिस खेतिहर किसान, खेतमे काज करैबला किसान, हथियार उठौने छला तँ दोसर दिस सर्वोदय आन्दोलन, सेहो जगल। खेती करैमे, माने खेतक उन्नति करैमे बंगालक किसान जहिना जागल छला तहिना केरलोक किसान जागल छेलाहे। गुजरात मध्यप्रदेश, राजस्थान, पंजाब इत्यादिक भौगोलिक बनावट अलग अछिए। अनेको रंगक विचार, माने एकदिस गाँधीजीक प्रभावशाली विचार जे शब्दक रूपमे तँ सोल्होअना खाँटी तेल जकाँ शुद्ध छेलैन मुदा बेवहारिक रूपमे जीवन-आसमानक दूरीसँ कनी बेसीए अन्तर छेलैन तँ दोसर दिस सर्वोदयी

विचार जे सोल्होअना भाषणे आ रेडिओए तक सीमित छल। उदाहरणक रूपमे देखि सकै छी जे देशक जमीनक छअम हिस्सा दानमे भेटि गेल अछि मुदा अखनो तक घर-बन्हैक दस धुर घराड़ियो किए ने भेल? तँए कहब जे सुभाषबाबू, भगतसिंह, चन्द्रशेखरक विचारधारा समाजसँ मेटा गेल अछि, सेहो नहियेँ अछि। अनेको महापुरुषक विचार अखनो जीवित अछि। भलेँ ओकर धारा किए ने मरि गेल हुअए। विचारधाराक प्रभाव उपार्जनपर पड़िते अछि। विचारधारामे ओ शक्ति अछि जे जीवनक धारमे झूठकेँ, माने मिथ्याकेँ भीरमे नहि आबए देलक तँ एकर विपरीत एहनो तँ अछिए जे सत्यकेँ भीर नइ आबए दइए। 'झूठे लेना, झूठे देना, झूठे भोजन और चबेना'। 'राम-राम' कहि कऽ घृणा नइ करू। रामे-नाम सत्य छी, जे गति सभकेँ हेबे करत। बुझल बात तँ अछिए जे जखन अभिमन्युकेँ मृत्यु एलैन तखन अर्जुन आकि कृष्णे कहाँ बँचा सकलैन। तहिना दशरथकेँ जखन मृत्यु एलैन तखन रामे कहाँ बँचा सकलखिन।

मिथिलाक आने-आन गाम जकाँ विलासपुर सेहो एकटा गाम छीहे। जखन गामे छी तखन अनेको रंगक जाति, अनेको रंगक धर्म, अनेको रंगक किरिया-कलाप सेहो अछिए। किसानी जीवनक गाम रहने अधिक-सँ-अधिक लोक किसानी कर्ममे लागल छेलाहे आ अखनो छथिए। गामक जमीन किछु समटल लोकक हाथमे छेलैन, बाँकी सभ जमीनविहीन छला, माने भूमिहीन। जमीन समटाइक कारण मालगुजारी समयपर नइ देने जमीन नीलाम होइ छल आ दोसराक हाथमे चलि जाइ छल।

आठम दशकमे, माने 1970 इस्वीक पछाइत, किसानक बीच देशमे नव जागरण भेल। जहिना रौदी एला पछाइत रौदीक चर्च लोक करए लगैए, बाढ़ि एला पछाइत बाढ़िक आ ठनका खसला पछाइत लोक ठनकाक विषयमे जानए चाहिते छैथ, भलेँ किछु लोक पहिले जकाँ मेघक ढनढनाएब टा बुझै छैथ।

किसानोन्मुखी सत्ताकेँ भेने अनेको रंगक योजना बनल। ऐठाम हम राजनीतिक परिस्थितिक चर्च नइ करै छी जे बंगला देशक लड़ाइक पछातिक परिस्थिति की अछि। ऐठाम बस एतबे जे देशमे करीब दू करोड़ अस्सी लाख हेक्टेयर ओहन भूमि अछि जे अन्न उपजाबै-जोकर अछि। समुचित बेवस्था भेने ओइमे तीन अरब टन अन्नक पैदावार हएत। खाएर जे हएत आकि भऽ रहल

अछि से अखन नहि। अखन बस एतबे जे किसानोन्मुखी शासन सत्ता भेने पशुपालन सेहो आएल। विलासपुर गाममे गोविन्द भाय, ओहन पाँच गोरेकेँ संगोर केलैन जिनका सभकेँ भोजमे परसन लगा-लगा दही खाइत देखै छला। आसानीसँ संगोर भेलैन। होइतो अहिना अछि जे जेकर जेहेन भावना तेहेन से भगवानक रूप देखैए।

पाँचो गोटेकेँ संग लगौने गोविन्द भाय ग्रामीण बैंकसँ तीन-तीनटा गाए, तैंतीस प्रतिशत सब्सिडीमे दियौलैन। चारि गोरे आन छला आ पाँचम गोविन्द भाय अपने रहैथ। हरिहर क्षेत्र मेलासँ गाए आएल। बैंकक लोनकेँ लोन जकाँ बुझलैन, तँए गाइयक पूजीसँ भोजे-भात आकि धिया-पुताक बिआहे-दान नइ केलैन।

पाँचो गोरे समय-कु-समय एकठाम बैस गाइयक सम्बन्धमे विचारो-विमर्श करए लगला आ मौका-कु-मौका गाइयक डॉक्टर सभसँ सेहो राय-विचार लिअ लगला। तैबीच एकटा आरो भेल, इंजेक्शनसँ पाल देबाक आ पाँचटा साँढ़ो बाहरी नस्लक विलासपुर गाम आबि गेल। नमहर-नमहर साँढ़ आ गाइयो-बकरीसँ बेसी सज्जन-सहमेलू, जइसँ धिया-पुता खेलौना बुझि साँढ़क आगूमे खाइबला वस्तु फेंक, घन्टा-घन्टा भरि साँढ़क कखनो नाङैर डोलबैत छल तँ कखनो रागक तरमे, माने पेटक तरमे चोरा-नुक्की खेलाइ छल।

दू साल बितैत-बितैत विलासपुर गाम दूधक नीक पैदाबार करए लगल। गाए पोसनिहारक मनमे एहेन विश्वास बनि गेलैन जे जीविका लेल नीक साधन गाइयो पोसव छी।

पहिनेसँ अबैत माने पूर्वसँ अबैत गाए-पोसवक विचारमे संक्रमण भेल। संक्रमण ई भेल जे जखन गाए-पोसव कृषि आधारित अछि, तखन किए ने एकरा उन्नति बनौल जाए। रंग-रंगक विचार लोकक मनमे जन्मो लेलक आ तेकर क्रियान्वयन करैक कर्म सेहो बढ़ल। माने ई जे किछु गोरे अप्पन गाएकेँ बेचि नव किस्मक गाए कीनि पोसए लगला। किछु गोरे अप्पन देशी नस्लक गाएकेँ बारही साँढसँ पाल खुआ नीक-नीक बाछी पैदा केलैन। जे तीन साल बितैत-बितैत दुधारू गाए बनि खुटापर ठाढ़ भऽ गेल।

अपना सभक इलाका बाढ़िक छीहे। गोटे साल छोड़ि सभ साल छोट कि

पैघ बाढ़ि अबिते अछि। बाढ़ि अबैक सेहो अनेको कारण अछिए। कोनो साल बरखा बेसी भेने नमहर बाढ़ि अबैए तँ कोनो साल हिमखण्ड बेसी पिघलने सेहो नमहर बाढ़ि अबिते अछि। खाएर जे अबैए। छोट-छोट बाढ़ि एने कमो-बेस पशुपालन (गाए पोसव) प्रभावित होइते रहल। 1987 इस्वीक बाढ़ि किसानी जीवनकेँ ओइ रूपेँ तोड़ि-मरोड़ि देलक जे जीवने तहस-नहस भऽ गेल।

आने गाम जकाँ विलासपुर गाममे सेहो गोटि-पङरा गाए बँचल, नहि तँ सभ मरि गेल। गाए पोसनिहार किसान बेबस भऽ गेला। ने खेतक उपज (घास) बँचलैन आ ने आगू लगबैक अवसर भेटलैन। तहिना गहुमक भूस्सी आ नारक टाल बाढ़ियेमे नष्ट भऽ गेलैन। खाली हाथ मुँहमे केना जाएत आ जँ जेबे करत तँ भेटत की? विलासपुरमे गाए पोसनिहार किसानक जीवन 1975 इस्वीसँ 1987 इस्वी धरि, माने बाढ़िसँ पूर्व तक, स्वर्णयुग रहलैन। अखन तक अबैत-अबैत किसानी जीवनमे, मिथिलांचलक किसानी जीवनमे जबर्दस्त सम्भावना बनल अछिए।

अप्पन गतिशील जीवनकेँ गतिहीन होइत देखि मनमे उठल जे किए ने पाँचो गोरे माने एकसंग जीवन बनौनिहार कम-सँ-कम पाँचो बेकती एकठाम बैस विचार करी जे अछैते प्राण काहि काटि मरि जाइ आकि नवका जीवन धारण करी? यएह सोचि गोविन्द भाय ऐठाम विदा भेलौं। गोविन्द भाय जीवनक संगीए-टा नहि साथी सेहो छैथ।

माथपर हाथ नेने गोविन्द भाय गुम्म भेल असगरे दरबज्जापर बैसल छला। चेहरा देखि, माने गोविन्द भाइक, मनमे उठल जे भरिसक हुनकर अप्पन दिन-दुनियाँ मोन पड़ि रहल छैन। देखल दिन लोक बिसरियो केना सकैए। लग्गी भरि, ऐठाम पचही परगनाक लग्गीक चर्च कऽ रहलौं हेन, जैठाम साढ़े छह हाथक अछि, तँए पुर्णिया, अरड़िया आकि नेपालसँ सटल अल्लेपुर परगनाक लग्गी नइ बुझब, जखन लगमे पहुँचलौं तखनो तक गोविन्द भाय मुड़ी उठा नइ तकलैन। जेना हम्मर पहुँचबाक कोनो सुधि-बुधि (सुनि-गुनि) छेलैन्हे नहि। अपने मन विचार देलक जे जँ कियो घोर अन्हारमे पड़ल होथि वा घोर सोग-पीड़ामे, तखन उपकैर कऽ टोकब घीबोसँ चिक्कन होइते अछि। बजलौं- “भाय साहैब, गोड़ लगै छी।”

हम्मर आवाज तँ गोविन्द भाइक कानमे जरूर पहुँचलैन, जइसँ आँखिक पल खुजलैन मुदा चीन्हि नइ सकल छला, तँए बिना किछु बजने आँखि खोललैन। तइ बिच्चेमे दोहराकऽ बजलौं- “भाय, मन झपैस गेल छल?”

दहिना हाथसँ आँखि पोछैत गोविन्द भाय बजला- “राधेश्याम, आँखि झपैस गेल छल कि मन, तेकर सुनि-गुनि रहबे ने कएल तँए भकुआ गेल छेलौं।”

गामक सहरगंजा लोक तँ गोविन्द भाय छैथ नहि, गेनहारी-पटुआ सागक बीचक दूरीकेँ बेराएब बुझिते छैथ। बजलौं- “एते दिन जे नीक कि अधला बीतल ओ नीक-अधलामे गेल, मुदा अखन मरैयोक मन तँ नहियेँ अछि जे सभकिछु छोड़ि देब।”

बिच्चेमे गोविन्द भाय बाजए चाहला कि रास्तापर अबैत रूपलाल आ सुनरलालकेँ देखलैन। अपने उत्तर मुहेँ ठाढ़ रही तँए नजैर ओमहर नइ गेल। गोविन्द भाय हाथक इशारा केलैन। जइसँ बुझि गेलौं जे कियो आबि रहला अछि। पाछू उनैट कऽ तकलौं कि रूपलाल आ सुनरलालकेँ अबैत देखलयैन। एकठाम चारि गोरेकेँ देखि मन हरिया गेल। मुहसँ अपने फुटिकऽ निकलल- “भाय साहैब, की कहब! आएल पानि गेल पानि, बाटे बिलाएल पानि। सएह भेल।”

गोविन्द भाय मुँह खोलि हँसला नहि, मुदा बिहुसैत बजला- “राधेश्याम, दुनियाँ तँ मनुक्खकेँ पैदा कऽ दूटा हाथ करैले, दूटा पएर चलैले आ बजै-भुकैले आ खाइले एकटा मुँह देने अछि। तेकर बादो कि ओ हाथक आँगुर पकैड़ टहलेबो करता।”

बिनु विचारले बजा गेल- “से केना टहलौता, हुनका अपना हाथ-पएर छैन्हे नहि तखन ओ अपने केना टहलता जे अहाँकेँ आँगुर पकैड़ टहलौता। सभ गणेशेजी नइ ने छैथ जे मूसो आ बाघोकेँ नाङैर पकैड़ टहलौता।”

रूपलाल अबिते गोविन्द भाइक आगू अप्पन दुनू जोड़ि बजला- “भाय साहैब, आगू केना जीब?”

गोविन्द भायकेँ जेना मुहेँमे ओरियाएल छेलैन तहिना मूसक नाङैर जकाँ

बुझि बजला- “अपना सभ एक्कैसमी सदीक लोक भेलिऐ। पढ़ि-लिखिकऽ हाथक औंठा छाप देब बिसैर गेलिऐ, मुदा औंठा छाप बढ़ि गेल, से केना तरघुसकी बढ़ि गेल? एहेन-एहेन जे जाल वा जालीसभ अछि से तँ अपने आँखिये ने देखबहक।”

गोविन्द भाइक विचार रूपलाल बुझलैन कि नहि से तँ रूपलाल जनता, मुदा बुझि पड़ल जे जेना झील-समुद्रमे हेलनिहार हेलवाह सभ पानिक ऊपरमे चीत गरे सुति, रोहु माछक पाँखि जकाँ हाथक इशाराक हेलसँ हेलैत, सरसरा कऽ आगू चलि जा रहल अछि। तैबीच रूपलाल आगू ससरैत कहलकैन- “भाय साहैब, आइये नहि आइसँ पनरह साल पहिनहि जहिना अप्पन जीवनक संगी मानलौं तहिना अखनो मानै छी। तँए..?।”

अप्पन भार देखि गोविन्द भाय बजला- “रूपलाल, अपने चालिये लोक नीको बनैए आ अधलो तँ बनबे करैए। मुदा से नहि, आइ हमसभ एक्कैसमी सदीमे छी, माने मशीनक युगमे, जैठाम चौबीस घन्टामे चारा घास उपजौल जाइए, तैठाम पशुपालन तँ असान भइये गेल अछि किने। तखन तँ अपने...।”
❑

बनरफाँस

दस बर्खक पछाइत घोघरडीहा स्टेशनपर सुलेमानसँ भेँट भेल। एते दिनसँ अपनो स्टेशनपर नइ गेल छेलौं। तेकर कारण भेल छल जे जाबे छोटी लाइनक गाड़ी चलै छल ताबे बेसी जाइ छेलौं आ जहियासँ बदलावक काज चलए लगल, गाड़ी बन्न भऽ गेल तहिया अपनो आएब-जाएब छुटि गेल।

सुलेमानसँ भेँट होइते जेना पुरना जीवन नव बनि आगूमे ठाढ़ भऽ गेल। जइसँ मनोक उत्साह आ विचारोक उत्साहमे, खरही कहियौ कि केरा, बाँस कहियौ कि अड़िकंचन जकाँ पोना देलक। ओना, खरही-अड़िकंचनक पोनाकेँ पेंपी कहल जाइए, बाँसक कोंपर आ केराक पौंच, मुदा सभक रूप-रंग एकरंगाहे अछि।

घोघरडीहाक रेलबे प्लेटफार्मपर, पूबसँ पच्छिम मुहेँ सुलेमान अबै छल आ पच्छिमसँ पूब मुहेँ अपने जाइत रही कि जहिना अपन नजैर सुलेमानपर पड़ल तहिना सुलेमानोक नजैर हमरापर पड़लै। चिन्हैमे कनी-मनी धोखा जहिना अपना भेल तहिना सुलेमानोकेँ भेलै, तँए ने ओ किछु बाजल आ ने अपने किछु बजलौं। धोखा हएब सोभाविके छल, किए तँ दस बर्खक पछाइत दुनू गोरे आमने-सामने भेल छेलौं। सुलेमानो डेगे-डेग आगू बढ़ि रहल छल आ अपनो डेगे-डेग आगू बढ़िये रहल छेलौं, जखन एक-दोसराक लगमे दुनू गोरे आमने-सामने एकठाम भेलौं तखन नीक जकाँ अपनो चिन्हलौं जे सुलेमान छी आ ओहो चिन्हलक जे कमलकान्त छी। देखिते सुलेमान बाजल- “कमल भाय.! गप-सप्प-कुशल-समाचार चाहे दोकानपर हेतै, पहिने चाहक दोकानपर चलि दुनू भाँइ चलू चाह पीबै छी।”

पहिल भेँट आकि पहिल दिन तँ सुलेमानसँ छल नहि जे नाकर-नुकर करितौं आकि कोनो बहन्ना बनैबितौं। पचासो दिनसँ ऊपर एकठाम बैस दुनू गोरे खेबो केने छी आ चाहो पीनहि छी, तैठाम नाकर-नूकरक कोनो प्रश्ने ने

अछि। तहूमे अप्पन समाज तँ तोहूसँ आगू बढ़ि वैवाहिक सम्बन्ध धरि स्थापित केनहि छैथ।

बिना किछु बजनहि सुलेमानक पाछू विदा भेलौं। जहिना रेलबे स्टेशनक लाइनसँ प्लेटफार्म-स्टेशन धरि बदलल, तहिना स्टेशनक बगलमे, माने स्टेशनसँ उत्तर जे दोकान-दौरी छल सेहो सभ बदैलिये गेल अछि। होइतो अहिना छै, जखन किछु अधलासँ नीक बनैए तखनो आ जखन नीकसँ अधला बनैए तखनो, रूप परिवर्तित होइते अछि। ..चाहक दोकानपर बैसिते सुलेमान बाजल-

"कमल भाय, तोरा खेबाक इच्छा हुअ आकि नइ हुअ मुदा हमरा भूख लागल अछि तँए दूटा रसगुल्ला आ एकटा सिङ्गहारा पहिने खा पानि पीबह, पछाइत गप-सप्प करब।"

सुलेमानक विचार सुनि अपने धकमका गेलौं। धकमका ई गेलौं जे अपने किछु खेबाक मन नइ अछि, मुदा संगीक संग तँ पूरए पड़त। तैबीच सुलेमान अपन भूख कहि दूटा प्लेटक फरमाइश दोकानदारकेँ कऽ देलक। अपने केना मुँह खोलि बजितौं जे हम नइ खेबह। खाएबो-पीब तँ सम्बन्धक एकटा मजगूत कड़ी छीहे। किछु ने बजलौं।

दू-दू टा रसगुल्ला आ एक-एक टा सिङ्गहारासँ सजल प्लेट दोकानदार आगूमे राखि देलक। सुलेमान हमरा दिस देखए लगल जे पहिने अतिथि-अभ्यागत कौर उठेता तखन ने घरवैयाक कौर उठत। सुलेमान तँ अपने घोघरडीहा स्टेशनक धांगल लोक अछि, जहाँ ने कौर उठेलौं कि सुलेमानो उठौलक।

जलखै केलाक पछाइत बजलौं- "सुलेमान, दस बर्खसँ ऊपरे दुनू गोरेक भेँट भेना भेल हएत। बीचमे कि केना केलह से पहिने कहह।"

केकरो बेथा-कथा जँ कियो पुछिकऽ सुनए चाहैए तँ कहनिहारक मन जहिना हलैस उठै छै, तहिना सुलेमान हलैस कऽ बाजल- "दुनू भैयारीमे अहाँकेँ पैघ मानै छी, उमेरोक हिसाबसँ आ विचारोक हिसाबसँ, तँए मुँह खोलि बजै छी।"

सुलेमानक विचारभूमि देखि-सुनि अप्पन मन ठमकए लगल। जे सुलेमान अप्पन जुआनी समाजसँ लऽ कऽ जहल तकमे बितौलक, ओकरा

मुहसँ एहेन बात किए निकैल रहल अछि। मुँह तँ सभ दिन ओकर खुजले रहल अछि। नीक स्वर रहने नीक गीतो गबै छल आ जीवनक संग कटै-मरैले सेहो तैयार रहै छल। की बीचक समय ने ते दूरी बनौलक अछि.? मुदा अपने अप्पन मुँह बन्ने रखने रही। तैबीच सुलेमान आगू बाजल- “कमल भाय, नोकरीक आशामे जिनगीक जवानी बित गेल, मुदा संयोग कहियौ कि भाग्य आकि केकरो दया, पचपन बर्खक उमेरमे लोअर प्राइमरी स्कूलमे शिक्षक बनलौं।”

सुलेमानक खुशी देखि अपनो मन खुशिया गेल। ओना, ऐठाम एकटा आरो प्रश्न अछि। प्रश्न अछि जे समाजमे केते लोक एहेन छैथ जे अनकर खुशी देखि खुश होइ छैथ आ केते लोक ओहन छैथ जिनका अनकर नीक देखि झड़कबाहि उठै छैन। यएह तँ अप्पन समाजक कहियौ कि मिथिला समाजक लोकक मनोवृत्ति छैन। केतेअना लोक समाजमे एहेन छैथ जे अपने जकाँ अनको नीकक कामना करैत होइथ। खाएर जे जे करै छैथ से अपने जनबो करै छैथ आ जनबो करता। सुलेमानकेँ शिक्षक बनब सुनि अनायासे अपना मुहसँ निकैल गेल- “वाह.! हमरो दिससँ सुलेमान तोरा बधाइ..!”

तैबीच जलखै करिकऽ चाह पीब दोकानसँ दुनू गोरे निकैल रहल छेलौं। दोकानसँ निकैलते सुलेमान बाजल- “भाय, अपने संगी पानक दोकान खोलने अछि, चलू ओहीठाम पानो खाएब आ भेँटो-घाँट भऽ जाएत।”

मनक विचारमे जेना सान चढ़ि गेल तहिना बजलौं- “सुलेमान, एगारहम बरख जे रामपट्टी जहलमे भेँट भेल रहह तहियासँ आइये ने भेँट भेलह हेन।”

हमरा बजिते सुलेमान पाछू उनैट अप्पन जिनगीक हिसाब जोड़लक तँ ठीके बुझि पड़लै। मनेक ठीक ने बिसवासक मूल कारण सेहो छी। तहूमे जँ अप्पन मन खण्डन-मण्डनसँ मानि लिअए तखन तँ ओ आरो बेसी बिसवासक भइये जाइए। तैबीच पानक दोकानपर पहुँच गेलौं। संयोग, एक्के-दुइये चारिटा पुरना संगी सभ दोकानपर पहुँचला। पाँचोमे, माने अपना छोड़ि, सुलेमान बजैमे सभसँ फड़कोर। फड़कोर लोक जहिना सभ बात बजितो अछि तहिना सभक बात सुनबो तँ करिते अछि। तँए, ओहन लोक लग सभ बात माने नीको आ अधलो बाजले जा सकैए। पान खाइसँ पहिने सुलेमानकेँ टिपैत किसुनलाल सभकेँ सुनबैत बाजल- “आएल पानि, गेल पानि, बाटे बिलाएल पानि।”

किसुनलालक विचार कोनो भाँजेपर ने चढ़ल, तँए मुँह बन्न केने आगूमे ठाढ़ रही। ने सुलेमान किछु बाजि रहल छल आ ने किसुनेलाल दोहराकऽ किछु बाजल, जेकरा सुनिकऽ बुझितौं। तँए अपनो मुँह बन्न केने ठाढ़ रही जे किसुनलाल बुझि गेल, बुझिते दोहरबैत बाजल- “सुलेमान शिक्षको बनल आ सेवो-निवृत्त भेल।”

किसुनलालक विचार सुनि मनमे भेल जे भरिसक किसुनलाल मजाकमे बाजल अछि, मुदा जखन मने-मन सुलेमानक उमेर जोड़लौं तखन बुझि पड़ल जे मजाक नहि सत्ते छी। फड़कोर लोक सुलेमान अछिए, मुस्की दैत बाजल-

“कमल भाय, तकदीरोक खेल अजब अछि।”

सुलेमानक विचार सुनि मन धकमकाए लगल। धकमकाइत मनमे उठल, अही भाग्य-तकदीरक खेलमे तँ सभ ओझराएले अछि मुदा तइमे सुलेमानकेँ अजब की लगलै? बजलौं- “से की सुलेमान?”

सुलेमान बाजल- “हम आ रघुपति दुनू गोरे लोअर प्राइमरी स्कूलसँ मैट्रिक तक संगे पढ़ने छी। हमरासँ रघुपति साल भरि जेठ अछि। हम पनरह बर्खक अवस्थामे मैट्रिक पास केलौं आ रघुपति सोलह बर्खक अवस्थामे। जखन शिक्षकक बहाली भेल तखन अपन उमेर पौने पचपन बरख छल आ रघुपतिक पौने छप्पन बरख, तँए हमर बहाली भऽ गेल आ रघुपतिक नइ भेल।”

सुलेमानक विचार मनमे जँचल तँए किछु ने बजलौं। एकाएक सुलेमानक पैछला जिनगीपर नजैर दौड़ गेल। मोन पड़ल सुलेमानक ओ दिन, जखन सुलेमान रोडपर बोरा बीछा तरकारी बेचै छल। ओना, सुलेमानसँ अप्पन परिचय पछाइत भेल। किएक तँ दुनू गोरेक गामक दूरी तीन कोस अछि, मुदा समाज सेवाक दौड़मे जहिया दुनू गोरेक परिचय भेल, तहियासँ अखन धरि ओहिना जीवित अछि, जेहेन जीवित वातावरणमे परिचय भेल छल।

सुलेमानक पिता छेहा गरीब परिवारक छेला। मुदा आन गरीब जकाँ खेत-खरिहाँनसँ हटि घोघरडीहा बाजारमे समयानुसार तीमन-तरकारी बेचै छला जइसँ खेत-मजदूरक अपेक्षा बेसी आमदनी होइ छेलैन। जइसँ परिवार चलबैत, चारू भाए-बहिनक, सुलेमान चारि भाए-बहिन अछि, लालन-पालन कए रहल छला। संयोग एहेन भेलैन जे जखन सुलेमान मैट्रिक पास केलक, तखन अपने

साँप काटि लेलकैन जइसँ मरि गेला। ओना, हुनका मनमे माने सुलेमानक पिता- अब्दुलक अभ्यन्तरमे, छेलैन जे सुलेमानकेँ अपना जकाँ तरकारी नइ बेचाएब।

पिताकेँ मुइला-पछाइत सुलेमानपर परिवारक बोझ पड़ि गेल। नोकरी तँ अपना हाथक नइ छी, जे केतौ करए लगब। ओ तँ अनका हाथक छी। पिताक देखल-बुझल जिनगी सुलेमानकेँ छेलैहे, ओही जगहपर, माने जैठाम अब्दुल दोकान करै छला, सुलेमान सेहो ओहीठाम दुपहरक पछाइत माने तीन बजे बेरुपहरसँ सात-आठ बजे साँझ धरि तरकारी बेचब शुरू कए सुलेमानो अपन परिवार चलबए लगल।

बजलौं- “आब की सोचि रहल छह, सुलेमान?”

“सोचि की रहल छी, सोचल अछि। पाँचे बर्खक नोकरी किए ने केलौं, मुदा केलौं तँ सरकारी, तँए पेंशन लेबइ। अपनो बुझै छी जे बनरफाँसमे ओही दिन फँसि गेलौं जइ दिन नोकरी करए विदा भेलौं। अपनो कारोबार चलि गेल आ जे केलौं, सेहो चलि गेल। आब जँ सड़कपर बैस तीमन-तरकारी बेचब से सोहन्तगर हएत।”

सुलेमानक विचार सुनि किछु ने फूरल, तँए गुम्मे रहि गेलौं। ❑

❑

❑❑

❑❑❑

❑❑

❑

Notes